सगाइ। प्रभु 'कल्यान' गिरिधर की जोरी विधिना भली बनाइ ॥३॥ ❀ ११० ❀ राजभोग के दर्शन में ❀ रागसारंग ❀ आज वृषभान के आनंद। वृन्दाविपिन बिहारिन प्रगटी श्रीराधा आनंदकंद ॥१॥ गोपी ग्वाल गाय गोसुत ले चले जसोदा नंद। नंदीसुर ते नाचत गावत आनंद करत सुछंद ॥२॥ लेत विमल यस देत वसन पसु धरत दूब सिर वृन्द। लोचन कुमुद प्रफुल्लित देखियत ज्यों गोरी मुखचंद ॥३॥ जाचक भये परम धन कहियत गोधन-सुधा अमन्द। भये मनोरथ 'व्यासदास' के दूर गये दुख द्वन्द ॥४॥ ❀ १११ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग नट ❀ प्रगट्यो सब ब्रज को शृङ्गार। कीरति कूख अवतरी कन्या सुंदरता को सार ॥१॥ नखसिख रूप कहां लों बरनों कोटि मदन बलिहार। 'परमानन्द' वृषभान नन्दिनी जोरी नंददुलार ॥२॥ ❀११२❀ राग खट ❀ आज बधाइ की विधि नीकी। प्रगटी सुता वृषभान गोप के परम भावती जीकी ॥१॥ जिन देखे त्रिभुवन की सोभा लागत है अति फीकी। 'परमानन्द' बलि-बलि जोरी यह सुंदर सांवरे पीकी ॥२॥ ❀११३❀ संध्या भोग आये में ❀ राग नट ❀ आज बरसाने बजत बधाइ। प्रगट भइ वृषभान गोप के सबहिन की सुखदाइ ॥१॥ आनंद मगन कहत युवतीजन महरि बधावन आइ। बन्दीजन मागध याचक गुनि गावत गीत सुहाइ ॥२॥ जय-जयकार भयो त्रिभुवन मे प्रेम-बेलि प्रगटाइ। 'सूरदास' प्रभु की यह जीवन जोरी सुभग बनाइ ॥३॥ ❀ ११४ ❀ संध्या आरती में ❀ राग गौरी ❀ हों तो फूली अंग न समाउं मेरे मन आनंद भयो। नंदीसुर ते चल्यो ढाढी वृषभान गोप के आयो। कीरति जू के कन्या जाइ सब मिलि नाचो गाओ ॥ १ ॥ आओरी सब सखी सुवासिन मिल साथिये धराओ। द्वारे बंदनवार बंधाओ मोतिन चौक पुराओ ॥ २ ॥ सात साख को मेरो राजा जा घर बजत बधाइ। कुंवरि भइ वृषभान नृपति के अष्ट महासिद्धि पाइ ॥३॥

हाटक हीर चीर नानारंग भादों झरी लगाइ । भाभीजू सों झगरो कीजे आज भली बनि आइ ॥४॥ बाजे महाघोर सों बाजे रानी कीरति पकर नचाइ । 'गरीबदास' कों पीत झगुलिया सरस पंजीरी पाय ॥५॥ ❀११५❀ ❀ सेन भोग आये में ❀ राग कान्हरा ❀ बजत वृषभान के परम बधाइ । प्रगटी कुंवरि राधिका सुखनिधि कीरति कूख सिराइ ॥१॥ आये हुलसि राय जू राजत गिरिधारी बल भाइ । गोप ग्वाल और सब ब्रज-वासिन रावल बहुत भराइ ॥२॥ देवभान वृषभान भान सब आदर देत अघाइ । फिरि-फिरि कहत यही विधि कीनी रानी गोद सुत लाइ ॥३॥ धावत गावत गीत सबै वृषभान के आंगन आइ । धरि-धरि सतिये हरद रोरिन के बंदनवार बँधाइ ॥४॥ कीरति ने हँसि अपनी कुंवरि जसुमति की गोद बैठाइ । फिरि फिरि कहत तुमारे भागिन ऐसी कुंवरि हम पाइ ॥५॥ सबहिन बदन निहारि वारि नोछावर दीनी मन भाइ । 'श्रीविट्ठल गिरिधरन' कुंवरि की सब कोउ बलि जाइ ॥६॥ ❀ ११६ ❀ राग कान्हरा ❀ माइ प्रगटी कुंवरि वृषभान के । सब मिल कहत ग्वाल कीरति सों आनंदनिधि जाइ आज के ॥१॥ बाजत तूर करत कोलाहल रावल सोभा बरनी न जाइ । गाम-गाम ते टीको आयो अरु संग बजत बधाइ ॥२॥ नंदलाल अरु कुंवरि राधिका जानो कंचन बेल, किसोरी । फिरि फिरि रहत निहारि 'श्रीविट्ठलगिरिधर' सदा रहो यह जोरी ॥ ३ ॥ ❀ ११७ ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ जब ते राधा भूतल प्रगटी तब ते विधि को मान हन्यो । मेरी तो यह सृष्टि न होइ अब कछु अद्भुत बान बन्यो ॥१॥ एक रूप एक वेस एक गुन वरन विलच्छ ठन्यो । 'कृष्णदास' प्रभु श्री गिरिधर ते केलि कला रस सन्यो ॥ २ ॥ ❀ ११८ ❀ राग कान्हरा ❀ रावल आज कुलाहल माइ । बाजे बाजत भवनन गाजत प्रगटी सबन सुखदाइ ॥१॥ धरत साथिये बंदनवारे रोपी द्वार सुहाइ । गावत गीत गली गोकुल की जे जुरि

न्योंते आइ ॥२॥ श्री वृखभान के आँगन रानी जू बैठी देत बधाइ। 'श्रीविट्ठल 'गिरिधरन' कुंवरि की बरस गाँठि मन भाइ ॥३॥ ❀ ११६ ❀ सेन के दर्शन में ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ रावल राधा प्रगट भइ । अब ब्रजबसि सुख लेहु सखीरी प्रगटी कुंवरि रसमइ ॥१॥ या निधि कों सब विधि चाहत है सो कीरति तुमहि दइ । 'रामदास' सुनि गोकुल आयो जसुमति पै जु बधाइ लइ ॥२॥ ❀१२०❀

उत्सव श्री चन्द्रावलीजी को (भादों सुदी ५)

❀ मंगला में ❀ राग देवगंधार ❀ प्रगटी नागरी रूप निधान । देखि देखि बूझत जो परस्पर नहिं त्रिभुवन मे आन ॥१॥ उपमा कों जे जे कहियत है ते जु भये निरमान। 'कुंभनदास' लाल गिरिधर की जोरी सहज समान ॥२॥ ❀१२१❀ ❀ शृङ्गार के ओसरा में ❀ राग बिलावल ❀ श्री वृखभान के हो आँगन मङ्गल भीर । देस देस के भिक्षुक आये पढ़त बिरद आभीर ॥१॥ एक सूवा हाथ पढायो। राधे जू को सुजस बुलायो । वृखभान राय मन भायो । सुक कंचन चोंच मढ़ायो ॥२॥ एक कोयल मधुर सिखाइ। राधे कहि लेत बुलाइ । रीझे वृखभानजू ताकों । पग पेंजनी दीनी वाकों ॥३॥ एक मैना मोद बढ़ावे । कीरति की कूखि मल्हावे । रावलपति मृदु मुसिकाने। कछु वारि देत बहु दाने ॥४॥ एक बगुला ढाढी लायो । वह देखत सब मन भायो । ताहि रीझि रही ब्रजबाला । उन दीनी मोतिन माला ॥५॥ एक ढाढो सारो पाली। बोलन सिखइ मानों आली । खीचरी चरुवा जसु गायो ।उन लियो आपु मन भायो ॥६॥एक मोर नचावत आयो। उन कुहुक कुहुक जसु गायो। वृखभान राय मन भायो । गजमोती तिने चुगायो ॥७॥ एक मृग छोना गहि आन्यो। नखसिख लौं छबि अति आन्यो ॥८॥ वृखभान चरन पर लोटे। सब सखियन के मन पोटे । एक जरकसि पट सिर बाँधे। बनचर धरि लायो काँधे। कूदत गोपिन के भोरे। बनचर ले बलाय त्रन तोरे॥९॥ एक नंदगाम ते आये। वे ढाढी परम सुहाये । उन चढ़ि गज अति दौराये । रावलपति दिये मन भाये ॥१०॥

कोउ घोरन चढ़ि चढ़ि धाये । वे सुनत बात मन भाये । कीरति उर जनमी राधा । अब देहु मान मन साधा ॥११॥ एक लरकन गोदी लीने । चित्र विचित्र अति कीने । ते मङ्गलगीत सुनावे । मिलि भान भवन सब आवे ॥१२॥ एक ढोलक ताल बजावे । एक महुवरि में जसु गावे । नाचत वृखभान हि भावे । वे तान परे सिर नावे ॥१३॥ एक नट बिद्या बहु खेले । गरे डार भुजा भुज पेले । वृखभानहि नाये माथे । टोडर भर दीये हाथे ॥१४॥ एक नाचत तंबक तंबे । वे धाय धरत डग लम्बे । चिरजियो कुंवरि की मोंसी । वह दान देत बहु हौंसी ॥१५॥ द्विज वेद पढ़त है साथन । वे कुस लिये सब हाथन । कुंवरीसु आनन्द कन्दे । सुनि भान बिप्र पद बन्दे ॥१६॥ नक्षत्र योग सब साधे । जोतिस वेद आराधे । निदु:ख भइ सुकुमारी । जिन दान दिये अतिभारी ॥१७॥ बहु नाचत गोपी सोहे । तन छबि दामिनी अति मोहे । वृखभान आये ढिंग तिन पे । मनि मोती वारे इनपे ॥१८॥ कहुँ बछरा कहुँ गैया । कूदत मन मे अति छैया । कुंवरि जनम सुनि फूली । आँगन खेलत सुधि भूली ॥१९॥ कहुँ गोपिन के सुत किलके । छबि अङ्ग अङ्ग मे झलके । प्रमुदित जनम लली को । कहुँ कही सी आनि अली के ॥ कहुँ गोप जु हेरी गावे । ते दूध खुरचनी पावे । वे दधि हरदी कों छिरके । सब देवन के मन करके ॥२१॥ कोउ वंदनमालन बाँधे । ऊंचे द्वारन चढ़ि कांधे । वे लेत नेग है अपनो । सखि आज भयो मोहि सपनो ॥२२॥ कहुँ मोतिन चोक पुरावे । एक ठाडी भइ बतावे । घरन ललित छबि छाइ । मानो निपजी है चतुराइ ॥२३॥ रंग रंग बाँस की डलिया । वे फल फूलन सों भरिया । दूब लिये एक आवे । वृखभान के सीस बंधावे ॥२४॥ अपनी निधि जो जाहि प्यारी । लेले आये बेपारी । वृखभान लाय बहु दीने । उनके मन भाये कीने ॥२५॥ कोउ बाँधत ध्वजा पताका । मन में बाढ़ी अभिलाखा । सुर बिमान चढ़ि आये । वृखभानजू

वाहि बसाये ॥२६॥ यह सुख देखि समाजे। सुरपति मन में अति लाजे। गोप देह कर हीने। विधिने हम विचित्र कीने ॥ जै जै कर फूलन बरखे। वह देखि देखि मन हरखे। कुंवरि किसोरी जनमे। वृखभान धन्य गोपन में ॥२८॥ एकन्त वास मुनि रहते। राधा हरि सुमरन करते। ते जनम सुनत उठि धाये। कुंवरि पद सीस नवाये ॥२९॥ सुख समूह को सागर। श्री वृखभान उजागर। नीरस भगत अंधेरो। ताको तन-सुत भयो उजेरो ॥३०॥ यह आनन्द मंगल जितनो। कापे कहि आवे तितनो। अपने हितकों जो गावे। वो मनवाँछित फल पावे ॥३१॥ स्याम दरस हित गावे। वृखभान गोप मन भावे। 'गोवर्धन' गाय हुलासा। व्रजजन दासिन को दासा ॥३२॥ ❁ १२२ ❁ शृङ्गार के दर्शन में ❁ राग बिलावल ❁ बाजे बाजे मंदिलरा वृखभान नृपति दरबारा। प्रगटी है सुभ घरी नक्षत्र व्रज रोप्यो है बंदनवारा ॥१॥ सखी सहेली मंगल गावे नाचे सांचे तारा। 'गरीबदास' की स्वामिनी बाढ्यो रंग अपारा ॥२॥ ❁ १२३ ❁ राजभोग आये मे ❁ राग सारंग ❁ महारस पूरन प्रगट्यो आनि। अति फूली घर घर ब्रजनारी श्री राधा प्रगटी जानि ॥१॥ धाइं मंगल साज सबै ले महामहोत्सव मानि। आइं घर बृखभान गोप के श्रीफल सोहत पानि ॥२॥ कीरति वदन सुधानिधि देख्यो सुंदर रूप बखानि। नाचत गावत दे कर तारी होत न हरख अघानि ॥३॥ देत असीस सीस चरनन धरि सदा रहो सुख दानि। रस की निधि व्रज 'रसिकराय' सों करो सकल दुःख हानि ॥४॥ ❁ १२४ ❁ राजभोग के दर्शन में ❁ राग सारंग ❁ आज चन्द्रभान के बधाइ। सुखमा कूखि अवतरी कन्या घर घर बजत बधाइ ॥१॥ नाम धर्यो चंद्रावलि सुख निधि कोटिक चंद्र लजाने। भादों सुदि पाँचे सुभ वासर अरुन हृदय रस माने ॥२॥ सुनि बृखभान नंद मन हरखे देखि अनूपम सोभा। 'कृष्णदास' गिरिधर की जोरी देखत रतिपति लोभा ॥३॥ ❁ १२५ ❁

❀सेन के दर्शन में ❀राग कन्हरा❀ आठे भादों की उजियारी । रावल में वृषभान गोप के प्रगटी श्रीराधा प्यारी॥१॥ श्रुति स्वरूप सब संग करिलीने व्रजपति हेत बिचारी। 'दासगोपाल'वल्लवजू की स्वामिनी बसकीने गिरधारी॥२॥❀१२६ ❀ भादों सुदी ७ ❀ भोग के दर्शन में ❀राग गौरी ❀मुदित निसान बजावही वृषभान नृपति दरबार हो। भादों सुदी आठे उजियारी सुभ नछत्र गुन सार हो। प्रगटी कूखि महर कीरति के श्रीराधा अवतार हो॥१॥गृह-गृह ते गोपी बनि निकसीं गावत मङ्गलचार हो। हरखत चली बधाये कुंवरि कर लिये कंचन थारहो॥२॥ धन्य कूखि रानी की यों कहि हँसि-हँसि लागत पाय हो। वदन विलोकि कुंवरि राधा को पुनि-पुनि लेत बलाय हो ॥३॥ यह जोरी गिरिधर सम प्रगटी उपमा को नहिं आन हो। 'रामदास' विप्र भाटन कों देत राय बहु दान हो ॥४॥ ❀१२७❀ संध्या आरती में ❀ राग गौरी ❀ ढाढिन नृत्यत सुलप सुदेस भवन वृषभान के। बरनत बंस निकट कीरति के पहरे अद्भुत वेस। लटकि चलत गति ललित भाल पर श्रमजल सिथिल सुकेस ॥१॥ जो पायो सो सबहि लुटायो भूखन वसन अपार। 'हित अनूप' बैठारी नियरे राखी अपने द्वार ॥२॥ ❀१२८❀ सेन भोग आये में ❀ राग कान्हरा ❀ आज छठी की रात घोस अति ही मङ्गल कारी। सुजस सुन्यो वृखभानराय को भादों पच्छ अति उजियारी ॥१॥ दूर देस के जुरे न्योतकी सब मन यह ही बिचारी। लगन एक साध्यो सुभ तबही यह न होय विधि की ओलारी ॥ ॥२॥ नाग लोक सुरलोक सुभूतल नाहिन यह सोभा अति सारी। अर्धाङ्गी मोहन की जाइ श्री वृषभान सुता री ॥३॥ कवि को विधि ये कहत न आवे सेस सारदा त्रिपुरारी। कुंवरि सो मङ्गलमय अति कीरति 'अग्रदास' यह सुता उर धारी ॥४॥ ❀ १२९ ❀ राग कान्हरा ❀ आज बहुत वृषभान घोख में मङ्गलचार बधाये। प्रगटी आय कूखि कीरति की भये सबन मन भाये ॥१॥ आनंदराय जसोदा रानी सुनत सबन ले धाये। गोप ग्वाल

और सब ब्रज सुन्दरि यूथन जुरि-जुरि आये ॥२॥ बाजे बाजत गावत मङ्गल सबहिन हुलसि बढ़ाये । देवभान वृषभान सबन मिलि हँसि-हँसि भवन बुलाये ॥३॥ देखि-देखि सौभग मुख सुन्दर अपने भाग्य मनाये 'श्रीविट्ठल गिरिधरन' राधिका अलभ लाभ सो पाये ॥४॥ ❀ १३० ❀

❀ राग कान्हरा ❀ फूलि-फूलि वृषभान गोप ने आछे बसन मँगाये । बरन-बरन के चीर बीनि के अपने पास धराये ॥१॥ दोऊ सुतन समेत राय हँसि पहलें ही पहराये । फिरि-फिरि गोप ग्वाल सबहिन कों आगे ह्वै जु दिवाये ॥२॥ फिरि हँसि बोल लइ ब्रज सुन्दरि ठाढ़ी करि पहराइ । 'श्रीविट्ठल गिरिधरन' कुंवरि के तिलक करन सब आइ ॥३॥ ❀ १३१ ❀

❀ राग कान्हरा ❀ आदर दै वृषभान सबन कों करि सनमान बैठाये । हँसि हँसि पाय गहत गोपन के तुम भागिन मेरें आये ॥१॥ तब हँसि कहत वे अति आनंद सों हमने बहुत सुख पाये । उत उनके और इत तुमरे गृह हैवो करो बधाये ॥२॥ तब निकसीं गावति ब्रज सुन्दरि पहरि जरकसी सारी । 'श्रीविट्ठल गिरिधरन' कुंवरि कों असीस देत ब्रजनारी ॥३॥ ❀ १३२ ❀

❀ सेनभोग सरे ❀ राग कान्हरा ❀ सकल भुवन की सुन्दरता वृषभान गोप के आइ । जाको जस सुर मुनि जो कहत हैं भुवन चतुर्दस गाइ ॥१॥ नवल किसोरी रूप गुन स्यामा कमला सी ललचाइ । प्रगटे पुरुषोत्तम श्रीराधा द्वै विधि रूप बनाइ ॥२॥ उलैड़े दान देत विप्रन कों जस जो रह्यो जग छाइ । 'छीतस्वामी' गिरिधर को चेरो जुग-जुग यह सुख पाइ ॥३॥ ❀ १३३ ❀

❀ राग कान्हरा ❀ प्रगट भइ सोभा त्रिभुवन की वृषभान गोप के आइ । अद्भुत रूप देखि ब्रज बनिता रीझि-रीझि के लेत बलाइ ॥१॥ नहिं कमला नहिं सची सति रंभा उपमा उर न समाइ । जाते प्रगट भये ब्रज-भूषन धन्य पिता धन्य माइ ॥२॥ जुगजुग राज करो दोऊजन इत तुम उत नंदराइ । उनके मदनमोहन इत राधा 'सूरदास' बलि जाइ ॥३॥ ❀१३४❀

❀ सेन के दर्शन में ❀ राग विहाग ❀ धनि-धनि प्रभावती जिन जाइ ऐसी बेटी धनि-धनि हो वृषभान पिता। गिरिधर नीकी मानी सो तो तीन लोक जानी उरझ परी मानों कनक लता ॥१॥ चरन पर गंगा ढारों मुख पर ससि वारों ऐसी त्रिभुवन में नाहिन वनिता। 'नन्ददास' प्रभु स्याम बस करन कों स्यामाजू के तोलों नावे सिन्धु सुता ॥२॥ ❀१३५❀

राधाष्टमी (भादो सुदी ८)

❀राजभोग आये में❀राग सारंग❀आनंद आज भवन वृषभान के। जाइ सुता माय कीरति वर एसी कुंवरि नहीं आन के॥१॥ नहिं कमला नहिं सची नहीं रति सुन्दर रूप समान के। 'चत्रुभुज प्रभु हुलसी ब्रज बनिता राधामोहन जान के॥२॥ ❀१३६❀ राग सारंग ❀ चलो वृषभान गोप के द्वार। जन्म लियो मोहन हित कारन आनंद निधि सुकुमारि ॥१॥ गावत युवती मुदित मिल मंगल ऊँचे मधुर धुनि धार। विविध कुसुम कोमल किलसय युत तोरन बंदनवार ॥२॥ मागध सूत बन्दी चारन यस कहत कछू अनुसार। हाटक हार चीर पाटम्बर देत समार समार ॥३॥ धेनु सकल सिंगार बच्छ चित्र ले चले ग्वाल सिंगार। 'हित-हरिवंश' दूध दधि छिरकत मांझ हरिद्रा डार ॥४॥ ❀ १३७ ❀राग सारंग❀ राधेजू सोभा प्रगट भइ। बृन्दावन गोकुल गलियन में सुख की लता छइ ॥१॥ प्रति-प्रति पद गोपुर कुञ्जन में उपजी उपमा नइ। 'कुम्भनदास' गिरिधर आवैंगे आगे पठै दइ ॥२॥ ❀ १३८ ❀ ❀ राग सारंग ❀ रावल राधा प्रगट भइ। श्री बृषभान गोप गुरुवे कुल प्रगटी अति आनन्दमइ ॥१॥ रूप-रासि रस-रासि रसिकनी नव अंकुर अनुराग नइ। चिरजीयो चतुर चिन्तामनि प्रगटी जोरी पुन्य मइ ॥२॥ गुननिधान अति रूप रसिकनी करत ध्यान गिरिधरन सइ। 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधर यह जोरी त्रिभुवन सोभा तोल लइ ॥३॥ ❀ १३९ ❀ राग सारंग ❀ आज बृषभान के घर फूल। प्रगटी कुंवरि राधिका जाके मिटे

सबन के सूल ॥१॥ लोक-लोक ते टीको आयो विविध रतन पट कूल। 'सूरदास' समता को पावे जाके भाग्य अतूल ॥२॥ ❀ १४० ❀ राग मारू ❀ महरजू दीजे मोहि बधाइ। कीरति कूख सिरोमनि प्रगटी कीरति तिहुं जुग छाइ ॥१॥ नंदनंदन की जोरी प्रगटी श्री राधा मन भाइ। अति मन को भायो मनोरथ विधिना विध जु बनाइ ॥२॥ हों ढाढी नृप नन्दमहर जू को आयो तुम पे धाइ। 'कृष्णदास' पहरायो विधि सों फूल्यो अंग न समाइ ॥३॥ ❀ १४१ ❀ राग मारू ❀ चल-चल ढाढी विलम न कीजे कीरति कन्या जाइ। बरसाने वृषभान गोप के आंगन बजत बधाइ ॥१॥ ढाढी ढाढिन नाचत गावत अति उच्छो भयो भारी। बाजत ताल मृदंग बांसुरी मग्न भये नर नारी ॥२॥ इत कन्या उत कुंवर नंद को भूतल प्रगटी जोरी। गावत सुक सारद मुनि नारद रसिकन की सुखकोरी ॥३॥ ढाढी ढाढिन कों पहराये बहोत भांत सनमान्यो। 'कृष्णदास' की स्वामिनी प्रगटी दास आपनो जान्यो ॥४॥ ❀ १४२ ❀ राग धनाश्री ❀ नंदराय को ढाढी आयो वृषभान भवन में राजे जू। लै-लै नाम गोपवंसन के सिंहपोर में गाजे जू ॥१॥ नाचत गावत हेरी दै-दै ढाढिन संग समाजे जू। सब मन भावे मोद बढ़ावे सुजस बधाइ बाजे जू ॥२॥ बहोत दिनन को कियो मनोरथ सुफल भये सब काजे जू। जसुमति के 'व्रजभूखन' उत इत कीरति कुंवरि विराजे जू ॥३॥ ❀ १४३ ❀ राग धनाश्री ❀ कुंवरी प्रगटी जानि गावत ढाढी ढाढिन आये। कीरति जू की कीरति सुनि हम बहु जाचक पहराये ॥१॥ हम अभिलाख कछू अन चाहत जीयेंगे जसु गाये। मगन भये आँगन नाचत देखि वदन मुसिकाये ॥२॥ हीरा हाटक हार अमोलक रानीजू पहराये। वारि-वारि कुंवरी के मुख पर सबकों देत लुटाये ॥३॥ आज मनोरथ विधिना पूरे अनायास निधि पाये। 'परमानन्द' स्वामी की जोरी राधा सहज सुहाये ॥४॥ ❀ १४४ ❀

❀ राजभोग भीतर तिलक होय तब ❀ राग सारंग ❀ राधाजू को जन्म भयो सुनि माइ। सुक्ल पच्छ भादों निसि आठे घर घर बजत बधाइ ॥१॥ अति सुकुमारि घरी सुभ लच्छन कीरति कन्या जाइ। 'परमानन्द' नंद के आँगन जसुमति देत बधाइ ॥२॥ ❀१४५❀ भोग के दर्शन में ❀ ढाढो आवे जब ❀ राग मारू ❀ जदुवंसी जजमान, तिहारो ढाढी आयो हो। कुंवरि जनम सुन के हों आयो राख हमारो मान ॥१॥ एक बार हों पहले आयो देन बधाइ ताकी। नंदी सुर ब्रजराज। घरनि घर कूखि सिरानी जाकी ॥२॥ अबतो मेरे मन को भायो दोऊ नेग चुकावो। नंदरानी कीरतिदे रानी ढाढिन कों पहरावो ॥३॥ बहोत भाँति ढाढिन पहराइ गोपराय बड़ दानी। 'किसोरीदास' कों निरभय करिके ब्रज राख्यो ब्रजरानी ॥४॥ ❀१४६❀ शयन भोग आये ❀ राग कान्हरा ❀ आज वृखभान के बेटी जाइ। भादों सुदी अष्टमी सुभ दिन धनि धनि कूख जु कीरति माइ ॥१॥ श्रवन सुनत सहचरि जुरि आई अति प्रफुलित सब देत बधाइ। ध्वजा पताका तोरन माला आँगन मोतिन चौक पुराइ ॥२॥ पंच सब्द बाजे बाजत है प्रमुदित ब्रजजन मंगल गाइ। विप्र वेद उच्चारन लागे जाचकजन बहु करत बड़ाइ ॥३॥ त्रिभुवन की सोभा जु प्रगट भइ श्रीगिरिधर कों सुखदाइ। जैजैकार भयो वसुधा मे हरखि इंद्र पेहोपन बरखाइ ॥४॥ यह जोरी होय ब्रज अविचल राज करो राधा ब्रजराइ। श्री वल्लभसुत चरन कमल रज 'हरीदास' नोछावर पाइ ॥५॥ ❀ १४७ ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ भादों सुदि आठे उजियारी। श्री वृखभान गोप के मंदिर प्रगटी श्री राधा प्यारी ॥१॥ नाचत नारि नवेली छबि सों पहरे रंग रंग सारी। घर घर मंगल देखि बरसाने कहत रमा हों वारी ॥२॥ एक आइ एक आवत गावत एक साजत सुनि नारी। चंचल कुंडल ललकें झलके करन बिराजत थारी ॥३॥ भइ बधाइ कही न जाइ छबि छाइ अति भारी। रस भरि खोरि पोरि भइ दधि घृत बहि चली उमगि पनारी ॥४॥ कीरति की

❀ १५२ ❀ राग देव गंधार ❀ अब के द्विजवर व्है सुख दीनो। तब के नंद यसोदा नंदन व्है हरि आनंद कीनो ॥ १ ॥ तब कीनो गोपाल रूप अब वेद स्मृती दृढ चीनो। 'छीतस्वामि' गिरिधरन श्री विट्ठल भक्ति सुधा रस भीनो ॥ २ ॥ ❀ १५३ ❀ राग बिलावल ❀ जै श्री लक्ष्मनसुवन नरेस। प्रगट भये पूरनपुरुषोत्तम कलियुग धरि द्विज बेस ॥ १ ॥ जान जन्म दिन हरखहरख मुनि बरखत कुसुम सुदेस। गयो तिमिरअज्ञान तुरत नसि मानो उदित दिनेस ॥ २ ॥ नखसिख रूप कहांलों बरनों पार न पावत सेस। 'विष्णुदास' प्रभु मुख अवलोकत पल नहिं परत निमेस ॥ ३ ॥ ❀ १५४ ॥ ❀संध्याभोग आये में ❀ राग नट ❀ कृपासिंधु श्री विट्ठलनाथ। हस्त कमल छाया निस्तारे जे हुते अधम अनाथ ॥ १ ॥ बाधा कछु न रही अब तनमें भये सुदृढ सनाथ। 'चत्रुभुज' प्रभु सदा बिराजो श्री गिरिवरधर साथ ॥ २ ॥ ❀ १५५ ❀ संध्या आरती में ❀ राग गोरी ❀ हों चरनातपत्र की छैयाँ। कृपासिंधु श्रीवल्लभनंदन बह्यो जात राख्यो गहि बहियाँ ॥ १ ॥ नवनख सरद चंद्रमा मंडल हरत ताप सुमिरत मन महियाँ। 'छीतस्वामि' गिरिधरन श्रीविट्ठल सुजस बखान सकत श्रुति नहियाँ ॥ २ ॥ ❀१५६❀ सेन भोग आये में ❀राग कान्हरा ❀ श्रीविट्ठलनाथ बसत जिय जाके ताकी रीतप्रीत छबि न्यारी। प्रफुलित वदन कान्ति करुनामय नयनन में झलके गिरिधारी ॥१॥ उग्र स्वभाव परम परमारथ स्वारथ लेस नहीं संसारी। आनंदरूप करत एक छिन में हरिजू की कथा कहत विस्तारी ॥२॥ मन क्रम वचन ताहि को संग करि पैयत ब्रजयुवतिन सुखकारी। 'कृष्णदास' प्रभु रसिक मुकुटमनि गुन निधान श्री गोवर्धनधारी ॥ ३ ॥ ❀१५७❀ सेन के दर्शन में ❀ राग कान्हरा ❀ श्री गोकुल जुगजुग राज करो। यह सुख भजन प्रताप तेज ते छिन इत उत न टरो ॥ १ ॥ पावन रूप दिखाय महाप्रभु पतितन पाप हरो। विश्व विदित दीनी गति प्रेतन क्यों न जगत उध्धरो ॥ २ ॥ श्री वल्लभकुल कमल अमल रवि यस मकरंद भरो।

'नन्ददास' प्रभु खटगुण सम्पन्न श्री विट्ठलेस घरो ॥ ३ ॥ ❀ १५८ ❀

श्री राधाजी की बाल लीला (भादों सुदी १०)

❀ मंगला के दर्शन में ❀ राग रामकली ❀ कुंवरि राधिके तुव सकल सौभाग्य सीम या वदन पर कोटिसत चंद वारों। खंजन कुरंग मीन सतकोटि नयनन पर वारने करत जिय में न विचारों ॥१॥ कदलि सतकोटि जङ्घन ऊपर वारने सिंह सतकोटि कटिपर नोछावर उतारों। मत्त गज कोटिसत चाल पर कुंभ सतकोटि इन कुचन पर वारि डारों ॥२॥ कीर सतकोटि नासा ऊपर कुंद सतकोटि दसनन ऊपर कहि न पारों। पक्क कंदूर बंधूक सतकोटि अधरन ऊपर वारि रुचि गर्व टारों ॥३॥ नाग सतकोटि बेनी ऊपर कपोत सतकोटि ग्रीवा पर वार दूर सारों। कमल सतकोटि कर युगल पर वारने नाहिन कोउ लोक उपमाजु धारों ॥४॥ 'दासकुंभन' स्वामिनी सु नखसिख अङ्ग अद्भुत सु ठान कहाँ लग संभारों। लाल गिरिवरधरन कहत मोहि तो लों सुख जोलों वह रूप छिन छिन निहारों ॥५॥ ❀ १५९ ❀ शृङ्गार के ओसरा में ❀ ❀ राग बिलावल ❀ अहो मेरी प्रान पियारी। भोर हि खेलन कहाँ जु सिधारी। कुमकुम भाल तिलक किन कीनो। किन मृगमद को बेंदा जु दीनो। छंद—बेंदाजु मृगमद दियो माथे निरखि सखि संसय परयो। सरद निसा को कला पूरन मेन नृप को मद हरयो। विहसि के मुख कहत जननी सुलप बेनी किन गुही। 'सूर' के प्रभु मोहिवे कों रची मनमथ ही तुही ॥१॥ नन्द महर की घरनी यसो है। जिन मेरो बदन जु फिर फिर जो है खेलत बोल निकट बेठारी। कछु मन मे आनन्द कियो भारी। छंद—मनमे जु आनन्द कियो भारी निरखि मुख विह्वल भइ। बाबाजू को नाम पूछत तोहि हसि गारी दइ। पाटी तो पारि सम्हारि भूषन गोद में मेवा भरी। 'सूर' के प्रभु हरखि हिय में विधिना सों विनती करी ॥२॥ सुनि यह बात कीरति मुसिकानी। मैं नन्दरानी के मन की जानी। मेरी सुता है रूप की

रासी । वो तो कान्ह बनवासी उपासी । छंद—कान्ह उपासी बन विलासी रंग ढंग यह क्यों बने । हीरालाल अमोल मानिक काच कंचन क्यों सने । ललिता बिसाखा सों कह्यो तुम लली तजि कर कित गई । 'सूर' के प्रभु भवन बाहिर जान दीजो मति कहीं ॥३॥ दिन दस पांच अटक जब कीनी । कुँवरि कों कृष्ण दिखाइ दीनी । मुरझि परी तन मन न संभारे । कुँवरि कों डसी भुजङ्गम कारे । छंद—कुँवरि कों कारे डसी सुनि गारुड़ी आये सबै । एक नन्दनन्दन मंत्र बिन सखि विष ये क्यों हूँ न दबे । मनुहारि करि मोहन बुलाये सकल विष देखत नसे । 'सूर' के प्रभु जोरि अविचल जीयो जुग जुग मन बसे ॥ ४ ॥ विहंसि उठी तब वदन सम्हार्यो । निरखि मोहन तन अचरा डार्यो । मुरि बैठी मन भयो हुलासा । कीरति गइ अपने पति पासा । छंद—अपनेजु पति पै गइ कीरति प्रीत रीत बढाइये । मंत्र कीनों ब्याह को सब सखिन मंगल गाइये । वृन्दावन में रच्यो स्वयंवर पहुँप मण्डप छाइये । 'सूर' के प्रभु स्यामसुन्दर राधिका वर पाइये ॥५॥ विधिना विधि सब कीनी । मण्डप करिके भांमरि दीनी । विविध कुसुम बरखावे । तहां भामिनी मंगल गावे । छन्द—गावेजु भामिनी मिलके मङ्गल कहत कंकन छोरियो । नहिं होय यह गिरि उचकि लेवो लाल हंसि मुख मोरियो । छोर्यो न छूटे डोरना यह प्रीति रीति ग्रन्थोदरी । 'सूर' के प्रभु युवतिजन मिल गारी मन भामति करी ॥६॥ ❀ १६० ❀ राग विलावल ❀ हित की बात कहत है मैया । मेरो कह्यो तू मान कन्हैया । होत है तेरे ब्याह की बातें । तू तज चोरी करन की घातें । छन्द—घात तज चोरी करनकी कह्यो मेरो मान ले । इन बाते तोहि लाज न आवे जिये अपुने जान ले । कैबार तोसों कह्यो मोहन बान तू यह ना तजे । 'व्यासदास' लला भलो है इन बातन तू ना लजे ॥१॥ यह सुन के मोहन मुसिकाये । मैया तू झूठी कहत बनाये । हँसि बोली फिर कहत है मैया । माने तू झूठी बूझ

बल भैया । है वृखभान सुता गुनरासी । दिन दिन बाढ़त चन्द्रकला सी ।
छन्द—चन्द्रकला सी रूप रासी लसत कंचन सी कनी । नीलमनि ढिंग लाल
मेरो भली यह बानक बनी । यह सुन के अति हरख हिय में मगन भये
मन मोहना । 'व्यासदास' लला भलो है लगत छबि अति सोहना ॥२॥
जब वृषभान गोप सुधि पाये । काहू मिसि वाके घर आये । कीरति कहत
लला तू कोहे । देखत ही सब को मन मोहे । नन्द को सुत हलधर को
भैया । हेरन आयो निकस गइ गैया । छन्द—गैयाजु हेरन इते आयो प्यास
मोंकों अति लगी । प्याओ पानी घोखरानी घाम तन मे अति पगी । बचन
सुनि वृखभान-रानी ले चली निज गेहमे । 'व्यासदास' लला भलो है लगत
सुख अति देह में ॥३॥ जननी वचन सुनत ही आधे । जल भर लाइ तुरत
ही राधे । देत परस्पर दोउ जन अटके । नयन नयन सों मिलत ही मटके ।
हरि आधीन जबे लखि पाइ । कुंज मिलन की सेन बताइ । छन्द—बताइ
कुँज की सेन मोहन आप चलि आये तहाँ । कमल फूले भँवर गूँजे पारथव
कुंजे तहाँ । आइ तहां छल पाय राधा संग एकहि सहचरी । 'व्यासदास' प्रभु
पानि पकर्यो जान मंगल सुभ घरी ॥४॥ छन्द–मंद मंद गहवर घन गाजें ।
मानों सुरन के बाजे वाजें । झालरि ही झनकार जु ठान्यो । सुक पिक द्विज
मानों वेद बखान्यो । छन्द—बोलत सुक पिक मञ्जुल बानी बनी अद्भुत जोरी ।
लाल बालमुकुन्द दूलह दुलहनी नवलकिसोरी । बहु जतन करि मिले मोहन
लाड़िली के कारने । 'व्यासदास' प्रभु की निरखि सोभा करत तन मन वारने॥५॥
❀१६१❀ राजभोग आयेमें ❀ राग धनाश्री ❀ खेलन गइ नंदबाबा के महर गोद
कर लीनी जू । प्रेम सहित आँको भर लीनी उर को कठुला कीनी जू ॥१॥
तेल फुलेल उबटनो कीनो उबटी देह निकाइ हो । सारी नइ आन पहराइ ।
अङ्ग अङ्ग अधिक बनाइ हो ॥२॥ खटरस भोजन पास थार धरि विधि सों
आप जिमाइ हो । मेरो बदन विलोक नैन भरि फूली अङ्ग न समाइ हो ॥३॥

इतनी सुनत सामगे ढोटा बाहर ते घर आयो हो । माँपे हमही दोउ ठाड़े कछु एक बार दुरायो हो ॥४॥ रही पसार ओल सिसुता पे भवन काज बिसरायो हो जे जे सखी गइ मेरे संग सबहिन लाड़ लड़ायो हो ॥५॥ एक एक पाटंबर आछो तिनहूँ कों पहरायो हो । जाकी करि मनुहार बहुत विध आनन्द अधिक बढ़ायो हो ॥६॥ सब ब्रजनारि सिंगारी डोलत बोलत परम सुहाइ हो । फूली फिरत प्रेम पुलकित तन विमल स्याम गुन गायो हो ॥७॥ जब मैं बिदा सदन कों माँगी पान मिठाइ आनी हो । मेरी गोद भरी छाकें भरि चलत बहुत पछतानी हो । ॥८ ॥ तुमकों आंको कही कुंवर और दीनी बात बखानी हो । दइ असीस दोउ चिरिजीयो गंगा जमुना पानी हो ॥ ९ ॥ हसिहसि बात कहत जननी सों श्रीवृषभानदुलारी हो । सुनिसुनि समुझ रहत उर अंतर मुख ही करि मनुहारी हो ॥ १० ॥ जो उनकों अति कुंवर लाडिलो मो पटतर को प्यारी हो । लइ लगाय कुंवरि हिरदेमें देत जसोदा हि गारी हो ॥११ ॥ जहां वृखभान सेज सुख पोढे तहां ले गइ प्यारी हो । जेजे बात चली महरि के कथि कथि अकथ कथारी हो ॥ १२ ॥ अभरन बसन वरन पहराये तन तनसुख की सारी हो । हरखवंत आनंदित दोउ भये पुरुष अरु नारी हो ॥ १३ ॥ एक द्योस मैं नंदखिरक में देखे कुंवर कन्हाइ हो । माथे मुकुट पीत पट ओढे उर बनमाल सुहाइ हो ॥ १४ ॥ कुंडल लोल कपोलन की छबि बिचबिच झलकत झांइ हो । लोचन ललित ललाट अधिक छबि सोभा बरनी न जाइ हो ॥ १५ ॥ ता दिन ते हमहू अपने मन बातजु यही बिचारी हो । जो कबहू जगदीस बनावे राधा वर बनमारी हो ॥ १६ ॥ जो हों कियो आपुनो चाहत सोउ तहां ते चाली हो । भली भइ अब होय कहू ते सुनरी भांवती आली हो ॥ १७ ॥ इत वृषभान जानि सबही विधि उत वे नंद बडभागी हो । इत रानी कीरति परिपूरन उत जसुमति जस जागी हो ॥ १७॥ इत

श्री राधा कुंवरि किसोरी उत गिरिधर अनुरागी हो । 'नंददास' प्रभु चलें सदन कों जब नोछावरि वारी हो ॥ १९ ॥ ❀ १६२ ❀ राजभोग के दर्शन में ❀ ❀ राग सारंग ❀ कहाजु भयो मुख मोरे काहू कछू जू कह्यो । रसकि सुजान लाडिलो ललन मेरी अखियन मांझ रह्यो ॥ १ ॥ अब कछु बात फैल परीरी प्रेम जामुन भयो दूध ते दह्यो । त्रिलोक अतिही सुजान सुंदर सर्वस्व हर्यो 'गोविंद' प्रभू जू लह्यो ॥२॥ ❀ १६३ ❀ भोग के दर्शन में ❀ ❀ राग नट ❀ तू नेक बरजरी जसोदा मैया अपने सांवरे कों । घरघर दधि माखन खात हरत फिरत अलिनमांझ दुरत रूप रावरे को ॥ १ ॥ काहू को कछू रहन न पावत ऊधम मेलत तनकसो सगरे गामरे को । 'नंददास' जसुदा ठाडी हंसत कहा कहिन आवत गोपी प्रेम थावरे को ॥ २ ॥ ❀ १६४ ❀ राग नट ❀ रूप देखि नैना पलक लगे नहीं । गोवर्धनधर के अंग अंग प्रति जहां ही परत दृष्टि रहत तहीं तहीं ॥ १ ॥ कहारी कहों कछु कहत न आवे चोर्यो मन मांगि वे दही । 'कुंभनदास' प्रभु के मिलन की सुंदर बात सखियन सों कही ॥ २ ॥ ❀ १६५ ❀ संध्या आरती मे ❀ राग गोरी ❀ अहो विधना तोपै अचरा पसार मांगौं जनमजनम दीजे याहि ब्रज वसवो । अहीर की जाति समीप नंदसुत घरीघरी घनस्याम हेरिहेरि हंसवो ॥ १ ॥ दधि के दान मिस ब्रजकी वीथिन मे झकझोरन अंगअंग को परसवो । 'छीत स्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल सरद रेन रस रास को विलसवो ॥ २ ॥ ❀ १६६ ❀ सेनभोग आये मे ❀ राग कान्हरो ❀ यह दुलरी बृषभान लइ कब । ना जानों काहू को ढोटा पहुंची पलटे मोहि दइ तब ॥ १ ॥ सुनि मृदु वचन कुंवरि के मुख के बहुरि हसी जननी दोउ तब । यह विवाह अपने श्यामको त्रिभुवन जोट जुगल दंपति कब ॥ २ ॥ एसी बहुरिया व्यार उडावे बडे महर जेंबन बैठे तब । 'कृष्णा' कहे दास गिरिधर की कारज सुफल होय मेरो जब ॥ ३ ॥ ❀ १६७ ❀ राग कान्हारो ❀ जसोदा तब गोपाल बुलायो ।

दुलरी कहां स्याम तेरे गरे की सुनि हस बचन सकुच सिर नायो ॥ १ ॥ दुलरी लइ दइ मोहि पहुंची मैया इन ढोटियन बहुरायो । राधा कही पहले तुम पलटी भले भले कहि भरम जु पायो ॥ २ ॥ अंतर प्रीत वदन उठी मुख झगरो जसुमति के मन भायो । वाल विनोद चरित्र गिरि धर के 'कृष्णा जन' तहां यह जसु गायो ॥ ३ ॥ ❀१६८❀ सेन के दर्शन मे ❀राग केदारा❀ गूजरिया गर्व गहेली उत्तर काहि नाहिं देत । चलत गजगति गोरस की माती बोलत अति रंग भरिया ॥ १ ॥ दिन दिन दान मार गइ हेरी इनते कबहू पाले न परिया । 'गोविंद' प्रभु कहत सखनसों घेरो घेरो तब धाय अंचर धरिया ॥ २ ॥ ❀ १६९ ❀ पोढबे में ❀ राग विहाग ❀ जसुमति सुत पलका पोढावे । अरी मेरो सब दधि बीच कीनों यों कहि के मधुरे स्वर गावे ॥१॥ पोढो लाल कहूं एक कहानी श्रवन सुनत तुमकों एक प्यारी। 'सूर स्याम' अति ही मन हरखे पोढ रहे तब देत हुंकारी ॥२॥ ❀१७०❀

दान एकादशी (भादो सुदी ११)

❀ मंगला के दर्शन में ❀ राग देव गंधार❀ हमारो दान देहो गुजरेटी । बहुत दिनन चोरी दधि बेच्यो आज अचानक भेटी ॥ १ ॥ अति सतरात कहांधो करेगी बड़े गोप की बेटी । 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर भुज ओढनी लपेटी ॥ २॥ ❀ १७१ ❀ शृंगार के ओसरा में ❀झांझपखावज सूं ❀ राग देवगधार ❀ कहो किन कीनो दान दही को । सदा सर्वदा बेचत यह मग है मारग नित ही को ॥ १ ॥ भाजन ही समेत सीस ते लेत छीन सबही को । ऐसो कबहू सुन्यो न देख्यो नयो न्याय अबही को ॥ २ ॥ कमलनयन मुसिकाय मंद हंसि अंचल गह्यो जबही को । 'दास चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर मन चोर लियो तबही को ॥ ३ ॥ ❀ १७२ ❀ राग देवगंधार ❀ पिछोरी बांहन देहे दान । सूधेमन तुम लेहु गुसांई राखि हमारो मान ॥ १ ॥ मारग रोकि रहत मनमोहन सब गुन रूप निधान । बदन मोरि मुसिकाय भामिनी नयनबान संधान ॥ २ ॥

नन्दराय के कुंवर लाडिले सबके जीवन प्रान । 'परमानंद' स्वामी नागर हो तुमते कोन सुजान ॥३॥ ❀ १७३ ❀ राग आसावरी ❀ माधो जान देहो चली बाट । कमलनयन काहेकों रोकत औघट जमुना घाट ॥ १ ॥ और सखा देखे हैं कोऊ गहत सीस ते माट । तुम नांही डर मानत मोहन मेरे गोवर्धन बाट ॥ २ ॥ क्यों बिकायगो मेरो गोरस भोर करत हो नाट । चन्द्रावली उझकि 'परमानंद' निसु दिन एकहि हाट ॥३॥ ❀१७४❀ राग देवगंधार❀ मटुकी आन उतार धरी । इन मोहन मेरो अचरा पकरयो तब मैं बहुत डरी ॥ १ ॥ मोपे दान साँवरो माँगत लीने हाथ छरी । मोहीकों तुम गहिज्ञु रहे हो संग की गई सगरी ॥२॥ पैयां लागि करत हों बिनती दोउ कर जोर खरी । 'परमानन्द' प्रभु द़धि बेचन की बिरियाँ जात टरी ॥३॥ ❀ १७५ ❀ ❀ राग बिलावल ❀ कैसो दान दानी को । करन लागे नई रीत आये हो अनोखे दानी दूध दही मही को अजहु न हम जानी को ॥१॥ चलत हो बिचित्र चाल सुबल तोक कों चखाय काहू सों कहत गाढ़ो जाम्यो काहू सों कहत पानी को । 'नंददास' आसपास लपटि रही कनक बेलि मोंहन की । मटकन में सब ही उरझानी को ॥२॥ ❀ १७६ ❀ राग बिलावल ❀ गोवर्धन की सिखरते हो मोहन दीनी टेर । अति तरंग सों कहत है सब ग्वालिन राखो घेर । नागरि दान दे ॥१॥ ग्वालिन रोकी ना रहे हो ग्वाल रहे पचिहार । अहो गिरिधारी दोरियो सो कह्यो न मानत ग्वार । मोहन जान दे ॥२॥ चली जात गोरस मद माती मानों सुनत नहिं कान । दोरि आये मन भावते सो तो रोकी अंचल तान ॥३॥ एक भुजा कंकन गहे हो एक भुजा गहि चीर । दान लेन ठाड़े भये सो तो गहवर कुंज कुटीर ॥४॥ बहुत दिना तुम बच गई हो दान हमारो मार । आज हों लेहों आपनो दिन दिन को दान समार ॥५॥ रस निधान नव नागरी हो निरख बचन मृदु बोल । क्यों मुरि ठाडी होत हो सो घूँघट पट मुख खोल ॥६॥ हरखि

हिये हरि करखि के हो मुख ते नील निचोल । पूरन प्रगट्यो देखिये मानों चंद घटा की ओल ॥७॥ ललित बचन समुदित भये हो नेति नेति यह बेन । उर आनन्द अति ही बढ्यो सो सुफल भये मिलि नैन ॥८॥ यह मारग हम नित गई हो कबहु सुन्यो नहिं कान । आज नई यह होत है सो मागत गोरस दान । मोहन जान दे ॥९॥ तुम नवीन नव नागरी हो नूतन भूषन अंग । नयो दान हम मांगनो सो नयो बन्यो यह रंग ॥१०॥ चंचल नयन निहारिये हों अति चंचल मृदु बैन । कर नहिं चंचल कीजिये तजि अंचल चंचल नैन ॥११॥ सुन्दरता सब अङ्ग की हो बसनन राखी गोय । निरखि निरखि छबि लाड़िली मेरो मन आकर्षित होय ॥१२॥ ले लकुटी ठाडे भये हो जानि सांकरी खोर । मुसकि ठगोरी लायके मोसों सकत लई रति जोर ॥१३॥ नेंक दूर ठाड़े रहो हो कछू और सकुचाय । कहा कियो मन भांवते मेरे अञ्चल पीक लगाय ॥१४॥ कहा भयो अञ्चल लगी हो पीक हमारी जाय । याके बदले ग्वालिनी मेरे नयनन पीक लगाय ॥१५॥ सूधे बचनन माँगिये हो लालन गोरस दान । मोंहन भेद जनाय के सो कहत आन की आन ॥१६॥ जैसे हम कछु कहत है हो एसी तुम कहि लेहु । मन माने सो कीजिये पर दान हमारो देहु ॥१७॥ कहा भरे हम जात है हो दान जो माँगत लाल । भइ अवार घर जान देसो छाँड़ो अटपटी चाल ॥१८॥ भरे जात हो श्रीफल कंचन कमल बसन सों ढाँक । दान जो लागत ताहिको तुम देकर जाहु निसांक ॥१९॥ इतनी बिनती मानिये हो मांगत ओली ओड । गोरस को रस चाखिये सो लालन अञ्चल छोड़ ॥२०॥ संग की सखी सब फिर गई हो सुनि है कीरति माय । प्रीति हिये में राखिये सो प्रगट किये रस जाय ॥२१॥ काल बहुरि हम आइ हैं हो गोरस ले सब ग्वारि । नीकी भांति चखाइहों मेरे जीवन हों बलिहारि ॥२२॥ सुनि राधे नव नागरी हो हम न करे विश्वास। कर को अमृत छांड़ि

के को करे काल की आस ॥ २३ ॥ तेरो गोरस चाखिवे हो मेरो मन ललचाय । पूरन ससि कर पायके सो चकोर न धीर धराय ॥ २४ ॥ मोहन कंचन कलसिका हो लीनी सीस उतार । श्रमकन वदन निहारि के सो ग्वालिनि अति सुकुमार ॥ २५ ॥ नव विजना गहि लालजू हो श्रीकर देत ढुराय । श्रमित भई चलो कुञ्ज में सो नेक पलोटूं पांय ॥ २६ ॥ जानत हो यह कोन है हो ऐसी ढीठ्यो देत । श्री वृषभान कुमारि है सो तोहि बीच को लेत ॥ २७ ॥ गोरे श्रीनन्दराय जू हो गोरी जसुमति माय । तुम याहीते सांवरे लाल एसे लच्छन पाय ॥२८॥ मन मेरो तारन बसे हो ओर अंजन की रेख । चोखी प्रीत हिये बसे सो याते सांवल भेख ॥ २९ ॥ आप चाल सों चालिये हो यही बड़ेन की रीत । एसी कबहु न कीजिये सो हंसे लोग विपरीत ॥३०॥ ठाले ठूले फिरत हो हो ओर कछू नहिं काम । बाट घाट रोकत फिरो सो आन न मानत स्याम ॥ ३१ ॥ यही हमारो राज है हो ब्रज-मण्डल सब ठोर । तुम हमारी कुमुदिनी हम कमल बदन के भोंर ॥ ॥३२॥ एसे में कोउ आयके हो देखे अद्भुत रीति । आज सबे नन्दलाल जू सो प्रगट होयगी प्रीति ॥ ३३ ॥ ब्रज वृन्दावन गिरि नदी हो पसु पंछी सब संग । इन सों कहा दुराइये प्यारी राधा मेरो अंग ॥३४॥ अंस भुजा धरि ले चले हो प्यारी चरन निहोर । निरखत लीला 'रसिक' जू जहाँ दान मान की ठोर ॥ ३५ ॥ तुम नंद महर के लाल अहो रानी जसुमति प्रान अधार, मोहन जान दे । वृषभान नृपति की बाल अहो रानी कीरति प्रान अधार, नागरि दान दे ॥ ❀ १७७ ❀ शृङ्गार के दर्शन में ❀ राग टोड़ी ❀

कहो जू कैसो दान मांगिये हम देव पूजन आईं । कोउ दह्यो कोउ मह्यो माखन बोलि-बोलि अति अछूतो अपनो-अपनो लाई ॥ १ ॥ तुमें पहले कैसे दीजे कान्हर जू तुम तो सबे फबी करत मन भाई । 'नंददास' प्रभु तुमहि परमेश्वर भये अब कछु नइ ये चाल चलाई ॥ २ ॥ ❀ १७८ ❀

❀ राजभोग आये मे ❀ राग सारंग ❀ दानघाटी छाक आई गोकुल ते कावरि भरि रावल की रावरे ने राखी सब घेर । जान तो जबहि देहों नंद जू की आन खैहों भोजन की रही न कछु चाखो एक बेर ॥ १ ॥ अति प्रवीन-जानराय कनक बेला कर मे लिये बांटत मेवा मन प्रसन्न हेर चहुं फेर । सकल पाक परमानंद आरोगत परमानंद 'परमानंद' टोक करत सुबल टेर टेर ॥२॥ ❀१७९❀ राग सारंग ❀ आगे आवरी छकहारी । जब तुम टेरे तब हों बोली सुनी जो टेर तिहारी ॥१॥ मैया छाक सवारे पठई तू कित रही अवारी । अहो गोपाल गेल हों भूली मधुरे बोलन पर वारी ॥ १ ॥ गोवर्धनउद्धरणधीर सों प्रीति बढी अतिभारी । 'जनभगवान' मगन भइ ग्वालिन तनकी दसा बिसारी ॥ ३ ॥ ❀ १८० ❀ राग सारंग ❀ आज दधि मीठो मदनगोपाल । भावत मोहि तिहारो जूठो चंचल नयन विसाल ॥ १ ॥ आन पात बनाये दोना दिये सबन कों बाँट । जिन नहीं पायो सुनोरे भैया मेरी हथेरी चाट ॥ २ ॥ बहुत दिनन हम बसे कुमुदवन कृष्ण तिहारे साथ । एसो स्वाद हम कबहू न चाख्यो सुन गोकुल के नाथ ॥ ३ ॥ आपुन हसत हसावत ग्वालन मानस लीला रूप । 'परमानंद' प्रभु हम सब जानत तुम त्रिभुवन के भूप ॥ ४ ॥ ❀ १८१ ❀ राग सारंग❀ लालन छांडो हो बरिआइ दान आपनो लीजे लालन हो ब्रजराई । यह अब कहा कहावे अचरा एंचत हो जू करत बोली ठोली भांडे सेती एती ठकुराई ॥ १ ॥ जो माँगो जो दैहें अब किन बकहै गहि अरु लीजे गाम आपनो कोन सहे तिहारी दिनदिन की अधिकाई । 'गोविन्द' प्रभु के नयनन सों नैना मिले चितेब चली मुसिकाइ लालन को मन लियोहे चुराई ॥ २ ॥ ❀ १८२ ❀ राग सारंग ❀ कृपा अवलोकन दान देरी महादान वृषभान कुमारी । तृषित लोचन चकोर मेरे तुव वदन इन्दु किरन पान देरी ॥ १ ॥ सब बिध सुघर सुजान सुन्दरी सुन बिनती तू कान देरी । 'गोविन्द' प्रभु

पिय चरन परसि कहै याचक कों तू मान देरी ॥२॥ ❀१८३ ❀ राग सारंग ❀ जमुनाघाट रोकी हो रसिक चन्द्रावल। हँसि मुसिकाय कहति ब्रजसुन्दरि छबीले छैल छांड़ो अंचल ॥ १ ॥ दान निवेर लेहो ब्रज सुन्दर छांडो अटपटी कित गहत अलकावलि। कर सों कर गहि हृदय सों लगाय लई 'गोविन्द' प्रभु सों तू रास रङ्ग मिलि ॥ २ ॥ ❀१८४❀ राजभोग के दर्शन ❀ ❀राग सारंग❀ चलन न देत हो यह बटिया। रोकत आय स्यामघन सुन्दर जब निकसत गिरघटिया ॥ १ ॥ तोरत हार कंचुकी फारत मांग निहारत पटिया। पकरत बांह मरोर नन्द सुत गहि फोरत दधि चटिया ॥ २ ॥ 'कुंभनदास' प्रभु कब दान लीनो नइ बात सब ठटिया। गिरधर पांय पूजिये तिहारे जानत हो सब घटिया ॥ ३ ॥ ❀१८५❀ भोग के दर्शन ❀राग नट❀ ये कोन प्रकृति तिहारी हो ललना माइ देखे सो कहा कहै यहां ठाडो इत उत को। सकल ब्रज के बगर में गायन के डगर में घेरो घेरि राखी हम कहा धरावत तुमारो न्याव कितको ॥ १ ॥ दान दान करि राख्यो झूठेइ गाल मारत ऐसे कैसे भरिबोरी माइ इन सों नित नितको। चलो री भवन जांय दान के मिस लूटत हम कहैगी जाय नंदजू सों पायो मैं तो 'गोविन्द' प्रभु के चितको ॥ २ ॥ ❀१८६❀ राग नट ❀ आज वृन्दावन में दधि लूटी। कहां मेरा हार कहां नकवेसर कहां मोतियन लर टूटी ॥ १ ॥ बरज यसोदा अपने मोहन कों झकझोरत मे मटुकी फूटी। 'सूरदास' प्रभु के जु मिलन कों सर्वस्व दे ग्वालन छूटी ॥२॥ ❀१८७❀ संध्या भोग आये ❀ राग नट ❀ कहो जू दान बहो लैहो कैसे। दूध दही को दान कबहू न सुन्यो कान मानो लोंग लादी काहु ने सुन्यो जैसे ॥ १ ॥ आपुही ते लेत किधों काहू लिख दीनों समुझावो धो तैसे। 'गोविन्द' प्रभु तुमैं डर काहू को ब्रजराज कुंवर तातें गाल मारत घर वैसे ॥ २ ॥ ❀१८८❀ संध्या समय❀ राग पूर्वी ❀ ए तुम चले जाओ ढोटा अपने मग कित रोकत ब्रजवधुन बाट। कहत कहा सोई

कहो जू दूर भये जिनि परसो गोरस के माट ।। १ ।। दिन दिन को पेंडोरी
माई हम कैसे के आवें जांय इन सों परी आंट । 'गोविन्द' प्रभु तुमें डर न
काहू को व्रजराज कुंवर वर जाय चराओ गोधन के ठाट ।। २ ।।❀१८९❀
❀ सेन भोग आये ❀ राग ईमन ❀ घेरो घेरो व्रजनारी जान नहीं पावें । चलीय
जात उत्तर नहीं देत लेउ छिनाय मटुकिया सीसतें और ढीठ दीखियत
भारी ।। १ ।। खिरक दुहाय गोरस लिये जात अपने अपने भवन ताको
दान मांगत जैसे काहू लादी है लोंग सुपारी । 'गोविन्द' प्रभु आये अनोखे
दानी चलो चलो री बुलावत घर के लाल बिहारी ।। २ ।। ❀१९०❀
❀ राग ईमन ❀ दधि न बेचिये हमारे कुल एहो तुमसों सौ सौ बार करी
नहियां । जोपे दधि बेचिये तो तुमते को लेवा है सुनि व्रजराज लाडिले
ललन कितब गहत बहियां ।। १ ।। खिरक दुहाये गोरस लिये जात अपने
अपने भवन ताको दान मांगत कहाब कहिये इन सैयां । 'गोविन्द' प्रभु सों
कहत प्यारी की सखी चलोजू नेक बलि जाऊं बैठी रानी जसुमति जहियां
।। २ ।। ❀१९१❀ राग ईमन ❀ कुंवर कान्ह छाँडो हो ऐसी बतियां कितब
करत बरिआई । ज्यों ज्यों बरजत त्यों त्यों होत आगरे डगर में रोकत
नार पराई ।। १ ।। दूध दही को दान कबहू न सुन्यो कान तुमही यह नई
चाल चलाई । 'गोविन्द' प्रभु सों कहत प्यारी की सखी अब ये बातें तुम्हें
ही फबि आई ।। २ ।। ❀१९२❀ राग कानरा ❀ गिरधर कोन प्रकृति
तिहारी अटपटी सघन वीथिन में व्रजवधून सों अब मारग में अटको ।
तुम तो ठाले ठूले फिरत हो जू निसदिन हम गृहकाज करे कैसे बच बच
निकसत इत उत ते ह्वै ही जात भटको ।। १ ।। दान दान कर राख्यो कोने
धों दान दियो झूठेइ मारत गाल पटको । 'गोविन्द' प्रभु आये अनोखे
दानी व्रज सुनरी सयानी चटमट कियो मटको ।। २ ।। ❀१९३❀ भोग सरे❀
❀ राग कानरो ❀ अहो व्रजराज राइ कोने दान दियो कोने लियो यह मारग

हम सदाई आवत जात अब कछु नई ये चलाई ॥ १ ॥ जोपे न जान दे तो चलोरी उलटि घर इने तो सबे फबी करत मन भाई । 'गोविंद' प्रभु के नैनन सों नैना मिले चितेब चली कुंवरि नैना मुसिकाई ॥२॥ ❀ १६४ ❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ का पर ढोटा नैन नचावत है को तिहारे बबा की चेरी। गोरस बेचन जात मधुपुरी आय अचानक बन में घेरी ॥ १ ॥ सैनन दे सब सखा बुलाये बात ही बात समस्या फेरी । जाय पुकारों नंदजू के आगे जिनि कोऊ छुओ मटुकिया मेरी ॥२॥ गोकुल बस तुम ढीठ भये हो बहुते कान करत हों तेरी । 'परमानंद दास' को ठाकुर बलि-बलि जाऊँ स्यामघन केरी ॥ ३ ॥ ❀१६५❀ राग कान्हरा ❀ दान माँगत ही मे आन कछु कियो । धाइ लई मटुकिया आय कर सीस ते रसिकवर नन्दसुत रंच दधि पियो ॥ १ ॥ छूटि गयो झगरो हँसि मन्द मुसिकान में तब ही कर कमल सों परसि मेरो हियो । 'चत्रभुजदास' नैनन सों नैना मिले तब ही गिरिराजधर चोर चित लियो ॥ २ ॥ ❀ १६६ ❀ मान में ❀ राग विहाग ❀ नवल निकुंज नवल मृगनैनी नवल नेह तेरो लागि रह्यो री । चलरी सखी तोहि लाल बुलावे काहे न करत तू मेरो कह्यो री ॥१॥ सुन भामिनी एक बात छबीली आज माग्यो हरि तेरो मह्योरी । छिन-छिन बिलम करत बिन काजे तेरो विरह नहिं जात सह्यो री ॥ २ ॥ अधर बिंब राजत कर मुरली राधे-राधे रट नाम लह्यो री । 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर लेहो प्रेम-रस जात बह्यो री ॥ ३ ॥ ❀१६७❀ पोढवे में ❀ राग विहाग ❀ पोढ़े पिय मदन-मोहन स्याम । अनन्य होय चरनारबिंद भज सकल पूरन काम ॥ १ ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि द्वारे योग भोग विश्राम । उमापति सुकदेव नारद रटत निसदिन नाम ॥२॥ सकल कला प्रवीन गिरिधर राधिका भुज वाम । कहत 'कृष्णा' सुवस बसिये नंद गोकुल गाम ॥३॥ ❀१६८❀

श्री वामन जयन्ती (भादो सुदी १२)

❀ जन्म के पञ्चामृत समय में ❀ राग धनाश्री ❀ प्रगटे श्रीवामन अवतार। निरखि अदिति मुख करत प्रसंसा जग-जीवन आधार ॥१॥ तन घनस्याम पीतपट राजत सोभित हैं भुज चार। कुण्डल मुकुट कंठ कौस्तुभमनि और भृगु-रेखा सार ॥ २ ॥ देखि वदन आनन्दित सुर-मुनि जै जै करे निगम उच्चार। 'गोविंद' प्रभु बलि वामन ह्वै के ठाड़े बलि के द्वार ॥३॥❀१९९❀

❀ उत्सव भोग आये ❀ राग धनाश्री ❀ बलि के द्वारे ठाड़े वामन। चारों वेद पढ़त मुखपाठी अति सुमंद स्वर गावन ॥ १ ॥ बानी सुनि बलि बूझन आये अहो देव कहो आवन। तीन पेंड बसुधा हम मागें पर्नकुटी एक छावन ॥ २ ॥ अहो-अहो विप्र कहा तुम मांग्यो अनेक रतन देहु गामन। 'परमानन्द' प्रभु चरन बढ़ायो लाग्यो पीठ नपावन ॥ ३ ॥ ❀ २०० ❀

❀ राग धनाश्री ❀ राजा एक पंडित पौरि तिहारी। चारों वेद पढ़त मुखपाठी है वामन वपु धारी ॥ १ ॥ अपद द्विपद पसु-भाषा जानत सूरज कोटि उजारी। नगरन में नर-नारी मोहे अवगति अल्प अहारी ॥ २ ॥ सुनि धुनि बलि राजा उठि धाये आहुती यज्ञ बिसारी। सकल रूप देख्यो जु विप्र को किये दण्डवत जुहारी ॥ ३ ॥ चलिये विप्र जहाँ यज्ञवेदी बहुत करी मनुहारी। जो मांगो सो देहुं तुरत ही हीरा रतन भंडारी ॥ ४ ॥ रहो-रहो राजा अधिक न कहिये दोष लगत है भारी। तीन पेंड वसुधा मोहि दीजे जहाँ रचों धर्मसारी ॥ ५ ॥ सुक्र कहे सुनिये बलिराजा भूमि को दान निवारी। यह तो विप्र न होय आपुही आये छलन मुरारी ॥ ६ ॥ कीजे कहा जगतगुरु याचें आपुन भये भिखारी। लेके उदक संकल्प जो कीनो वामन देह पसारी ॥७॥ जै-जैकार भयो भुव मापत दोय पेंड भई सारी। एक पेंड तुम देहु तुरत ही के वचनन सत हारी ॥८॥ सत नहिं छांड़ों सतगुरु मेरे नापो पीठ हमारी। 'सूरदास' प्रभु सर्वसु दीनों पायो राज

पातारी ॥६॥ ❀ २०१ ❀ राग धनाश्री ❀ मेरे क्यों आये विप्रवामन। सुनि के वेद हृदै रुचि बाढ़ी कह्यो जु भीतर आवन ॥१॥ चरन धोय चरनोदक लीनो माँग विप्र मनभावन। तीन पेंड धरती हों माँगों द्वार कुटी एक छावन ॥२॥ वाकों विप्र कहा तुम माँग्यो हीरा रतन देहुँ गामन। 'सूरदास' प्रभु इतनो माँग्यो लाग्यो पीठ मपावन ॥३॥ ❀ २०२ ❀

भादों सुदी १३ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ बलि वामन हो जग पावन करन। कही न परत सोभा नीलमनिन कीसी गोभा गगन गयो जब सुन्दर चरन ॥१॥ बन्यो है भेद अति उतते गंग की धार धसी है धरनि उज्वल वरन। इतते पद की जोत मानों कालिंदी की धार चढ़ी है अमरपुर पाप हरन ॥२॥ रहे हैं चक्रत चाहि सुर नर मुनिवर दुहुँदिस नेह आन किये वरन। 'नंददास' जाके चरित दुरित दवन रंचक श्रवन मिटे जन्म मरन ॥३॥ ❀ २०३ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग काफी ❀ ऐसो दान न मांगिये हो प्यारे ललना हम पे दियो न जाय। बन मे पाय अकेली युवतिन बातें कहत बनाय। बाट घाट औघट जमुना तट मारग रोकत आय ॥१॥ कोऊ एसो दान लेत है कोने सिखये पढ़ाय। जो रस चाहो सो रस नाहीं गोरस देहों चखाय ॥२॥ औरन पे ले लीजे हो गिरिधर तब हम देहिं बुलाई। 'सूरस्याम कित करत अचगरी हमसों कुंवर कन्हाई ॥३॥ ❀२०४❀

❀भादों सुदी १४❀ ❀ भोग के दर्शन में ❀ राग गौरी ❀ श्री वृन्दाविपिन सुहावनो और बंसीबट की छाँय हो। प्यारी राधा जू दधि ले निकसी कन्हैया ने रोकी आय हो। वृखभान लड़ैती दान दे ॥१॥ अहो प्यारे सबै सयाने साथ के और तुमहु सयाने लाल हो। लिख्यो दिखावो रावरे कब दान लियो पसुपाल हो। नंदराय लला घर जान दे ॥२॥ अहो प्यारी ले आये तो लेइंगे और नई न करिहै आज हो। मोहि नित पहेराय पठावही और बीरा दे व्रजराज हो। वृष०। ॥३॥ अहो प्यारे देस हमारे बाप को जाकी

बाँह बसे नन्दराय हो । रुंध रखाई साँवरे तेरी तिहिं सुख चरती गाय हो ।
नंद०। ॥४॥ अहो प्यारी देस तिहारे बाप को सो तो सब दीनो साथ हो ।
सब संकल्प्यो ता दिना जा दिन पियरे किये हाथ हो । वृष० ॥५॥ अहो
प्यारे यहां हम लाद्यो है कहा और कहा भरे हम वेल हो । आड़े ह्वै ठाड़े
भये मेरी रोकी मही की गैल हो । नंद० ॥६॥ अहो प्यारी अङ्ग अङ्ग बेल
सुहावनी और भरे हैं रतन बहु भार हो । जावक लेख्यो पारख्यो तुम
निकसी हरियारे हार हो । वृष० ॥७॥ अहो प्यारे कहाँ दुंदुभी घंटा बजें
आर को नायक यहाँ आय हो। कहां लों उत्तर देहुगे तुम मुख ललिता
के चाय हो । नंद । ॥८॥ अहो प्यारी नूपुर किंकनी बीछिया और घंटा
धुनि नाना भाय हो । नायक रूप लदेनिया सो दिये दमामा जाय हो । वृष०
॥९॥ अहो प्यारे इहाँ हाकम है कहाँ तुम कहत बनाय बनाय हो ।
यह उत्तर क्यों लों देउगे तुम हो दानिन के राय हो । नंद० ॥१०॥ अहो
प्यारी इहाँ है हाकिम गाय के तुम छल बल निकसी आय हो । सैयां सुबल
सयानो ढोटा या बन को विठतो खाय हो । वृष० ॥११॥ अहो प्यारे
गुजराती डाकोतिया सो लेत ग्रहन को दान हो । जो उनमे हो सांवरे
वृखभान बाबा राखे मान हो । नन्द० ॥१२॥ अहो प्यारी जनम जनम
की हों कहा कहों तुम सुनो सुबल सब साथ हो । अशुभ लछिन ते सुभ
करों तुम नेकु दिखाबहु हाथहो । वृष० ॥ १३ ॥ अहो प्यारे नवग्रह कहिये
दान के जाकी विधि जाने प्योसार हो । एक सोनो संक्रांत को और ऊंट
भरे ननसार हो । नन्द० ॥१४॥ अहो प्यारी हों दानी बहु भांति को और
जो कोउ दान जो देई हों । जोई जोई विधि करि देउगी सोई सोई विधि
करि लेउ हो । वृष० ॥१५॥ अहो प्यारे तोई तन कारे भये और ले ले ऐसो
दान हो । क्यों छूटोगे भारते काहू तीरथ हू नहिं न्हात हो । नंद० ॥१६॥
अहो प्यारी गोरज गंगा न्हात हों और जपत गायन को नाम हो । परम

पुनीत सदा रहों कछु लेत नहीं सकुचाउं हो । वृष० ॥१७॥ अहो प्यारे दान ले दान ले लाड़िले कछु गाय बजाय रिझाय हो । जैसी विधि हम देखि है और तेसोई देहिं मंगाय हो । नंद० ॥१८॥ अहो प्यारी नट ह्वै नाच्यो सांवरो और बिरद पढ्यो जैसे भाट हो । महुवरि मे हेरी दई अरु मेटी कुंवर मेरी नाट हो । वृष० ॥१९॥ अहो प्यारे एक सखी चितचोर के और जोरि दई दृग गांठि हो । दंपति रति पहिचानि के और गये मन्मथ दल नाटि हो । नंद० ॥२०॥ अहो प्यारी वे सखियन मे को चली वे तो चले है सखन की ओर हो । पट दोऊ छबि के छटा तन रहे है छबीले छोर हो । वृष० ॥२१॥ अहो प्यारे घूँघट मे अति झलमले और अति आवेसी नैन हो । मुरि चितये त्योंही रहे थकि रहे रसीले बैन हो । नंद० ॥२२॥ अहो प्यारी को लकुटी आडी करे और कौन कहि सके बात हो । रस ही रस बस ह्वै गये और सुफल भये सब गात हो । वृष० ॥२३॥ अहो प्यारे युवती अनेक सुहावनी और अति रस बढ्यो विहार हो । चतुरन मन दोऊ मिले और 'दास बली' बलिहार हो । नंदराय लला घर जान दे ॥२४॥ ❀२०५❀

❀भादों सुदी १५❀राजभोग दर्शन❀ राग सारंग ❀ ए तुम पेंडोइ रोके रहत कैसे के आवे जांय ब्रजबधू तुमही विचार देखो परम सुजान । खिरक दुहावन दिनदिन आयो चाहें ऐसे कैसे बने गुसांइ इतउत गहवर गेलो हू न आन ॥ १ ॥ एसी अटपटी कित गहो जू लाडिले कुंवर जो कबहूं परिहै ब्रजराज के कान । 'गोविंद' प्रभु सों कहत प्यारी की सखी तुम यों नेक इत उतरो हमहि देहुधों जान ॥ २ ॥ ❀ २०६ ❀ पोढ़वे में ❀ राग केदारो ❀ पोढिये लाल लाडिली संग ले । नौतन सेज बनी अति सुन्दर बिच-बिच सोंधे के पट दे ॥ १ ॥ हों करिहों चरनन की सेवा जो मेरे नैनन ही सुख ह्वै । 'गोपीनाथ' या रंगमहल में जोरी राज करो अविचल ह्वै ॥२॥ ❀२०७❀

* * *

श्री बालकृष्ण जी के उत्सव की बधाई (आसौज वदी ६)

❀ सर्वोत्तम जी की बधाई ❀ राग धनाश्री ❀ जो पे श्रीवल्लभ रूप न जाने । तो कैसे यह जन लीला के नित्य संबंध करि माने ॥ १ ॥ प्राकृत निखिल धर्म नहिं परसत अप्राकृत जो बखाने । प्रतिपादित निगमादिक वचनन साकृति सिद्धि निदाने ॥ २ ॥ कलिकालादि दोस के तम करि पंडित हू नहिं जाने । संप्रति अविषय ताहीते है भुव प्रादुर्भाव कहाने ॥ ३ ॥ दया देखि निज भाव प्रगट कों देत महातम दाने । बानी करि जब तब निज मुख को प्रादुर्भाव बखाने ॥ ४ ॥ तिनको कह्यो अबोध सबन कों तुरत सुबोध बखाने । अष्टोत्तरसत नाम जपन करि पाप होत सब हाने ॥ ५ ॥ अग्निकुमार ऋसीस्वर बरन्यो 'जगती' छंद बखाने । देव रूप श्रीकृष्ण रसानन बीज कारुनिक जाने ॥ ६ ॥ कर विनियोग भक्तियोग में प्रतिबन्ध सब हाने । अधरामृत रस स्वाद कृष्ण को यहे सिद्धि करि माने ॥ ७ ॥ आनन्द परमानन्द रूपमय कृष्णमुखाकृति आने । कृपासिन्धु दैवी जो उद्धारक स्मृति आर्ति ही नसाने ॥ ८ ॥ श्रीभागवत गूढ़ार्थन कों प्रगट परायन जाने । गोवर्धनधर साकृति निश्चय स्थापक वेद बखाने ॥ ९ ॥ मायावाद निराकरन करि सकल वाद बल हाने । मारग भक्ति कमल करि बरनों तिनके रवि करि माने ॥ १० ॥ नर-नारी उद्धार करन कों समरथ प्रगट कहाने । अङ्गीकृत करि गोपीपति मानव निज बस करि आने ॥११॥ अङ्गीकृत मर्यादा बोधक करुनाकर विभु गाने । नाहिन दियो काहुने ऐसो दान परायन जाने ॥ १२ ॥ महाउदार चरित जिनके निज गावत निगम बखाने । करि प्राकृत अनुकृति मोहे सुर-रिपु जनवृन्द समाने ॥ १३ ॥ जो पे अग्नि रूप तन वल्लभ रूप जलधि नहिं आने । भक्तन के हित कारक ऐसे नहिं देखे न कहाने ॥ १४ ॥ सेवकजन सिच्छा के कारन कृष्ण-भक्ति प्रगटाने । निखिल सृष्टि इष्ट के दाता इच्छा यह मन माने ॥ १५ ॥ लच्छन

सर्व सम्पन्न महाप्रभु कृष्ण ज्ञान यह दाने । याही ते गुरु वेद पुरान पुकार कहत परमाने ॥ १६ ॥ आनन्द भर परिपूरन अम्बुज नयन देखि ललचाने । कृपा-दृष्टि आनन्द दे दासी दास प्रिय पति जाने ॥ १७ ॥ रोष-दृष्टि के पात भये ते भक्त-वृन्द रिपु हाने । याही ते भक्तन करि सेवत यह निरधार बखाने ॥ १८ ॥ सुख को सेवन कहिये जाको दुराराध्य करि माने । दुर्लभ चरन-कमल जाके निज उग्र प्रताप कहाने ॥ १९ ॥ बानी करि पूरत सेवक-जन निज सरनागति आने । श्रीभागवत समुद्र मथन करि रास-रूप हरि जाने ॥ २० ॥ सानिध्य ते जु दियो हित हरि को भक्ति-मुक्ति के दाने । लीला रास विलास एक रचि कृपा कथा परमाने ॥ २१ ॥ अनुभव बिरह करन कों सब कों त्याग एक मन आने । भक्ति आचार दिखायो जन कों मारग कर्म निदाने ॥ २२ ॥ यागादिक भक्तिन के साधक मन क्रम वच करि जाने । पूरन आनंद पूरन रतिपति वागधीस गुन गाने ॥२३॥ याही ते बिबुधेस्वर पद की कहियत चित में निसाने । कृष्ण सहस्र नाम के दायक भक्त परायन माने ॥ २४ ॥ भक्ति आचार विविध बोधन कों नाना वचन बखाने । अपने काज तजे प्रानन तें प्रिय पदारथ जाने ॥ २५ ॥ तादृस भक्तन करि परिवेष्टित देखत मती हिराने । दास जनन के हित के कारन साधन सब दरसाने ॥ २६ ॥ सकल सक्ति ह्वै रूप दिखावत श्री वल्लभ हरि माने । भूतल पुष्टि प्रगट करिवे कों श्रीविट्ठल निधि आने ॥ २७ ॥ पिता भयो राख्यो महिमा सब अपने कुल मधि जाने । दूर कियो हरि माया मत कों गर्व अपहरन आने ॥ २८ ॥ पतिव्रता पति पारलौकिक इहलौकिक वर दाने । गूढ़ हृदय भक्तन मन आसय दायक परगुन गाने ॥ २९ ॥ उपासनादिक मारग करिके मुग्ध मोह नसाने । मारग भक्ति प्रगट करि सब ते वैलक्षन ठहराने ॥ ३० ॥ प्रथक् सरन मारग उपदेसक कृष्ण हृदय की जाने । प्रतिक्षन नव निकुञ्ज लीला-रस पूरन निज मन माने ॥ ३१ ॥

तिनकी कथा बिवस चित ह्वैके बिसरे सब गुन आने। ब्रजपति प्रिय
ताही ते कहियत प्रिय ब्रजवास बखाने ॥३२॥ लीला-पुष्टि करन ए कहियत
भक्त काम धर्म दाने। सबन अजानी लीला इनकी मोहन रूप कहाने॥३३॥
सब आसक्त भये भक्तन वस पतित पवित्र बखाने। यस अपने गुनगान
श्रवन ते आनंद हृदै बखाने ॥ ३४ ॥ यस पीयूष लहरिन करि छांड़े अन्य
भाव पर आने। लीलामृत रस करि पोखे तब कहत फिरत महाराने ॥३५॥
गोवर्धन वास उछाह एक चित लीला-प्रेम समाने। यज्ञ भोग बलि यज्ञ
करन कों चार वेद विकसाने ॥ ३६ ॥ सत्य प्रतिज्ञा त्रिगुनातीत सुन नीति
विसारद जाने। कीरति बढ़न महा तत्वसूत्र भाष्य प्रकासक माने ॥ ३७ ॥
मायावाद तूल उन्मूलन अग्नि रूप कहि गाने। ब्रह्मवाद उद्धारन कारन
भूतल जन्म बखाने ॥ ३८ ॥ अप्राकृत भूषन परिभूषित सहज हास मुख
ठाने। ब्रह्मलोक भुवलोक रसातल के भूषन युत जाने ॥ ३९ ॥ उधरे
भाग्य अवनीतल के निज सुन्दर सहज कहाने। भक्तन करि सेवित निज
पदरज ते ई बहु धन दाने ॥ ४० ॥ यह प्रकार आनन्दनिधि प्रभु के नाम
पदारथ गाने। अष्टोत्तरसत ते कहियत जे अपने सर्वस माने ॥ ४१ ॥
श्रद्धा निर्मल बुद्धि करि जे नित्य पढ़त जन माने। एक चित्त करि के
अधरामृत सिद्धि याहि ते जाने ॥४२॥ वृथा मुक्ति बिन पाये ताके पाये यह
गति माने। कृष्ण पदारथ रस गहिवे कों जप करियत है राने ॥४३॥ यह
विधि द्विज कुल पति के 'गिरिधर' नाम वितान बखाने। श्री वल्लभ
श्रीविट्ठल प्रभु को निज अनुचर करि माने ॥४४॥ ❀२०८❀ राग धनाश्री ❀
जोपे श्री विट्ठलनाथहि गावे। श्रीवल्लभ पद कमल कृपा ते सुगम
करि के पावे ॥१॥ जिनके नाम अर्क के उदये पाप ध्वांत मिटावे।
विकसित होत हृदय कमलन ते नाम आश्रय करावे ॥२॥ छंद 'अनुष्टुप'
ऋषि अग्निसुत तिनके कुमार कहावे। सर्वसक्ति संयुक्त देव श्रीवल्लभ आतमज

भावे ॥ ३ ॥ सकल इष्ट सिद्धि अर्थन विनियोग निरूपन गावे । श्रीविट्ठल
कृपासिन्धु अति भक्त वत्सल जु कहावे ॥ ४ ॥ अति सुंदर है कृष्णलीला
रसआविष्ट ताहि जतावे । श्री सहित श्रीवल्लभनंदन दुखते दरसन पावे ॥ ५ ॥
भक्तन करि संदृश्य महाप्रभु भक्तगम्य ही जतावे । निजजन के भय नास
करत महा भक्त हृदय कहावे ॥ ६ ॥ दीनानाथ एकआश्रय प्रभु ऐसे ही
जु दिखावे । कमल लोचन अरु रासलीलारस तिनके उदधि गवावे ॥ ७ ॥
धर्म सेतु अरु भक्ति सेतु प्रभु सुखमेव्य जू कहावे । ब्रजेस्वर सर्वस्व भक्त के
सोकन नास करावे ॥ ८ ॥ सांत स्वभाव सु जानत सबकों मनको दान
दिवावे । रुक्मिनिरमन श्रीपद्मावतीपति निगम नेति करि गावे ॥ ९ ॥
भक्तरत्न परीक्षा करि भक्तरक्षा दक्ष जतावे । श्रीकृष्णभक्ति प्रगट करि
हमसे असुर जीव उधरावे ॥ १० ॥ महाअसुर को त्याग करे तब दैवी
उधार बतावे । सर्वसास्त्रविदनके सिरोमनि वेद पुरान गवावे ॥ ११ ॥
कर्मजाड्य भेदन के दिनमनि उदय प्रताप जतावे । भक्तन नेत्र चंद रूप
प्रभु त्रिविध ताप मिटावे ॥ १२ ॥ महालक्ष्मी गर्भरत्न श्रीविट्ठल वैस्वानरसुत
भावे । कृष्ण मारग को उद्भव जिनते कृपारस बरखावे ॥ १३ ॥
भक्तन के चिंतामनि भक्ति कल्पतरु जु कहावे । श्रीगोकुलमधि वास करिके
कालिंदी मनभावे ॥ १४ ॥ श्रीगोवर्धन आगमरत अति निजजनकों जु
जतावे । अचल वृंदावन अति प्रिय गोवर्धनयग्य करावे ॥ १५ ॥ महेन्द्रमदहर
के प्रिय कृष्णलीला सर्वस्व जतावे । श्रीभागवत के भाव जानत प्रभु
गूढ़अर्थ प्रगटावे ॥ १६ ॥ पिताप्रवर्तित भक्तिमारग प्रचार सुविचार बतावे ।
ब्रजेस्वर पे प्रीति करत निजजन पे कृपा करावे ॥ १७ ॥ करि निमंत्रन
जिमाय सबनकों स्त्रीसूद्रादिक उधरावे । बाललीला आदि प्रीति अति
तेई बहु मन भावे ॥ १८ ॥ श्रीगोपी संबंधि सत्कथि है निजजन पे
बरखावे । अति गंभीर तात्पर्य है तिनके वेद हु पार न पावे ॥ १९ ॥

कथनीय रु गुनकर जिनके सेस सहस्रमुख गावे । पितावंस सुधोदधि तिनके चंदरूप कहावे ॥ २० ॥ आपुन से सुत सात प्रगट करि अनेक जीव उधरावे । श्रीगिरिधर अखिल गुनपूरन धर्म रीति प्रगटावे ॥ २१ ॥ श्रीगोबिंद पिता की भक्ति कों कृपा करिके दिखावे । श्रीबालकृष्ण प्रभु महाकृपा सों अदेय दान दिवावे ॥ २२ ॥ श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल तिन संग कृपारस बरखावे । श्रीगोकुलनाथ विवेचन करि श्रीवल्लभ गुन हि दिखावे ॥ २३ ॥ श्रीरघुनाथ महा उदार श्रीविट्ठलप्रभु हि गहावे । श्रीयदुनाथ ज्ञानगुन पूरन परमारथहि बतावे ॥ २४ ॥ श्रीघनस्याम विरह रस भोगी महात्याग हि जतावे । यह विधि सात सुतहि प्रगट करि भक्तिपंथ हि दृढावे ॥ २५ ॥ दिसाचक्र मे व्यापक कीरति महाउज्वल चरित कहावे । अनेक भूपति की पंगति तिनके सिर पर चरन धरावे ॥ २६ ॥ विप्रदरिद्र दावानल भूदेवानल पूज्य कहावे । गौ ब्राह्मन के प्रान रक्षा पर सत्यपरायन भावे ॥ २७ ॥ प्रियश्रुति पंथ महायग्य करत नित त्रिविध ताप मिटावे । कृष्णअनुग्रह संप्राप्ति महापतित पावन जु कहावे ॥ २८ ॥ अनेक मारग करि कष्ट जीव अति तिन्है स्वास्थ्य दिखावे । महाप्रभू भ्रम नास करत सब भक्त अज्ञान मिटावे ॥ २९ ॥ उत्तम महापुरुष सत्ख्याती महा पुरुष देह कहावे । दर्सनीयतम बानी मधुर अति महाप्रभु सब मन भावे ॥ ३० ॥ मायावाद निरास करत सदा प्रसन्नवदन जु दिखावे । मुग्धस्थित मुखकमल प्रमादी विसाल नेत्र मनभावे ॥ ३१ ॥ धरनिमंडल के मंडन महाप्रभु सेसहु पार न पावे । तीन जगत व्यापक कीरति सत स्याम कों उज्वल करावे ॥ ३२ ॥ वाक् अमृत आकृष्ट भक्तमन सत्रु हि ताप बढावे । भक्त संप्रार्थित करत दासदासी के अभीष्ट दिवावे ॥ ३३ ॥ अचिंत महिमा अमेय महाप्रभु विस्मय देह जतावे । भक्तक्लेस के असह आप सब दुख सहि रीति दिखावे ॥ ३४ ॥ भक्तन के हित वसिहे महाप्रभु सुंदर

सहज कहावे । आचार्यन के रत्न श्रीविट्ठल परमकृपालु कहावे ॥ ३५ ॥ सर्वानुग्रह मंत्रवेद सर्वसकी दान कुसलता जतावे । गीत संगीत-सास्त्र सिंधु अचल गोधनसखा कहावे ॥ ३६ ॥ गाय गोप गोपिका प्रिय चिंतित तिनकों ज्ञान बतावे । महाबुद्धि विस्ववंद्य पदांबुज जगत विस्मय करावे ॥ ३७ ॥ सदा कृष्णकथाप्रिय सुख उत्पादक कृति प्रगटावे । सर्व संदेह छेदनकों चतुर अति कृपा करिके गवावे ॥ ३८ ॥ सर्वदा स्वपक्ष रच्छन दच्छ प्रतिपक्ष च्छय करावे । गोपी विरह आविष्ट कृष्ण आत्मा सर्व समर्पन करावे ॥ ३९ ॥ निवेदिभक्त सर्वस्व सरन को मारग ही दरसावे । श्रीकृष्ण श्रीवल्लभ के अनुग्रही पे पद प्रार्थना करावे ॥ ४० ॥ ये नामरत्न श्रीविट्ठल पद ध्यान करिके चित लावे । एक सरन ऽहै पढत निरंतर ताके चित हरि आवे ॥ ४१ ॥ जोई मनते इच्छा करत सोई असंसय ते पावे । ये नामरत्न है आज्ञा जिनकी श्रद्धा पढि चित लावे ॥ ४२ ॥ मेरे प्रभु तुमारो करो ताकों स्तुति कर बांह गहावे । श्रीविट्ठल पदपद्मपराग अति सों प्रीति हि करावे ॥ ४३ ॥ श्रीरघुनाथकृत यह अति विजयतम कों पावे । तिनकी कृपाते यथामति बरनों अंगीकार करावे ॥ ४४ ॥ निजदासन को 'दास' जान प्रभु निज यस कों जु गवावे । श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल श्रीमद् बालकृष्ण पद पावे ॥ ४५ ॥ ❀ २०९ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ सबमिल गावो गीत बधाई । श्रीलछमन गृह प्रगट भये है श्रीवल्लभ सुखदाई ॥ १ ॥ उघरे भाग्य सकल भक्तन के पुष्टि भक्ति प्रगटाई । जसुमतिसुत निज सुख देवे कों मुखमूरति प्रगटाई ॥ २ ॥ अति सुंदर विधुवदन विलोकत सकल सोक विनसाई । कहत फिरत सबहिन सों फूले आनंद उर न समाई ॥ ३ ॥ श्रीभागवत अर्थ प्रगट करन कों भाग्यन दई है दिखाई । भई न कबहू ऽहै है नहिं एसी जैसी अब निधि पाई ॥४॥ सदा बिराजो सीस हमारे यह मूरति मन भाई । चरन रेनु सेवक को सेवक 'दास रसिक' बलि जाई ॥५॥❀२१०❀

उत्सव श्री बालकृष्णजी को (आश्विन वदी १३)

❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ मंगलमंगलं अखिलभुवि मंगलं मंगलमय श्री लक्ष्मणनंद । मंगलरूप महालक्ष्मीपति जलनिधि पूर्णचंद्र ॥१॥ मंगलमयकृत सात्मज गोपीनाथ मङ्गलरूप रुक्मिणीश मङ्गल पद्मावतीशं । मङ्गल जनित तनुज श्रीगिरिधर गोविंद बालकृष्ण गोकुलपति रघुनाथ जगदीशं ॥२॥ मङ्गलवर्धक श्रीयदुपति घनश्याम पितुः समान श्रीविट्ठल शुभाभिधानं । मंगलमयकृत महाप्रियवल्लभ सेवनमत मंगलकृत दैवीसंतानं ॥३॥ मङ्गल मङ्गल गोवर्धनधर मंगलमय रसलीलासागर रससंपूरित भावं । वंदेहं तं सततं मन्मथ 'परमानन्द' मदनमय ब्रजपति मुखगतमुरलीरावं ॥४॥ ❀२११❀ ❀ राग सारंग ❀ जयति भटलक्ष्मणतनुज कृष्णवदनानल श्रीइलंमागारुगर्भरत्ने । दैविजनसमुद्धृति करुणकृति निजाविर्भाव विहितबहुविविधयत्ने ॥१॥ महालक्ष्मीपतौ गोपिकानाथ श्रीविट्ठलाभिधसुभगतनुज ताते । प्रथितमायावादवर्तिवदनध्वंसिविहितनिजदासजनपक्षपाते ॥२॥ पुष्टिपथकथन रचिता नेकसुग्रन्थ मथित भागवतपीयूषसारे । रासयुवतीभावसततभावितहृदयमानस जनितमोदभारे ॥३॥ निजचरणकमलधरणीपरिक्रमणकृतिमात्रपावनविततर्तीर्थ जाले । कृष्णसेवनविहित शरणगतशिक्षणाक्षिप्तसंदेहदासैकपाले ॥४॥ निज वचन पीयूषवर्षित सतत साहित्यपुरुषजनभृत्ययुक्ते । विविधवाचोयुक्ति निगमवचनोदितैरपिच दूरीकृत दुष्टजनदुरुक्ते ॥५॥ ईदृशे सति शिरसिसर्वदा वल्लभाधीशपद सकलकर्तरि दयालौ । कैव परिवेदना भवति 'हरिदास' जनसकल साधनरहित निजकृपालौ ॥ ६ ॥ ❀ २१२ ❀ राग धनाश्री ❀ प्रगट्या एमा श्रीवल्लभदेव । श्रीलछमनभट गृह बधाइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥१॥ गावे एमा गीत रसाल । सबे सुहागिन आइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥२॥ ब्राह्मन एमा बेद पढ़ाय । देत असीस सुहाइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥३॥ मोतिन एमा चोक पुराय । बंदनवार बँधाइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥४॥ घर घर

एमा मङ्गलचार । ध्वजा कलस फहराइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥५॥ देवन एमा दुंदुभी बजाय । पहोप अंजुलीबरखाइयां। मङ्गल सोहिलरा ॥६॥ दीने एमा बहु विधि दान । नरनारी पेहेराइयां । मङ्गल सोहिलरा॥७॥ धनि धनि एमा इलंमागारु । आसा सबै पुजाइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥८॥ सब दिन एमा सुख संपति राज । 'हरिजीवन' मन भाइयां । मङ्गल सोहिलरा ॥९॥ ❀ २१३ ❀ राग सारंग ❀ पोस निर्दोस सुखकोस सुन्दरमास कृष्ण नौमी सुभग नव घरी दिन आज । श्रीवल्लभसदन प्रगट गिरिवरधरन चारु विधु वदन छबि श्रीय विट्ठलराज ॥१॥ भीर मागध भई पढ़त मुनिजन वेद ग्वाल गावत नवल बसन भूखन साज । हरद केसर दही कीच को पार नहिं मानो सरिता बही नीर निर्झर बाज ॥२॥ घोष आनन्द त्रियवृन्द मङ्गल गावे बजत निर्घोष रस पुंज कल मृदु गाज । 'विष्णुदास' श्रीहरि प्रगट द्विज रूप धरि निगम पथ दृढ़ थाप भक्त पोषन काज ॥३॥ ❀ २१४ ❀ राग धनाश्री ❀ भूतल महामहोत्सव आज । श्री लछमनगृह प्रगट भये हैं श्री वल्लभ महाराज ॥१॥ आज्ञा दई दयाकरि श्रीहरि पुष्टि प्रगटवे काज । कलि में जन्म उबारयो ततछिन बूडत वेद जहाज ॥२॥ आनन्द मूरति निरखत नैनन फूले भक्त समाज । नाचत गावत बिबस भये सब छाँडि लोक कुल लाज ॥३॥ ॥ घर घर मङ्गल बजत बधाई सजत नये नये साज । मगन भये तन गिनत न काहू तीन लोक पर गाज ॥४॥ लीला सिंधु महारस अब ते बंधी प्रेम की पाज। 'रसिक' सिरोमनि सदा बिराजो श्रीवल्लभ सिरताज ॥५॥ ❀२१५❀ ❀ राग सारंग ❀ बधाई श्रीलक्ष्मनराजकुमार । तिहारे कुल मण्डन श्रीविट्ठल सौरम को नहिं पार ॥१॥ पोसमास वद नोमी प्रगटे फिर लीनो अवतार । मुनिजन जस गावत आवत है होत है जैजैकार ॥२॥ फूले महाप्रभु श्रीवल्लभ गावत मङ्गलचार । ब्रजजन मन हुल्लास सबन के 'जन गिरिधर' बलिहारि ॥३॥ ❀ २१६ ❀ राग सारंग ❀ प्रगटे श्री बालकृष्ण सुजान ।

भक्तन मन आनन्द भयो अति सुन्दर रूपनिधान ॥ १ ॥ श्रीविट्ठल गृह
महा महोत्सव बाजत भेरि निसान । बांधत बन्दनवार तहां मिलि करत
युवतीजन गान ॥२॥ श्रीविट्ठल तब महा मुदितमन देत विप्रन बहु दान ।
आसिरवाद पढ़त है द्विजवर बंदीजन करत बखान ॥३॥ नैनबिसाल दृगंचल
चंचल मानों मदन के बान । मृदुल सुभाव मनोहर मूरति बल्लभकुल के
भान ॥४॥ रुक्मिनि माय परमसुख दायक निजजन जीवन प्रान । 'केसोदास'
प्रभु के गुन अगनित गावत वेद पुरान ॥५॥ ❀ २१७ ❀ राग सारंग ❀
भयो श्री बिट्ठल के मन मोद । पूरनब्रह्म श्रीबालकृष्ण प्रभु धाय लिये जब
गोद ॥१॥ बार बार बिधु बदन बिलोकत फूले अंगन समाय । बाल दसा
की सहज माधुरी अचवत दृग न अघाय ॥२॥ यह सुख देखे ही बनि आवे
जानो रसिक सुजान । दोउ ओर सत सोभा बाढ़ी 'बिष्णुदास' के प्रान ॥३॥
❀२१८❀ राग सारंग ❀ भयो यह श्रीवल्लभ अवतार । प्राची दिसि ते सरद
चंद्र ज्यों लछमन भूप कुमार ॥ १ ॥ श्रीभागवत गूढ रस प्रगटन कारन
कियो विचार । आज्ञा दई निज यज्ञपुरुष कों ताते वह अनुहार ॥ २ ॥
हरि लीलामृत-सिन्धु संपूरित भक्त हेतु अवतार । श्रीगोपीजनवल्लभ वल्लभ
करत जु नित्य विहार ॥ ३ ॥ ब्रजपति पद-सेवन मारग जन कारन कियो
प्रचार । जिहिं अवसर अनुसरत जीव कछु अर्पत वदन कमल स्वीकार
॥४॥ बाजे बाजत बीन दुन्दुभी झांझ मृदंग और तार । नाचत गावत
प्रेम मगन मन निजजन ठाड़े द्वार ॥ ५ ॥ जननी मुदित उछङ्ग लिये सुत
मुख देखत बारम्बार । अति सुख पावत हियो सिरावत बड़भागिन जु
उदार ॥ ६ ॥ श्री लछमन नव-वधू स्वजन पहराये सब परिवार । भू-देवन
कों दिये दान बहु निगम विहित अनुसार ॥ ७॥ जाके गुन गन सेस
सहस्र मुख कहत न आवे पार । यह फल देहु सदा 'रसिकन' कों श्रीवल्लभ
जगत उद्धार ॥ ८ ॥ ❀ २१९ ❀ राग सारंग ❀ अबके सबही रूप धरयो ।

चार बेद के चार वदन कर सकल जगत उधर्‍यो ॥ १ ॥ सुक्ल रक्त अरु पीत कृष्ण पद एक-एक अधिकार। चारों मिल एकत्र लखियत है श्री विट्ठल अवतार ॥२॥ ते जुग में आकास विसद अति अरुन कमलदल नैन। पीत वसन परिधान अङ्ग मानो उनयो गन सुख दैन ॥३॥ ज्ञान रहित जीवन कों 'गिरिधर' राखे सिरधर हाथ। तेसेइ इनकों आप ज्ञान दे कर ग्रहि किये सनाथ ॥४॥ ❀२२०❀ राग सारंग ❀ भाग्यन वल्लभ जनम भयो। सुभ बैसाख कृष्ण एकादसि पूरन विधु उदयो ॥ १ ॥ संतन मन मायामत को अतिगहवर तिमिर गयो। रस स्वरूप ब्रजभूप सबन कों रूप प्रकास दयो ॥२॥ सेवक नयन चकोर सदा सेवामृत-रस अचयो। बचन किरन करि पुष्टि भक्ति-रस सब जग मांझ छयो ॥ ३ ॥ भाव रूप कों भाव रूप ही भजन पंथ जतयो। सबैं सिरावो नयन आपुने दुर्लभ पाय लयो ॥ ४ ॥ रस शृंगार एक उदबोधक विरह ताप नसयो। 'रसिकन' के मन वसो दिवस निस प्रभु आनंदमयो ॥ ५ ॥ ❀ २२१ ❀ राग आसावरी ❀ पौषकृष्ण नौमी को सुभ दिन पूत अक्काजू जायो हो। सुनि सुनि निजजन अति आनंदे हरखत करत बधायो हो ॥ १ ॥ नारदादि ब्रह्मादिक हरखे सुकमुनि अति सचुपाये हो। श्रीभागवत विवेचन करिके गूढ अर्थ प्रगटाये हो ॥ २ ॥ कलिके जीव उधारन कारन द्विजवपु धर भुव आये हो। अति उदार श्री लछमननन्दन देत दान मनभाये हो ॥ ३ ॥ करत बेदधुनि विप्र महामुनि जातकर्म करवाये हो। 'मानिकचंद' प्रभु श्रीविट्ठल के विमल-विमल जस गाये हो ॥ ४ ॥ ❀ २२२ ❀ राग सारंग ❀ भाग्यन बल्लभ भूतल आये। करि करुना लछमन गृह कलि मे ब्रजपति प्रगट कराये ॥ १ ॥ चिंता तजो भजो इनके पद महापदारथ पाये। दास जनन के सकल मनोरथ पूरेंगे मनभाये ॥ २ ॥ साधन करि जिनि देह दुखाओ ये फलरूप बताये। रहो सरन पर दृढ मन करि सब अब आनंद बधाये ॥ ३ ॥ तन मन धन

नोछावर इन पर कर क्यों न देहु उडाये। 'रसिक' सदा बडभागी ते जे श्रीवल्लभ गुन गाये ॥ ४ ॥ ❀ २२३ ❀ राग सारंग ❀ पुत्र भयो श्रीवल्लभ के गृह आंगन बजत बधाई । भक्तन के हितकारन प्रगटे श्रीविट्ठल सुखदाई ॥ १ ॥ कंचनथार लिये ब्रजसुंदरि घरघर ते सब आई । तिलक करत आरती उतारत पुनिपुनि लेत बलाई ॥ २ ॥ सहज तिलक मृग मद को दिखियत दृग अंबुजन अघाई । गूढभाव अंतरको जानत रही सकल मुसिकाई ॥ ३ ॥ कहिये कहा कहत नहिं आवे सोभा की अधिकाई । 'श्रीविट्ठल गिरिधर' पूरननिधि भाग्यन दई है दिखाई ॥४॥ ❀ २२४ ❀ ❀ भोगसरे पलना ❀ ढाढी ❀ राग आसावरी ❀ श्रीबल्लभलाल पालने झूले मात इलंमा झुलावे हो । रतनजटित कंचन पलना पर झूमक मोती सुहावेहो ॥ १ ॥ झालर गजमोतिन की राजत दच्छिनचीर उढावेहो । झोटन घुघरू घमकि रहत है झुंझुना झमकि मिलाबे हो ॥ २ ॥ चुचुकारत चुटकिये बजावत चुंबन दे हुलरावे हो । बिलकि २ हुलसत मन ही मन बाललीला रस भावे हो ॥ ३ ॥ कबहु उरोजपयपान करावत फिरि पलना पोढावे हो । पीठ उठाय मैया सन्मुख व्है आपुन रीझि रिझाबे हो ॥ ४ ॥ महाभाग है मात तात दोउ आपुनपों बिसराबे हो । बल्लभदास आस सब पूरी श्रीबल्लभ दरसावे हो ॥ ५ ॥ ❀ २२५ ❀ ❀ राग आसाबरी ❀ अक्काजू एसो सुत जायो सबहिन के मन भायो हो । श्रीमद्वल्लभ अतिआनंदित दान देत मनभायो हो ॥ १ ॥ द्वारे बंदनवार बंधाई मोतिन चोक पुरायो हो । वाजत ताल मृदंग झांझ अरु बीना नाद सुहायो हो ॥ २ ॥ विप्र सबेमिलि करत बेदधुनि लागत परम सुहायो हो । सुभघरी लग्न नक्षत्र सोधके श्रीविट्ठल नाम धरायो हो ॥ ३ ॥ बंदीजन और भिक्षुक सुनि सुनि गृह गृह ते उठि धाये हो । कीरति यस बोलत सब मूरति दिन दिन बढत सवायो हो ॥ ४ ॥ सुक मुनि नारदादि ब्रह्मादिक

जाको पार न पायो हो । सो श्रीमद्वल्लभ अक्काजू अपनी गोद खिलायो हो ॥ ५ ॥ श्रीमुख सरदचंद्रमा निर्मल लागत परम सुहायो हो । 'श्रीगिरिवरधर' हरखि निरखि के महा परमसुख पायो हो ॥ ६ ॥ ❀ २२६ ❀ ❀ राग धनाश्री ❀ तिहारो ढाढी श्रीलछमनराज । तुमारे पुत्र भये पुरुषोत्तम सुफल कियो मेरो काज ॥ १ ॥ तुमारे पितर भये जे पहले महापुरुष अवतार । तिलंगतिलक द्विज यज्ञनारायन किये यज्ञ अपार ॥ २ ॥ तिनके पुत्र भये गंगाधर किये यज्ञ अपार । तिनके गनपति सोमयज्ञ कर यह बड़ोजु सुहाग ॥ ३ ॥ तिनके श्रीवल्लभ अग्निहोत्री तुवपितु अतिही कृपाल । तुम्हारे पुत्र आचार्य श्रीवल्लभ वदन अनल प्रतिपाल ॥ ४ ॥ दैवीजीव उधारन कारन मायावाद निवार । श्रीभागवत स्वरूप बतायो सेवा पुष्टि प्रकार ॥ ५ ॥ इनके पुत्र होंइंगे दोउ हलधर नंदकुमार । गोपीनाथ विट्ठल पुरुषोत्तम तिहूंलोक उजियार ॥ ३ ॥ श्रीविट्ठल के सात होंयगे सुत ते सबै समान । सुतके सुत नाती पंती सब दीपत दीप समान ॥ ७ ॥ नरनारी जे सरन आइहैं ते सब करें सनाथ । नाम सुनाय भक्ति देके पकडे दृढकरि हाथ ॥ ८ ॥ तुव सुत के गुन रूप बखानों सुनत न आवे पार । गोकुलपति मुख निरखि निरखि वपु आकृति सीतल सार ॥९॥ होंतो ढाढी तिहारे घरको तुवसुत करों प्रनाम । पर्यो रहूं हरिवदन विलोकूं मांगूं न भिक्षा आन ॥ १० ॥ तुमहो परम उदार दानेस्वर जो माग्यो सो दीजे । ढाढिन मेरी इनकी चेरी मोहि तेरो करि लीजे ॥ ११ ॥ निसदिन भक्ति करों तो सुत की इतनी पुजवो आस । जनम-जनम लीला नित देखों बलि बलि 'माधोदास' ॥ १२ ॥ ❀ २२७ ❀ राग धनाश्री ❀ हों जाचक श्रीवल्लभ तिहारो जाचन तुमकों आयो हो । महा उदार देत भक्तन कों अपुअपुनो मन भायो हो ॥ १ ॥ हेम ग्राम भूषन सुख सम्पति सो मोहि मन न सुहायो हो । पर्यो रहूं नित जूठिन पाऊँ यह मेरो चितलायो हो ॥२॥ प्रफुलित

भयो निरन्तर द्विजवर ब्रह्मवाद तरु छायो हो। गाऊँ गुन लावण्यसिन्धु के 'दास' चरनरज पायो हो ॥३॥ ❀ २२७ ❀ सेन भोग आये ❀ राग कल्यान ❀ गये पाप ताप दूर देखत दरस परस चरन। हों तो एक पतित तिहारो पतितपावन बिरद हो तुम जगत के उद्धरन ॥ १ ॥ स्तुति सेस करि न सके सकल कला गुन निधान जानत हों तिहारी सब बिधि अनुसरन। 'छीतस्वामी' गिरिवरधर तेसेई श्रीबिट्ठलेस हों तो तिहारी जनमजनम सरन ॥ ॥२॥ ❀ २२९ ❀ राग ईमन ❀ श्रीवल्लभ नन्दन चंद देखत तनके त्रिबिध ताप जात। मिट गये सब दुरित दूर भक्तन की जीवन-मूरि भामिनी आनंद कन्द ॥ १ ॥ श्रीबिट्ठलनाथ बिलोकि बढ्यो सुख-सिन्धु की उठत तरंग मिट गये दुख द्वन्द। 'छीतस्वामी' गिरिवरधर बिट्ठलेस के गुन गावत आनंद सुखछंद ॥ २ ॥ ❀ २३० ❀ राग ईमन ❀ श्रीविट्ठलनाथ चंद ऊग्यो जग में भक्त चांदनी छाय रही। अंधकार जाके मनके मिट गये सो पिय के मन मांझ लही ॥ १ ॥ निसदिन नाम जपों या मुख ते श्रीवल्लभ विट्ठलेस कही। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल अब जो भई एसी कबहू न भई ॥ २ ॥ ❀ २३१ ❀ राग कानरा ❀ श्रीलछमणवर ब्रह्मधाम काम मूरति पुरुषोत्तम प्रगट भये श्रीवल्लभ प्रभु लीला अवतारी। रसमय आनंदरूप अनुपम गुन ग्रन्थभरे वचन सुधा सींचत नित निजजन सुखकारी ॥१॥ भजन पंथ कमल भानु अमल भाव दान करत व्रजपति रसरास केलि बिहरत 'मनुहारी'। नवललाल पिय 'गिरिधर' दृढकरि कर गहत ताहि जे जन इन सरन आय चरन छत्रधारी ॥ २ ॥ ❀ २३२ ❀ राग कानरा ❀ प्रभु श्रीवल्लभगृह जनम लियो। हरिलीला रससिंधु सुधानिधि वचन किरन सब ताप गयो ॥ १ ॥ मायावाद तिमिर जीवन को प्रगट नास पायो उर अंतर। फूली भक्त कुमुदिनी चहुंदिस सोभित भये भक्तमानस सर ॥ २ ॥ मुदित भये कमल मुख तिनके वृथावाद नाहिंन गिनत बल। 'गिरिधर' अन्य भजन

तारागन मंद भये भागे गति चंचल ॥ ३॥ ❀२३३❀आश्विन सुदी १ ❀मंगलादर्शन❀ ❀राग भैरो❀देखो देखोरी नागर नट नृत्यत कालिंदी-तट गोपिन के मध्य राजे मुकुट लटक। काछनी किंकिनी कटि पीतांबर की चटक कुंडल किरन रविरथ की अटक॥१॥ ततथेइ ताताथेइ सब्द उघटत उरपतिरप लेत पगकी पटक। रासमे श्रीराधेराधे मुरली मे येही रटत 'नंददास'गावे तहां निपट निकट॥२॥❀२३४❀ ❀ शृंगार समय ❀ अभ्यंग ❀ राग देवगंधार ❀ कर मोदक माखन मिसरी ले कुंवर के संग डोलत नंदरानी । मिस करि पकरि न्हवायो चाहे बोलत मधुरी बानी ॥ १ ॥ कनक पटा आंगन में राख्यो सीत उष्ण धरयो पानी । कनक कटोरा सोंधो उबटनो चंदन कांगसि आनी ॥ २ ॥ यों लाइ मज्जन हित जननी चित चतुराइ ठानी । मनमे मतो करत उठिभाजे दुखित केस उरझानी ॥ ३ ॥ निरखि नैनभरि देखत रानी सोभा कहत बानी । गात सचिक्कन यों राजत है ज्यों घन तडित लपटानी ॥ ४ ॥ आओ मनमोहन मेरे ढिंग बात कहों एक छानी । खिलोना एक तात जो लाये बल अजहू नहिं जानी ॥ ५ ॥ राजकुंवर अधन्हातो भाज्यो ताकी कहूं कहानी । बेनी न बाढी रहीजु तनकसी दुलहिन देख हसानी ॥ ६ ॥ बैठे आय न्हाय पट पहरे आनंद मनमें आनी । 'विष्णुदास' 'गिरिधरन सयाने मात कही सोइ मानी ॥७॥ ❀२३५❀ राग देवगंधार ❀कहा ओछी ०हे जैहे जात । सुन जसुमति तुम बडरिन आगे जो छिन एक बितात ॥ १ ॥ अति नीको सतभाव भलाइ जो या तन ते कीजे। माय बाप को नाम लिवावत लोकमांझ यस लीजै ॥२॥ सास ननद और पार परोसिन सबहू भांति कह्यो । तोहू मोहि तिहारे घर बिन नाहिन परत रह्यो ॥ ३ ॥ बोलि लेहो संकोच करो जिनि जब तुम सुतहि न्हवाओ। 'श्रीविट्ठलगिरिधरन' लाल कों मोहि पे उबटाओ॥४॥❀२३६ ❀ राग बिलावल ❀ चलहु राधिके सुजान तेरे हित गुन निधान रास रच्यो कुंवर कान्ह तट कलिंदनंदिनी। नर्तत युवती समूह रास रंग अति कुतूहल

बाजत रस मुरलिका आनन्दनी ॥१॥ बंसीबट निकट जहाँ परम रमन भूमि तहां सकल सुखद बहत मलय वायु मंदिनी। जाती ईषद विकास कानन अतिसय सुवास राका निस सरद मास बिमल चांदनी॥२॥ 'कुंभनदास' प्रभु निहार लोचन भरि घोखनारी नख सिख सौन्दर्य सीम दुखनिकन्दनी। विलसो भुज ग्रीव मेलि भामिनी सुख सिंधु झेल गोवर्धनधरन केलि जगतवंदिनी ॥३॥ ❀ २३७ ❀ राग विलावल ❀ स्यामाजू आज नागरी किसोर भामती विचित्र जोर कहा कहों अङ्ग-अङ्ग परम माधुरी। करत केलि कण्ठ मेलि बाहु दण्ड गण्ड मण्डल परस सरस लास्य हास्य रासमण्डली जुरी ॥१॥ स्याम सुन्दरी विहार बांसुरी मृदङ्ग तार सकलघोष नूपुरादि किंकिनी चुरी। देखत 'हरिवंस' आली नृत्यत सुगंध ताल वार फेरि देत प्रान देह सुन्दरी ॥२॥ ❀ २३८ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ नाचत है नागर बलवीर। नागर नवल नागरी नागर नागर नवरंग स्याम सरीर ॥१॥ नागर सरस सघन वृन्दावन नागर तरनितनूजा तीर। नागर मधुप कोकिला मृग गन नागर मन्द सुगन्ध समीर ॥२॥ नागर चरन कमल सुर सेवत नागर नूपुर मुख मंजीर। नखसिखलों नागर नन्दनन्दन नागर भूखन नागर चीर ॥३॥ 'कृष्णदास' स्वामी नट नागर नागर सुडटी गोपिका भीर। नागर लाल गोवर्धनधारी नागर जस गावत मुनिधीर ॥४॥ ❀ २३९ ❀ शृङ्गार समय ❀ राग बिलावल ❀ प्रथम* विलास कियो स्यामाजू कीनो विपिन विहार। उनके विधिकी सोभा बरनो कहत न आवे पार ॥१॥ वाके यूथ की गनना नाहीं निर्गुन भक्त कहावे। ताकी संख्या कहत न आवे सेस हू पार न पावे॥२॥ घोष घोष प्रति गलिन गलिन प्रति रंग रंग अम्बर साजे। कियो सिंगार नखसिख अङ्ग युवती ज्यों करिनी मधि राजे ॥३॥ बहु पूजा ले चली वृन्दावन पानफूल पकवान। ताके यूथ मुख्य चंद्रावली चन्द्रकला सी वान ॥४॥ पहोंची जाय निकुंज

---

* शृङ्गार समय आज सूं नवमी तक नित्य एक विलास गावनों—

भवन मे दरसी वृन्दा देवी । ताके पद वन्दन करि माग्यो स्यामसुंदर वर होवी ॥५॥ तिहिछिन प्रभुजी आप पधारे कोटिक मन्मथ मोहे । अंग-अंग प्रति रूप-रूप प्रति उपमा रवि ससि कोहे ॥६॥ द्वै जुग जाम स्याम स्यामा सङ्ग केलि विविध रंग कीने । उठत तरंग रंग रस उच्छलित 'दास रसिक' रस पीने ॥ ७ ॥ ❀ २४० ❀ राग बिलावल ❀ द्वितीय विलास कियो स्यामाजू खेल समस्या कीनी । ताकी मुख्य सखी ललिताजू आनन्द महा रस भीनी ॥१॥ चली संकेत बिहार करन बलि पूजा साजि संपूरन । बहु उपहार भोग पायस ले बांह हलावत मूरन ॥२॥ मन्दिर देवी गान करत यस आय मिले गिरिधारी । मनको भायो भयो सबन को काम वेदना टारी ॥३॥ स्यामा को सिंगार स्याम को ललिता नीवी खोली । लीला निरखत 'दास रसिक' जन श्रीमुख स्यामा बोली ॥४॥ ❀२४१❀ राग बिलावल ❀ तृतीय विलास कियो स्यामा जू प्रवीन । खेलन को उछाह सखी एकत्र कीन ॥१॥ तिनमे मुख्य सखी विसाखा जू ऐन । चली निकुंज महल में कोकिला ज्यों बैन ॥२॥ भोग धरि संभारि बासोंधी सनी । कुसुम रंग अनेक गुही कामिनी ॥३॥ गानस्वर कियो बनदेवी बिहार । नवत्रिया को वेष कोटि काम बार ॥४॥ ढिंग आसन कराय प्यारी को बैठाय । दोऊ एकत्र कीने निरखत लेत बलाय ॥५॥ यह लीला को ध्यान मम हृदय ठहराय । देखत सुरनर मुनि भूले 'रसिक' बलि बलि जाय ॥६॥ ❀ २४२ ❀ राग बिलावल ❀ चोथो बिलास कियो स्यामाजू परासोली बन मांहि । ताके वृन्द लता द्रुम बेली तनपुलकित आनन्द न समाई ॥१॥ चन्द्रभागा मुख्य यूथावलि अपनी सखी सब नोति बुलाई । खरमण्डा जलेबी लडुवा प्रत्येक अङ्ग को भाव जनाई ॥२॥ साज कियो पूजन देवी को बहु उपहार भेंट ले आई । खेलन चली बनी तिहि सोभा ज्यों घन मे चपला चपलाई । पहोंची जाय दरस देवी तब ह्वै गये स्याम किसोर कन्हाई । मनको चीत्यो भयो लालन को

हास बिलास करत किलकाई ॥४॥ स्यामा स्याम भुजन भरि भेटे तृन तोरत और लेत बलाई । कहीं न जाय सोभा ता सुखकी कुंजन दुरे 'रसिक' निधि पाई ॥५॥ ❀२४३❀ राग बिलावल ❀ पांचमो विलास कियो स्यामा जू कदलीवन संकेत। ताकी सखी मुख्य संजावली पिया मिलन के हेत ॥१॥ चली रली उमगी युवती सब पूजन देवी निकसी। धूप-दीप भोग सञ्जावलि कमल कलीसी विकसी ॥२॥ आनंदभरि नाचत गावत बहु रस में रस उपजाती। मण्डल में हरि ततछिन आये हिलमिल भये एकपांती ॥ ३ ॥ द्वै युग जाम स्याम स्यामा संग भामिनी यह रस पीनो। उनकी कृपादृष्टि अवलोकत 'रसिकदास' रस भीनो ॥४॥ ❀ २४४ ❀ राग बिलावल ❀ छटो विलास कियो स्यामा जू। गोधनवन कों चली भामा जू। पहेरे रंग रंग सारी। हाथन लिये पूजन की थारी ॥ १ ॥ ताकी मुख्य सहचरी राई। खेलन कों बहुत सुघराई ॥ छन्द—चली बन-बन विहसि सुन्दरी हार कङ्कन जगमगे। आय मन्दिर पूज देवी भोग सिखरन सगमगे ॥ ता समय प्रभु आप पधारे कोटि मन्मथ मोहिहीं। निरखि सखियन कमलमुख मानों निधन धन ज्यों सोहहीं ॥ खेल को आरम्भ कीनो राधा-माधो बिच किये ॥ वाकी परछांई परी तब 'रसिक' चरनन चित दिये ॥ २॥ ❀२४५❀ राग बिलावल ❀ सातमो विलास कियो स्यामाजू गहवरवन में मतो जु कीन। ताकी मुख्य कृष्णावती सहचरी लघु लाघव में अतिहि प्रवीन ॥ १ ॥ बनदेवी है गुञ्जा-कुंजा पहोपन गुही सुमाल। चंद्रावली प्रमुदित विहसत मुख ज्यों मुनिया लाल ॥ २ ॥ रच्यो खेल देवी ढिंग युवती कोक कला मनोज। अति आवेस भये अवलोकत प्रगटे मदन सरोज ॥ ३ ॥ कोऊ भुज धरि कर चरन कोऊ अङ्गो-अङ्ग मिलाय। कुंवर किसोर किसोरी रसिकमनि 'दासरसिक' दुलराय ॥ ४ ॥ ❀ २४६ ❀ राग बिलावल ❀ आठमो विलास कियो स्यामाजू सांतनकुण्ड प्रवेस। उनकी मुख्य भामा सारंगी खेलत जनित आवेस ॥ १ ॥ सूरज

मंदिर पूजन करि मेवा सामग्री भोग धरी। आनंद भरी चली ब्रज-ललना क्रीडन वन कों उमगि भरी ॥२॥ भद्रवन गमन कियो वनदेवी पूजन चन्दन बन्दन लीने। भोग स्वच्छ फेनी ऐनी सब अम्बर अभरन चीने ॥ ३ ॥ गावत आवत भावत चितवत नन्दलाल के रस माती। कृष्णकला सुन्दर मंदिर में युवती भई सुहाती ॥ ४ ॥ देखि स्वरूप ठगी ललना ते चकचौंधी सी लाई। अचवत दृग न अघात 'दास रसिक' बिहारिन राई ॥ ५ ॥

❀२४७❀ राग बिलावल ❀ नोमो विलास कियो जु लडैती नवधाभक्त बुलाये। अप अपने सिंगार सबै सजि बहु उपहार लिबाये ॥ १ ॥ सब स्यामा जुर चलीं रंगभीनी ज्यों करिनी घनघोरे। ज्यों सरिता जलकूल छांडि के उठत प्रवाह हिलोरे ॥ २ ॥ बंसीवट संकेत सघनवन काम-कला दरसाये। मोहन मूरति बेनु मुकुटमनि कुण्डल तिमिर नसाये ॥ ३ ॥ काछिनी कटि तट पीत पिछोरी पग नूपुर झनकार करे। कङ्कन वलय हार मनि मुक्ता तीन ग्राम स्वर भेद भरे ॥ ४ ॥ सब सखियन अवलोकि स्याम छबि अपनो सर्वसु वारे। कुञ्ज द्वार बैठे पिय-प्यारी अद्भुत रूप निहारे ॥ ५ ॥ पूवा खोवा मिठाई मेवा नवधा भोजन आने। तहां सत्कार कियो पुरुषोत्तम अपनो जन्म-फल माने ॥ ६ ॥ भोग सराय अचवाय बीरा धर नीरांजन उतारे। जय-जय सब्द होत तिहुंपुर में गुरुजन लाज निवारे ॥ ७ ॥ सघन कुञ्ज रस-पुञ्ज अलिगुञ्जत कुसुमन सेज सँवारे। रति-रन सुभट जुटे पियप्यारी कामवेदना टारे ॥ ८ ॥ नवरस रास विलास हुलास ब्रजयुवतिन मिल कीने। श्रीवल्लभ चरन कमल कृपा ते 'रसिकदास' रस पीने ॥ ६ ॥

❀ २४८ ❀ ❀ राजभोग दर्शन में❀ राग सारंग ❀ बलिहारी रास बिहारिन की। मरकत मनि कञ्चन-मनि-माला ग्रथन नन्दकुमार की ॥ १ ॥ सारंग राग अलापत गावत बिच मिलवतयति ताल की। नाचत गावत बेन बजावत लेत उदार उगाल की ॥ २ ॥ यमुना सरस मल्लिका मुकुलित त्रिविध समीर सुढ़ार की।

'कृष्णदास' बलि गिरधर नव रंग सुरतनाथ सुकुमार की ॥३॥ ❀२४६❀ ❀ राग सारंग ❀ नाचत रासमे लालबिहारी नचवत है ब्रज की सब नारी । ताथेई ताथेई ततता थेई थेई थुंगनि थुंगनि तट कत तारी ॥ १ ॥ श्रीराधा एक तरजत मिलवत लेत अलाप सप्त स्वर भारी । 'कृष्णदास' नटनाट्य रसिक वर कुसल केलि श्रीगोवर्धनधारी ॥२॥ ❀ २५० ❀ भोग के दर्शन ❀ ❀ राग नट ❀ नागरी नटनारायन गायो । तान मान बंधान सप्त-स्वर रागसों राग मिलायो ॥ १ ॥ चरन घूंघरू जंत्र भुजन पर नीको झनक जमायो । ततथेइ ततथेइ लेत गति में गति पति ब्रजराज रिझायो ॥२॥ सकल त्रियन मे सहज चातुरी अंग सुधंग दिखायो । 'व्यास' स्वामिनी धनि-धनि राधा रास में रंग जमायो ॥३॥ ❀ २५१ ❀ संध्या समय ❀ राग गोरी ❀ गोपवधू मंडल मधि नायक गोपाललाल रुचिरानन बिंबाधर मुरलिका धरे । अद्भुत नटवर विचित्र वेस टेक अति सुदेस कनक कपिस काछ्र सिखी सिखंड सिखरे ॥ १ ॥ कुकुझां झनकत थुंग थुंग थुंग तकिट धिकिट धिधिकिटि ततथेइ उघटत रास रस भरे । जय जय गिरिराजधरन कोटि मदन मूरति पर 'हरिजीवन' बलिबलि ब्रजपुरंदरे॥३॥❀२५२❀ सेन के दर्शन ❀ राग ईमन ❀ गिड्गिड् थुंग थुंग तकिट थुंगन एक चरन कर सों भले भले हो मृदंग बजावे । दूसरे कर चरन सों कठताल झंझंझं झपताल में अवघर गति उपजावे ॥ १ ॥ कंठ सरस सुरहि गावे मोहन मधुर तान लावे सकल कला पूरन वृषभाननंदिनी पिय मन भावे । 'गोविन्द' प्रभु पिय रीझि रहे मुसिकाइ अधरदसन धरिके रहसि उरसि लपटावे ॥ २ ॥ ❀ २५३ ❀ मान पोढवे में राग केदार। ❀ राधिका आज आनंद मे डोले । सांवरे चंद गोविन्द के रसभरी दूसरी कोकिला मधुर सुर बोले ॥ १ ॥ पहरि तन नीलपट कनक हारावली हाथ ले आरसी रूप कों तोले । कहे 'श्रीभट' ब्रजनारि नागरी बनी कृष्ण के सील की ग्रंथिका खोले ॥ २ ॥ ❀ २५४ ❀ राग बिहाग ❀ दोऊ, मिलि

राजे सबै देव दुंदुभी अभै एकते एक रन करि दिखाऊं ॥ ११ ॥ जब चढो रावन सुन्यो सीस तब सिव धुन्यो उमंगि रन रंग रघुवीर आयो । रामसर लागि मनो अगिनी गिरि परजली छांडि छिनु सीस नभ भानु छायो ॥१२॥ रुंड भुकरुंड धुक धरहीं परत धरनि पर रुधिर सरिता समर पारपायो । मारि दसकंध नृप बंधु किय 'सूर' प्रभु राजीवलोचन गहि सीय लायो ॥१३॥❀२५❀ ❀ संध्या समय ❀ राग मारू ❀ बनचर कौन देस ते आयो । कहां है राम कहां है लछमन कहां ते मुद्रिका लायो ॥१॥ हों हनुमान रामजू को सेवक तुम सुधि लैन पठायो । रावण मारि ले जाऊं तुमकों राम आज्ञा नहिं पायो ॥ तुम जिनि जिय डरपो मेरी माता जोर राम दल धायो । 'सूरदास' रावण कुल खोयो सोवत सिंह जगायो ॥३॥ ❀ २५७ ❀ दूसरे दिन ❀ ❀ राग मारू ❀ अरे बालि के बाल एतो बोलि जिनि रामबल कौन मोते बली जगत मांही । कोप करि कीस सों कहत दससीस यों जीवत यहाँ ते गयो चाहत नाहीं ॥१॥ विधिनेजु मोहि वर दियो सिव सुबस मैं कियो बिष्णु मोते डरत कहुँ लुकानो । इन्द्र नित पद पांय परत मीच थरथर करत और को रंक ताहि दृष्टि आनो ॥२॥ अरे मति हीन अति दीन राकस अधम राम अभिरामतें मनुष जाने । दुष्ट खल दवदहन विप्रन दण्डवत करन प्रगट सोइ देव ताहि वेद गाने ॥३॥ हस्यो हहराय घहराय घनबीज लों भली करी बंदर तें कहि जनायो । जान कहा देहुँ अब भखु तो सहित सब गुप्त बैरी सो मैं प्रगट पायो ॥४॥ कितकु बकबाद विन काज नहिं लाज तोहि सूर मन क्रूर तू निकट भूल्यो । जोंलों निरखे नहीं सिंह रघुबीर क्रूर कूकरा लों कुटी मांहि फूल्यो ॥५॥ क्यों धकत व्याध सुनि बचन पुनि परजल्यो जल मिल्यो तेल जैसे अग्नि नायो । जाहुरे जाहु कपि अति बचन ललपि तोहि कहा हनो तू दूत आयो ॥ ६ ॥ कितोक बल तोहिं तू हन सके मोहि सठ जिन न रघुनाथ कों सीस नायो । अरे मत मंद लोचन असीत तुव बाघ को बाल

कहूँ स्याल खायो ॥७॥ सेस ऊपर करों सुरलोक तरहरों जो नेक निज भुजाबल संभारों । गूलर सो फोरि ब्रह्मांड डारों कहां तोसे कपि फुनग को कहा भारों ॥ ८ ॥ 'नंद' रघुचंद वर विहंसि अंगद कह्यो सुनहु मतिमंद परतिया हारी । करले बकवाद घरी पहर पातक मूल सूल पर चोर जैसे देत गारी ॥ ९ ॥ ❀ २५८ ❀

दशहरा अन्नकूट की बधाई (आश्विन सुदी १०)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग भैरव ❀ प्यारी भुज ग्रीवा मेलि नृत्यत पिय सुजान । मुदित परस्पर लेत गति में गति गुनरास राधे गिरिधरन गुननिधान ॥ १ ॥ सरस मुरलीधुन मिले मधुर सुर रासरंग भीने गावे अवघर तान बंधान । 'चत्रुभुज' प्रभु स्यामास्याम की नटनि देखि मोहे खग मृग वन थकित व्योम विमान ॥ २ ॥ ❀ २५९ ❀ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ उलटो झगा उलटी है सूथन कहत बन्यो नीकोरी मैया । पांय पनैया नंदबाबा की सीस पाग पहली बांध बूझत बलि मो मे को सुंदर है भैया ॥ १ ॥ कटि फेटा और बडी कटारी थकि ढरकि ठोडी तर आय कहूं लपटानो घैया । 'कृष्णजीवन' हरि प्रभु कल्यान की ये छबि निरखत नंदजसोदा भये फिरत गाडी कैसे पैया ॥२॥ ❀ २६० ❀ ग्वाल बोले ❀ राग बिलावल ❀ गोकुल को कुलदेवता प्यारो गिरिधरलाल । कमलनैन घन सांवरो वपु बाहुविसाल ॥१॥ बेग करो मेरे कहे पकवान रसाल । बलि मघवा बल लेत है करकर घृतगाल ॥२॥ इनके दिये बाढी है गैया बछ बाल । संग मिलि भोजन करत है जैसे पसुपाल ॥३॥ गिरि गोवर्धन सेविये जीवन गोपाल । 'सूर' सदा डरपत रहे जाते यम काल ॥४॥ ❀ २६१ ❀ ❀ राग बिलावल ❀ नंदादिक ब्रज मिल बैठे है कछू करत है मन्त्र विचार । इन्द्र महोत्सव को दिन आयो मंगवाये नाना उपहार ॥१॥ स्याम सुन्दर हंसि यों जु कहत है तुम काहि भजत हो तात । कोन यज्ञ यह कौन देवता मोसों कहो किन बात ॥२॥ बरस बरस प्रति नेम सों हम देत सक्र बलिदान ।

घन बरसे गौ तृन चरें उपजे अधिक धन धान ॥ ३ ॥ श्रीपति श्रीमुख योंजु कहत हैं व्रजबासिन की औरे रीति । मघवा को जु कहा है जो तुम ताहि डरत भयभीति ॥ ४ ॥ कर्म धर्म है श्रीपुरुषोत्तम गोवर्धनगिरिराज । सुरभी वत्स सब तृनचरे इन ग्वालन के हित काज ॥ ५ ॥ तुम जो कछू कह्यो हो हम सों सब गोकुल तुमारे संग । हम पूजाविधि जानत नाहीं और सकल सुख अंग ॥ ६ ॥ तुम पूजो परवत कों प्रेम सों अरपो सबमिलि ग्वाल । रूप धरे बलि खायगो वपु सुंदर बाहु विसाल ॥ ७ ॥ खटरस भोग साकपाकादिक पूवा पायस पकवान । मांग मांग अनुसान कियो चढि गोत्रसिखर भगवान ॥ ८ ॥ सुरपति भजते जन्म गयो है हम कबहू नहिं देख्यो रूप । तात्काल फल सिद्ध भयो हम पायो इष्ट अनूप ॥ ९ ॥ सक्र सहस्र मुख बिलख्यो बहुत कलान कर काछ । 'विष्णुदास' प्रभु सों हट कियो अर्पी न अंजली छाछ ॥ १० ॥ ❀ २६२ ❀ राग विलावल ❀ सात बरस को सांवरो बोले तुतरात । हंसिहंसि कान्ह कहे सुनो मेरी एक बात ॥ १ ॥ इन्द्र न पूजा कीजिये पूजो गिरि तात । तुम देखत भोजन करे पकवान और भात ॥ २ ॥ यह मतो निरधारि के गोप गृहकों जात । मृदुबानी गिरिधरन की सुनि 'सूर' सिहात ॥ ३ ॥ ❀ २६३ ❀ राग विलावल ❀ बार-बार हरि सिखवन लागे बोलत अमृत बानी । सुन हो एक उपदेस हमारो चार पदारथ दानी ॥ १ ॥ मेरो कह्यो बेग अब कीजे दूधभात घृत सानी । गोवर्धन की पूजा कीजे गोधन के सुखदानी ॥ २ ॥ यह परतीत नंदजूकों आइ कान कही सोइ मानी । 'परमानंद' इन्द्र मान भंग कर झूटो कीनो पानी ॥ ३ ॥ ❀ २६४ ❀ राजभोग आये ❀ राग विलावल ❀ गोद बैठ गोपाल कहत व्रजराज सों । अहो तात एक बात श्रवन दे सुनो जु मेरी । भवन मांझ हो गयो धरी जहां सोंज घनेरी ॥ मैं हंसि माग्यो माय पे भोजन देरीमोय । कर लकुटी ले यों कह्यो हो यह क्यों देहों तोय ॥ १ ॥ क्षुधित जानके नेक रोहिनी

निकट बुलायो। दूध प्याय चुचकार सीख दे कंठ लगायो॥ यह बलि भुक्ते देवता कह्यो हरे लगि कान। ताते रचिपचि करत हैहो साक-पाक पकवान॥२॥ यह निश्चय करि कहो कौन सो देव तुम्हारो। जो इतनी बलि खाय काज कहा करे हमारो॥ कहा देव को नाम है कौन लोक को नाथ। इकलो ही भोजन करे या ले अपनो गन साथ॥ ३॥ सुनो स्याम चितलाय देव की कहूं कहानी। आगम निगम पुरान कहे ऋषिवर मुनि ज्ञानी॥ सब सुखनिधि सुरलोक है कहियत ताको ईस। सेवत हैं सब देवता हो जाहि कोटि तेतीस॥४॥ जाके अनुचर मेघ बरसि जल धरनी पोखै। अन्नादिक फल-फूल निपज प्रजा संतोखै॥ बहु तृन उपजे पसुन कों भरे सरोवर तोय। देव दिवारी पूजिये तो सब ब्रज अति सुख होय॥ ५॥ एक बात हों कहों बाबा जो साँची मानों। ऐसे अनुचर कोटि-कोटि कहि कहा बखानों। अश्वमेध सत ते लहे इन्द्रासन को भोग। ब्रजरज कन पावे नहीं हो कोटि यज्ञ तप योग॥६॥ सो प्रभु अबही चलो तुमे हों निकट बताउँ। मन भावे तब बोलि आपने संग खिलाउँ॥ गोवर्धन की तरेटी हम बच्छ चरावन जांय। अखिल लोक के नाथ सों हो छाक बांटि हम खाँय॥७॥ ब्रह्मा सिब मुनि रटे तनक पावें न बसेरो। काटे विघ्न अनेक सदा ब्रज बासिन केरो॥ वेद उपनिषद मे कह्यो सो गोवर्धनराय। बडरे बैठ बिचार मतो करि गोवर्धन पूजो आय॥ ८॥ भये नन्द मन मुदित बड़े सब गोप बुलाये। कान्ह कहे सोइ करो भये सबहिन मन भाये॥ सकट पूतना आदि दे डारे विघ्न नसाय। गिरि प्रताप चिरकाल ते हो थिर ब्रजवास बसाय॥ ९॥ हरखि नन्द उपनंद सकल ब्रज दई दुहाई। सुरपति पूजा मेटि राज गोवर्धन राई॥ आदि लोक बैकुण्ठ लों ब्रज पर पूरन सोय। ब्रजवासिन हित कारने हो आये हरि गिरि होय॥ १०॥ सुनि ब्रजबासी सकल हरखि मन करी बधाई। कहा करेगो इन्द्र हमारे कृष्ण सहाई॥ गोपी

गोसुत गाय ले और बालक संग लाय। गोप चले उत्साह सों हो पूजन कों गिरिराय ॥ ११ ॥ अगनित सकट जुराय साज पूजा की साजे। कान परी नहिं सुने चहूंधा बाजत बाजे ॥ ब्रज-नारिन के यूथ सों चली यसोदा माय। गोधन गाय मल्हावहीं हो उर आनंद न समाय ॥ १२ ॥ चले नंद उपनंद आदि ब्रजनंद अगाऊ। करत परस्पर ख्याल चले मोहन बलदाऊ॥ वृद्ध तरुन बारे सबै ब्रज घर रह्यो न कोय। अपनो कुलपति पूजिये हो महा महोत्सव होय ॥ १३ ॥ दीनो दरसन सैल दूर ते सीस नवायो। निकट आय परनाम करत अघ दूर नसायो ॥ दीप-दान दे नन्दजू रजनीमुख चहुंओर। गायन कान जगाय के हो बूझत नन्दकिसोर ॥ १४ ॥ आज कुहूकी राति चलो परिक्रमा कीजे। गिरि सन्मुख निस जागि भोर बलि पूजा दीजे ॥ चले हरखि गिरिराज कों सबै दाहिनो देहि। गोवर्धन गोपाल की हो सब गोप बलैया लेहि ॥ १५ ॥ मधि-अधिदैविक रत्न खचित गिरिराज बिराजे। दीपमालिका चहुंओर अद्भुत छबि छाजे ॥ सकल निसा आनन्द में रजनी गई विहाय। विधिवत पूजा कीजिये हो बलि उपहार मंगाय ॥ १६ ॥ गावत गीत पुनीत सकल ब्रजनारी सुहाये। अगनित बाजे विविध अखिल ब्रजराज बजाये ॥ गिरिवर प्रथम न्हवावहीं मानसीगङ्गा नीर। अगनित कलसा हेम के लै नावत धौरी चीर ॥ १७ ॥ पुनि चंदन उबटाय स्वच्छ जल गिरिहिं न्हवाये। अरगजा कुंकुम पहोंप चरचि पट पीत उढ़ाये ॥ धूप दीप बहु विधि कियो कुंडवारो धरि भोग। सुख समुद्र लहरनि बढ्यो हो इन ब्रजवासिन योग ॥ १८ ॥ पूजा को परसाद देत ग्वालन मन भाये। माथे टोरा बांधि पीठ थापे सरसाये। नंदराय आज्ञा दई आंन खिलाओ गाय। कान्ह तोक सों यों कह्यो हो धौरी पहिले खिलाय ॥ १९ ॥ कान्ह गहे पटपीत आन जब बोली धौरी। हूंकत लहैंडे पेलि बच्छ के सन्मुख दौरी ॥ छुवत बच्छ अकुलाय के डाढ़ मेलि

समुहाय । भली भली खेली कहै सब गोप स्याम की गाय ॥ २० ॥ खेली धूमर गांग बुलाई काजर कारी । औरैं अनगित झुण्ड सकल गोपन की न्यारी ॥ सुखपयोधि लहरिन बढ्यो रह्यो सकल ब्रज छाय । अन्नकूट विधिवत रच्यो नाना पाक बनाय ॥ २१ ॥ बहु विधि व्यंजन मधुर चरपरे खाटे खारे । बेसन के को गिने केइ सुकवनि के न्यारे ॥ तिन मधि पूरयो प्रेम सों नव ओदन को कोट । मध्य चक्र चित्रित धरयो हो गिरि ओदन की ओट ॥२२॥ बहुत भांति पकवान नाम ले कोन बखाने । गिनत न आवे पार परम रुचि धरे संधाने । बासोंधी मिसरी सनी मिलि मृगमद घनसार ॥ नाना-विधि मेवान के हो गिनत न आवे पार ॥२३॥ दधि सिखरन संयाव सेमई पायस प्यारी । बड़ा मगोडी बडी तिलबडी रोचक न्यारी ॥पापर अति कोमल धरे घृत नवनीत मंगाय । औट्यो दूध सद्य धौरी को मिसरी पनो छनाय ॥ २४ ॥ तुलसीदल दे नन्द पहोंप माला पहरावे । सौरभ चन्दन पीत सजल संखोदक नावे ॥ दुहुं कर जोरे दीन ह्वै ध्यान धरत ब्रजराज । प्रत्यत्त ह्वै भोजन करैं हो रूप धरे गिरिराज ॥२५॥ कहत गोप समझाय रूप गिरिराज निहारो । जाके एसो पूत सुफल ब्रजबास तिहारो ॥ मोर पखौवा सिर धरे उर राजत वनमाल । सब देखत भोजन करे हो मानों श्री गोपाल ॥ २६ ॥ यथा-सक्ति फल-पत्र-पाक ब्रजवासी लाये । प्रेम-भक्ति प्रतिपाल परम रुचि सों वे खाये । काहू अति संकोच ते सजि धरि राख्यो गेह । मांगि-मांगि सब पे लियो हो प्रगट जनायो नेह ॥२७॥ सीतल परम सुवास सुखद यमुनोदक लीनो । रह्यो जो सेष प्रसाद बांटि ब्रज-वासिन दीनों ॥ बीरी देत समार के आपुन नंदकुमार । आरोगत ब्रजराज सांवरो ब्रजजन लेत उगार ॥ २८ ॥ महा महोत्सव मान लियो गिरिराज हमारो । ब्रज-वासिन सिर छत्र सदा गोधन रखवारो । ब्रजरानी करि आरतो लागत गिरि के पांय । पटभूषन नोछावरि करि के ग्वालन देत बुलाय ॥ २९ ॥

नंदादिक ब्रज गोप सबै जुरि सन्मुख आये। नयन पानि और ग्रीव सीस गिरिचरन छुवाये। राम कृष्ण के सीस पे देव पानि परसाय। आज्ञा ले घरकों चले हो पद वंदन करवाय ॥३०॥ इन्द्र उठ्यो अकुलाय आज क्यों होत अवेरो। और बेर ब्रज जाइ लेहुँ बलि भोग सवेरो। ब्रज बलि की सुधि लेन कों दीने दूत पठाय। महा महोत्सव देख के कह्यो इंद्र सों जाय ॥३१॥ कोपि इन्द्र घन जोरि सबै ब्रजलोक पठाये। चहुँओर ते घेर घेर ब्रज बोरन आये। मूसलधार बरसन लग्यो ब्रज कांप्यो अकुलाय। कह्यो सबन ब्रजराज सों हा अब को होय सहाय ॥३२॥ व्याकुल लखि ब्रजवासि कान्ह गोवर्धन धारयो। वामपानि अंगुरीन एक नख अग्र उछारयो। गोप लकुटिया ले रहे टेकी चहुँधा आय। कोमल कर अतिभार ते हो मति इत उत डिगि जाय ॥३३॥ ले कटि ते कर बेनु धरयो अधरन गिरिधारी। सप्त रंध्र स्वर पूर घोर ऊँची दे भारी। परवत दियो उछारि के स्वर पे रह्यो ठहराय। गोपन को बल देखि के फिरि गिरि थाम्यो आय ॥३४॥ सात द्योस निस परी प्रबल अति जलकी धारे। गिरि की छाया सकल गोप गोधन तृन चारे। बूंद न काहू परस ही यह सुनि अतुल प्रताप। परमपुरुष वह जानि के इन्द्र बढ्यो संताप ॥३५॥ ले सुरभी ब्रज आय पांय हरि के सिर नायो। तुम देवन के देव कियो अपनो मैं पायो। अबलों मैं जान्यो नहीं ब्रज वृन्दावन रूप। कृपादृष्टि सों देखिये हो अखिल लोक के भूप ॥३६॥ गिरिधर धरनी कान्ह पानि सुरपति सिर धारयो। धेनुक्षीर अभिषेक मान अपराध निवारयो। स्वर्ग लोक को राज दे करसों थापी पीठ। अब ते यह ब्रत राखियो हो ब्रज पर अमृत दीठ ॥३७॥ इन्द्र पठायो गेह आप ब्रज माया फेरी। देव विमानन आय, बरखि' कुसुमन की ढेरी। सब कोऊ गोविन्द को श्रीमुख निरखत आय। देत दान बहु नंदजू हो उर आनंद न समाय ॥३८॥ धाय यसोमति माय लाल कों कंठ लगावे। वारि वारि जलपिवे

चूमकरि नैन छुवावे । सात बरस को सांवरो सात द्योस इक हाथ । गिरिधार्यो बल देव के हो सो प्रभु बैकुण्ठनाथ ॥३९॥ सब व्रजवासी लोग कहत व्रजराज दुहाई । जय जय सब्द उचार हमारो देव कन्हाई । दे असीस घर कों चले ग्वालगोप व्रजनारि । 'व्रजजन' गिरिधर रूप पे हो डार्यो सर्वसु वारि॥४०॥

❀२६५❀राजभोग दर्शन ❀राग सारंग❀ गोधन पूजो गोधन गावो । गोधन सेवक संतत हम गोधन ही कों माथो नावो ॥१॥ गोधन मात पिता गुरु गोधन गोधन देव जाहि नित ध्यावे । गोधन कामधेनु कल्पतरु गोधन पे मांगे सोइ पावे ॥२॥ गोधन खिरक खोर गिरि गहवर रखवारो घर बन जहां छावे ।'परमानंद' भावतो गोधन गोधन कों हम हू पुनि भावे ॥३॥

❀२६६❀ भोग के दर्शन ❀जवारा धरे तब ❀ राग नट ❀ आज दशहरा सुभ दिन नीको । गिरिधरलाल जवारे बांधत बन्यो है भाल कुमकुम को टीको ॥१॥ आरती करत देत नोछावरि चिर जीयो भावतो जीको । 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर सुख त्रिभुवन को लागत फीको ॥२॥

❀ २६७ ❀ संध्या भोग आये ❀ राग कान्हरा ❀ सीतापति सेवक तोहि देखन कों आयो । काके बल क्रोध ते रघुनाथ पठायो ॥१॥ जेते तुव सुभट सुर निकरसे रन लेखों । तेरे दसकंध अंध प्रानन बिन देखों ॥२॥ नखसिखलों मीनजाल जारों अङ्ग-अङ्ग । अजहू नहिं संक करत बांदर मति पंग ॥३॥ जोइ जोइ सोइ सोइ कहत परम पावन जान्यो । जैसे नर सन्निपात हीनबुध बखान्यो ॥४॥ काहे तन भस्म लाय भांड़ भेख करतो । वन पयान न करि जो लछमन घर हो तो ॥५॥ पाछे ते सीता हरी बँधी मरजाद न राखी । जोपे दसकंध अंध रेखा किन नाखी ॥६॥ अजहुँ ले जाहुँ सिय बीस भुज मानो रघुपति यह पेज करी भूतल धरि पान्यो ॥

'सूर' सकुच बंधन ते टारयो ॥१०॥ ❀ २६८ ॥ राग मारू ❀ कपि चल्यो सिय संबोधि के पुनि पायन तन लटकि के। रिपुको कटक विकट ताको चोथो अंस पटकि के ॥१॥ रथ सों रथ भटन सों भट चटपटीसी चटकि के। जारि के गढ़ लंक विकट रावन मुकुट झटकि के ॥२॥ कितेक छेल तंदुल से छरे लेले मूसल मटकि के। गिरि सों गज गैंदसी गहि डारयो भूमि पटकि के ॥३॥ सुरपुर आनन्द उमगि उरसों आंट अटकि के। 'नंददास' बहुरयो नटज्यों उलटि काढ्यो समुद्र सटकि के ॥४॥ ❀२६९ ❀ संध्या समय ❀ ❀ राग मारू ❀ जब कूद्यो हनुमान उदधि जानकी सुधि लेन कों। देखन दस माथ अपने नाथ कों सुख देन कों ॥१॥ जा गिरि पर दई कुलांट उछल्यो निकाई। सो गिरि दसजोजन धसि गयो धरनि मांहि ॥२॥ धरनी धसि गई पाताल भार परे जाग्यो। सेस हू को सीस जाय कमठ पीठ लाग्यो ॥३॥ अरुन नैन स्वेत दसन बड़ो पीन गात। उत्तर ते दच्छिन लों मानों मेरु उड्यो जात ॥४॥ जा प्रभु को नाम लेत भवजल तरिजात। सतजोजन सिंधु कूद्यो तो केतीइक बात ॥५॥ रामचन्द्र पद प्रताप जगत मे जसु जाको। 'नंददास' सुर नर मुनि कौतिक भूल्यो ताको ॥६॥ ❀ २७० ❀ सेनभोग आये ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ दूसरे कर बान न लेहों। सुनि सुग्रीव प्रतिज्ञा मेरी एकहि बान असुर सब हैहों ॥१॥ सिव पूजा बहुभांति करत है सोइ पूजा परतच्छ दिखै हों। दंत विडार पापफल वर्जित सिव माला कुल सहित चढ़ै हों ॥२॥ करि हों नहीं विलंब कछु अब जो रावन रन सन्मुख पै हों। जैसे अगिन परी उडि तूल में जारि सकल जम पास पठै हों ॥३॥ रवि अरु ससि दोऊ है साखी लंक विभीछन तुमको दैहों। सीता सहित समीत'सूर'प्रभु यह व्रत साधि अयोध्या जैहो ॥४॥ ❀ २७१ ❀ राग कान्हरा ❀ जिनि मंदोदरी बरजे हो रानी। पूरव कथा कहा तू जाने मोहि राम विपरीत कहानी ॥१॥ अरी अज्ञान मूढ़ मति बौरी जनकसुता ते त्रिया करि जानी। मोहि गवन करिवो सिवपुर

कों कोन काज अपने मैं आनी ॥ २ ॥ यह सीता निर्भे वह पदपथ सोखे सात समुद्र को पानी। 'सूरदास' प्रभु रामचन्द्र बिन को तारे रावन अभिमानी ॥ ३ ॥ ❁ २७२ ❁ राग कानरा ❁ तब हों नगर अयोध्या जैहों । एक बात सुन निश्चय मेरी रावन-राज्य बिभीषन दैहों ॥ १ ॥ कपिदल जोरि और सब सेना सागर सेतु बंधै हों । काटि दसों सिर बीस भुजा तब दसरथ-सुत जु कहै हों ॥ २ ॥ छन इक मांहि लंकगढ तोरों कंचन-कोट ढहै हों । 'सूरदास' प्रभु कहत बिभीषन रिपु हति सीता लैहों ॥ ३ ॥ ❁ २७३ ❁ राग कानरा ❁ सो दिन त्रिजटी कहि कब ऐहै है । जा दिन चरनकमल रघुपति के हरषि जानकी हृदय लगै है ॥ १ ॥ कबहुंक लछमन पाइ सुमित्रा माय माय कहि मोहिं सुनै है । कबहुंक कृपावंत कौसल्या बधू-बधू कहि मोहि बुलै है ॥ २ ॥ जा दिन राम रावनहिं मारे ईसहिं दे दससीस चढै है । ता दिन जन्म सफल करि जानों मो हिरदे की कालिम जै है ॥ ४ ॥ जा दिन कंचन-पुर प्रभु ऐहै विमल ध्वजा रथ पे फहरै है । ता दिन 'सूर' राम पर सीता सरबसु वारि बधाई दैहै ॥ ४ ॥ ❁ २७४ ❁ ❁ सेन के दर्शन ❁ राग केदारा ❁ आज रघुपति चढे लंकगढ लेन कों। अवनि चंचल भई सेस सुधि बुधि गई कमठ की पीठ कटि मिल गई ऐनकों ॥१॥ कहत मंदोदरी सुनहु दसकंध पिय जेइ मिलो श्रीय राजीवदलनैन कों । होत अंदोल सागर सप्तक द्वीप दिग्पाल भै भीत उठि चले गैन कों ॥ २ ॥ प्रगट जगदीस लंकेस को बल कहा एक वनचर आय जारि गयो ऐन कों । 'हरिनारायन स्यामदास' के प्रभु सों बैर करि कंत पावे न सुख चैनकों ॥३॥ ❁ २७५ ❁ राग केदारा ❁ जयति जयति श्रीहरिदासवर्य धरने । वारिवृष्टि-निवार घोष--आरति टार देवपति-अभिमान भंग करने ॥ १ ॥ जयति पट पीत दामिनि रुचिर वर मृदुल अंग स्यामल सजल जलद वरने । कर अधर वेनु धर गान कलरव सब्द सहज ब्रज-युवति जन चित्त हरने ॥ २ ॥ जयति

वृंदाविपिन भूमि डोलन अखिल लोक वंदन अंबुज असित चरने। तरनितनया विहार नंदगोप कुमार कहत 'कुंभनदास' स्वामि सरने ॥३॥ ❁ २७६ ❁ ❁ मान पोढवे में ❁ राग केदारा ❁ बेग चलि साजि दल चतुर चंद्रावली। कसब कंचुकी बंद राखि आनन्दकन्द नंदनंदनकुंवर मिलन को दावरी ॥ १ ॥ नैन पंकज लोल मधुर मोहन बोल राजत भौंह कपोल उदधि को भावरी। चंद्रावली करत केलि मानो मन्मथ पेलि सुरत सागर झेल सहज चढि रावरी ॥ २ ॥ चले गयंद गति नूपुर किंकिनी बजति देख गजवर लजित चलन को भावरी।'दास मुरारी' प्रभु कर कमल मेलि उर जीत गिरिधरन अब प्रेम लडबावरी ॥ ३ ॥ ❁ २७७ ❁ राग बिहाग ❁ चांपत चरन मोहनलाल। पलका पोढी कुंवरि राधे सुंदरी नव बाल ॥ १ ॥ कबहु कर गहि नयन मिलवत कबहु छुवावत भाल। 'नंददास' प्रभु छबी निहारत प्रीति के प्रतिपाल ॥ २ ॥ ❁ २७८ ❁

जा दिन सूं शस्त्र धरे वा दिनसूं मान मे ये कीर्तन होय

❁ राग केदारा ❁ मानगढ क्यों हू न टूटत, अबला के बल को प्रताप। आपुन ढोवा चढि गिरिधर पिय अबला तू चिला चाप मुक्त कटाच्छ घूंघट दरवाजो नहीं खूटत ॥ १ ॥ विविध प्रनत हथनाल गोला चले जू उछट परत कामकोट नहीं फूटत। 'गोविन्द' प्रभु साम दाम भेद दंड करि घेरा परयो चहुंदिस संचित रुखाई जल क्यों हू न खूटत ॥२॥ ❁ २७६ ❁ राग अडानों ❁ आलीरी मानगढ कर लिये बैठी ताकी ओट। नैन तो बंदूक तामे सकुच दारू भरयो बोल गोला चलावे जटाजोट ॥ १ ॥ भौंह धनुस तामे अंजन पनच दिये बरुनी बान मारे तिरछीरी चोट। निस धाय जाय लागे 'तानसेन' के प्रभु छूट्यो हट टूट्यो हैरी काम कोट ॥ २ ॥ ❁ २८० ❁ आश्विन सुदी ११ ❁ मंगला दर्शन ❁ राग बिभास ❁ चोवा में चहल रहे हो लालन कहां गये दसहरा मनावन। एक ते एक सुघर घोखनारी तुम तो छैल गोवर्धनधारी

सबहिन के मन भावन ॥ १ ॥ करमे कर लीनो हसि एक बीरा दीनो लैलै नाम मोहि लागे गिनावन । 'धोंधी' के प्रभु बिन सुभट इतो जनावत बल बतराबत जात सखी आई समुझावन ॥३॥ ❀ २८१ ❀ आश्विन सुदी १५ ❀ ❀ शरद को उत्सव ❀ शृङ्गार समय ❀ राग टोडी ❀ बन्यो रास मंडल माधो गति मे गति उपजावे हो । कर कंकन झनकार मनोहर प्रमुदित वेनु बजावे हो ॥ १ ॥ स्यामसुभग तन पर दच्छिन कर कूजत चरन सरोजे हो । अबला वृंद अवलोकित हरिमुख नयन विकास मनोजे हो ॥ २ ॥ नील पीतपट चलत चारु नट रसनागत नूपुर कूजे हो । कनक कुंभ कुच बीच पसीना मानों हर मोतिन पूजे हो ॥ ३ ॥ हेमलता तमाल अवलंबित सीस मल्लिका फूली हो । कुंचित केस बीच अरुझाने मानों अलिमाला झूली हो ॥ ४ ॥ सरद विमलनिसि चंद बिराजत क्रीडत यमुना कूले हो । 'परमानंद' स्वामी कौतूहल देखत सुर नर भूले हो ॥ ५ ॥ ❀ २८२ ❀ राग टोडी ❀ श्रीवृषभाननंदिनी नाचत रास रंगभरी । उरप तिरप लाग डाट उघटित संगीत सब्द ततथेइ थेइ थेइ बोलत जगत वंदिनी ॥ १ ॥ नाचत स्वर ताल मृदंग लेत युवती सुधंग कोककला निपुन सरस कामकंदिनी । रिझवार देत प्रान प्रभु 'मुकुंद' अति सुजान मोहि कलगान त्रिय प्रेमफंदिनी ॥ २ ॥ ❀ २८३ ❀ ❀ राजभोंग आये ❀ राग सारंग ❀ अन्नकूट कोटिक भांतिन सों भोजन करत गोपाल । आप ही कहत तात अपने सों गिरि मूरति देखो ततकाल ॥१॥ सुरपति से सेवक इनही के सिव विरंचि गुन गावे । इनही ते अष्ट महासिध नवनिध परम पदारथ पावे ॥२॥ हम गृह बसत गोधन वन चारत गोधन ही कुल देव । इने छांड़ जो करत यज्ञ विधि मानों भींत को लेव ॥३॥ यह सुनि आनंदे ब्रजवासी आनंद दुंदुभी बाजे । घर घर गोपी मंगल गावे गोकुल आन बिराजे ॥४॥ एक नाचत एक करत कुलाहल एक देत कर तारी । वनिता वृन्द बांयनो बांटत गूंजा पूवा सुहारी ॥५॥ तब ही इन्द्र

आयुस दियो मेघन जाय प्रलय के बरखो । यह अपमान कियो धो कोने
ताहि प्रगट ह्वै परखो ॥६॥ सात द्योस जलसिला सहस्रन महा उपद्रव
कीनों । नंदादिक विस्मित चितवत सब तब गिरिवर कर लीनो ॥७॥ सक्र
सकुचि सुरभी संग लायो तजी आपनी टेक । गहे चरन गोविंद नाम कहि
कियो आप अभिषेक ॥८॥ महरि मुदित वर वसन मंगाये बोलि बोलि सब
ग्वालिन दीने । प्रभु 'कल्यान' गिरिधर युग युग यों भक्त अभय पद कीने
॥९॥ ❀ २८४ ❀ राग सारंग ❀ देखोरी हरि भोजन खात । सहस्र भुजा
धरि उत जेंवत हैं इत गोपन सों करत है बात ॥१॥ ललिता कहत देखि
हो राधा जो तेरे मन बात समात । धन्य सबै गोकुल के वासी संग रहत
गोकुल के नाथ ॥२॥ जेंवत देखि नंद सुख लीनो अति आनन्द गोकुल
नरनारी । 'सूरदास' स्वामी सुखसागर गुन आगरि नागरि दे तारी ॥३॥
❀२८५❀ राजभोग सरे ❀ राग गौड़ सारंग ❀ आनि और आनि कहत भचिकि
रहत ब्रज नारी नर । कटु तिक्त कषाय अम्ल मधुर सलोने प्रकार खटरस
सों प्रीतरस सों अरोगत सुन्दर वर ॥१॥ गिरिराज बरन बरनों बरा सिला
सिल मोदक ठौर ठौर वृच्छन गूँजा भर । 'राजाराम' प्रभु के जल अचवन
कारन कों इन्द्र झारी भरि धरे जलधर ॥२॥ ❀ २८६ ❀ राजभोग दर्शन ❀
❀ राग सारंग ❀ बन्यो रास मण्डल अहो युवती यूथ मधि नायक नाचे गावे ।
सब्द उघटत थेई थेई ततथेई गति मे गति उपजावे ॥१॥ अङ्ग अङ्ग चित्र
किये मोरमुकुट सीस दिये काछनी काछे पीतांबर सोभा पावे । सुर नर
मुनि मोहे जहां तहां थकित भये मीठी मीठी तान लालन बेनु बजावे ॥२॥
बनी श्रीराधावल्लभ जोरी उपमा कों दीजे को री लटकत है बांह जोरी रीझि
रिझावे । 'चतुर बिहारी' प्यारी प्यारे ऊपर वारि डारी तन मन धन यह सुख
कहत न आवे ॥३॥ ❀ २८७ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग मालव ❀ चलिये जू
नेक कोतिक देखन रच्यो है रास मण्डल राधे हों आई तुम्हें लेन । मृगमद

घसि अङ्ग लगाइ मुकुट काछनी बनाइ मुरली पीतांबर बिराजे यह छबि मोपै कही न बने बेन ॥१॥ सब सखी मिलि नाचत गावत ताल मृदंग मिलि बजावत नृत्य करत मधि मूरति मैंन । 'सूरदास' मदनमोहन हसत कहा हो जू पांव धारिये अहो जोपे सुख दियो चाहो नैन ॥२॥ ❀२८८❀ ❀ राग नट ❀ उरझी कुंडल लट बेसर सों पीतपट बनमाला बीच आन उरझे हैं दोऊ जन । होड़ा होड़ी नृत्य करें रीझि रीझि आंकों भरें तताथेई तताथेई रटत मगन मन ॥१॥ नैन सों नैन प्रान-प्रान सों उरझि रहे चटकीली छबि देखि लटपटात स्यामघन । ग्रीवा सों ग्रीवा मेलि भुजन सों भुज जोरि रास में निसंक नाचें बिहारी बिहारिन ॥२॥ बाजत मृदंग ताल मधुर धुनि रसाल लाग डाट हुरमई सुरन की लेत तान । 'सूरदास' मदनमोहन रास मंडल मधि प्यारी को अञ्चल लेले पोंछत हैं श्रमकन ॥ ३ ॥ ❀ २८९ ❀ संध्या भोग आये ❀ राग मालव ❀ रास विलास ग है करपल्लव एक एक भुज ग्रीवा मेली । द्वै द्वै गोपी बिच बिच माधो निर्तत संग सहेली ॥१॥ टूट परी मोतिन की माला ढूँढत फिरत सकल ग्वारी । बिगलित कुसुम भाल कच बिलुलित निरखि हसे गिरिवरधारी ॥२॥ सरद विमल नभ चन्द बिराजत निर्तत नन्द किसोरा । 'परमानन्द' प्रभु बदन सुधानिधि गोपी नैन चकोरा ॥३॥ ❀ २९० ❀ राग मालव ❀ ताताथेइ रास मण्डल मे बनि नाचत पिय के संग प्रीतम प्यारी । गावत सरस सु जाति मिलावत चपल कुटिल भ्रुव अनियारी ॥१॥ मालव राग अलापति भामिनी लेत उरप नागर नारी । प्यारी के संग बैनु बजावत सुघरराय गिरिवरधारी ॥२॥ 'कृष्णदास' प्रभु सौभग सींवा सब जुबतिन में सुकुमारी । जोरी अद्भुत प्रगटित भूतल केलिकलारस मनुहारी ॥३॥ ❀ २९१ ❀ सेनभोग आये ❀ राग ईमन ❀ लाल संग रास रंग लेत मान रसिक रमन ग्रग्रता ग्रग्रता तत तत तत थेई थेई गति लीने । सारेगमपधनि धुनि सुनि ब्रजराजकुंवर गावत री अति यति

संगति निपुन तननननननन आन आन गति चीने ॥१॥ उदित मुदित सरद चन्द बन्द टूटे कंचुकी के वैभव निरखि निरखि कोटि मदन हीने । बिहरत वन रास विलास दंपती मन ईषदहास 'छीतस्वामी' गिरिवरधर रस बस तब कीने ॥२॥ ❀ २६२ ❀ राग कान्हरा ❀ रसिकन रस भरे ही नृत्यत रास रंगा । सुलप संच गति लेत अग्र तत तत थेई थेई बाजत मृदंगा ॥१॥ ताल झांझ किन्नरी कातर भेद तैसीय मिली धुनि सरस उपंगा । 'गोविंद' प्रभु रस माते युवतियूथ खसित कुसुम सिर मोतिन मंगा ॥२॥ ❀२६३❀ ❀ राग अडानो ❀ बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु स्यामसुन्दर कमलनैन बांकी भौंह ललित भाल घूँघरवारी अलकें । पीतबसन मोतीमाल हिये पदक कण्ठ लाल हसनि बोलनि गावनि गंडनि श्रवनि कुण्डल झलकें ॥१॥ कर पद भूषन अनूप कोटि मदन मोहन रूप अद्भुत वदन चन्द देखि गोपी भूली पलकें । कहि 'भगवान हित रामराय' प्रभु ठाडे रास मण्डल मधि राधा सों बांहजोटी किये हिये प्रेम ललकें ॥२॥ ❀ २६४ ❀ राग अडानो ❀ बंसीवट के निकट हरि रास रच्यो है मोरमुकुट और ओढ़ें पीतपट । श्रीवृन्दावन कुञ्ज सघन वन सुभग पुलिन और यमुना के तट ॥१॥ आलस भरे उनींदे दोउजन श्री राधाजू और नागरनट । 'व्यास' रसिक तन मन धन फूले लेत बलैया करि अंगुरिन चट ॥ २ ॥ ❀ २९५ ❀ राग अडानो ❀ मंडल मधि रंग भरे स्यामा स्याम राजे । घरररररररररररर मुरली घोर गाजे ॥ १ ॥ गान करत ब्रज की भाम लेत सरस सुघर तान अंग अंग अभिराम मन्मथ छबि लाजे । मंदमंद हास करत रीझिरीझि अंक भरत बंसी में लेत तान अति सुदेस छाजे ॥२॥ अद्भुत नट नृत्य करत संगीत की गति जु धरत रुनझुनात नूपुर कटिकिंकिनी कल साजे । धिधिकिट धिधिकिट धिधिकिट ता धिलांता धिलां गिड् गिड् गिड् गिड् गिड् गिड् धन प्रचंड गाजे ॥ ३ ॥ ररर रेनि रीझि रही जज जमुना थकित भई चचच चंद थकित भयो पश्चिम रथ साजे । 'कृष्णदास'

प्रभु बिलास बरखत रस रंग रास वृन्दाविपिने विलास रंग बाढ्यो आजे ॥
॥ ४ ॥ ❀ २९६ ❀ राग केदारा ❀ सुनि धुनि मुरली बन बाजे हरि रास
रच्यो । कुंज कुंज द्रुम बेली प्रफुलित मंडल कंचन मनिन खच्यो ॥ १ ॥
निर्तत जुगलकिसोर जुवतीजन मन मिलि राग केदारो मच्यो । 'हरिदास' के
स्वामी स्यामा कुंज बिहारी नीकें आजु गुपाल नच्यो ॥ २ ॥ ❀ २९७ ❀
❀ राग केदारा ❀ अहो रेनि रीझी हो प्यारे हरि को रास देखि याही ते अधिक
बढि गई री गेन । चलि न सकत हरि रूप विमोही रही इकटक आछे
नछित्र नेन ॥१॥ छबि सों छूटत बिच बिच तारे मानों मनि के भूषन सब
वारि डारे जग एन । चंद हु थकित भयो देखिवे की लालच रह्यो है दीवट
करि परम चैन ॥ २ ॥ जोलों इच्छा भई तोलों नाचत गोपी गुपाल अद्भुत
गति मोपे कही न परे बेन । 'नंददास' प्रभु को विलास रास देखिवे कों
मनमथ हू को मन मथ्योरी मैन ॥३॥ ❀ २९८ ❀ सेन दर्शन ❀ वेणु धरें तब ❀
❀ राग मालव ❀ अलाग लागन उरप तिरप गति नचवत ब्रज ललना रासे ।
उघटत सब्द ततथेइ ता थेइ मृगनैनी ईषदहासे ॥ १ ॥ चाल चंद लंजावति
गावति बांधति मदन भोंह पासे । उपजत तान मान सुबंधाने मोहति विस्व
चरन न्यासे ॥ २ ॥ नूपुर क्वनित रुनित कटिमेखला कटि तटि काछ
नीलवासे । चलत उरज पट किंकिनी कुंडल श्रमजलकन पूरित आसे ॥३॥
मोहनलाल गोवर्धनधारी रिझवति सुघर छैल लासे । अपने कंठ की श्रमजल
दल मली माला देत 'कृष्णदासे' ॥ ४ ॥ ❀ २९९ ❀ राग केदारा ❀ पूरी
पूरनमासी पूरयो पूरयो है सरद को चंदा । पूरयो है मुरली सुर केदारो
कृष्ण कला संपूरन भामिनी रास रच्यो सुखकंदा ॥ १ ॥ तान मान गति
मोहन मोहे कहियत औरहि मनमोहंदा । नृत्य करत श्रीराधा प्यारी नचवत
आपु बिहारी सो गिड् गिड् तता थेई थेई थेई छंदा ॥ २ ॥ मन आकर्से
लियो ब्रजसुंदरी जय जय रुचिर रुचिर गति मंदा । सखी असीस देत

'हरिवंसे' तेसेई बिहरत श्रीवृन्दावन कुंवरि कुंवर नंदनंदा ॥३॥ ❀३००❀ ❀ राग केदारा ❀ रास रच्यो हो श्रीहरि श्रीबृन्दावन कालिंदी तट। सरद मास मल्लिका फूली खेलन को मन कियो योगमाया समीप धर उद्भट ॥ १ ॥ तब उडुराज दिसा प्राचीन मुख आयो अरुन किरन प्रसरित कर। निरखि विमल मंडल की सोभा तेसोई वन कोमल कर राजत कल गावत सुमनोहर ॥ २ ॥ यह सुनके आई ब्रज की तिय बहुत अनंद दियो मन हरि कर। द्वै द्वै गोपी प्रति सन्मुख ह्वै और कछू देखियत नाहिन दृग कुंडल लोल परस्पर॥३॥ धिधि कटि थुंग थुंग गिडि गिडि तत् थेई तत थेई तत थेई थेई उघटत। पीतांबर माला धरि नाचत 'श्रीगिरिधर' मन्मथ-मन्मथ ह्वै देववधू तन वारत ॥४॥ ❀३०१❀ आरती समय ❀ राग केदारा ❀ श्रीवृषभाननंदिनी हो नाचत लालन गिरिधरन संग लाग डाट उरप तिरप रास रंग राख्यो। झपताल मिले राग केदारो सप्त सुरनि अवघर वर सुघर तान मान रंग राख्यो ॥ १ ॥ पाई सुख सों रति सिद्धि रतिकाव्य विविध रिद्धि अभिनव दल सत सुहाग हुलास रंग राख्यो। वनिता सतयूथ के पिय निरखि थक्यो सघन चंद बलिहारी 'कृष्णदास' सुजस रंग राख्यो ॥ २ ॥ ❀ ३०२ ❀ ❀ पोढवे में झांझ पखावज सूं ❀ राग केदारा ❀ सरद उजियारी री नीकी लागे निकसि कुंजते ठाडे। वरन बरन कुसुमन के आभूषन और सोंधे भीने बागे ॥ १ ॥ अति आनंद भरे पिय प्यारी गावत हैं केदारो रागे। 'जन भगवान' आज तृन टूटत कछु रजनी दोऊ जागे ॥२॥ ❀ ३०३ ❀ कार्तिक वदी १ ❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग ईमन ❀ स्याम सजनी सरद रजनी पुलिन मधि नृत्य नाट ता त्रग ता त्रग त्रग ता तिरप बंद करत कामिनी। गिडि गिडि धिकि धिडि थिलांग धिधिकिट ता लाग लई झंझंझं झननननन सुर उपंगिनी ॥ १ ॥ स्याम कों यह नाद भावे तक धिकता गति हि लावे ततथेई थेई सब्द उघटि कोक कामिनी। 'कृष्णदास' जसहि गावे कर ता थेई थेई नचावे

काक्रति काक्रति काक्रति काक्रति करे मृदंगिनी ॥ २ ॥ ❀ ३०४ ❀

उत्सव श्रीगिरिधरलाल जी को (कार्तिक वदी ५)

❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ स्याम खिरक के द्वारे करावत गायन को सिंगार । नाना भांति सींग मंडित किये ग्रीवा मेले हार ॥ १ ॥ घन्टा कंठ मोतिन की पटिया पीठन कों आछे ओछार । किंकिनी नूपुर चरन बिराजत बाजत चलत सुढार ॥ २ ॥ यह विधि सब ब्रज गाय सिंगारी सोभा बढी अपार । 'परमानन्द' प्रभु धेनु खिलावत पे हैरावत सब ग्वार ॥३॥ ❀३०५❀ ❀ राग नट ❀ खिरक खिलावत गायन ठाडे । इत नन्दलाल ललित लरका उत गोप महाबल गाढे ॥ १ ॥ सुनि निजनाम नैंचुकी निकसी बल बछरा जब काढे । अपनी जननी कों जानि लाग पय पीवत नवल अखाडे ॥२॥ नृत्यत गावत बसन फिरावत गिरि के सिखर पर चाढे । 'छीतस्वामी' हम जबते बसे ब्रज सैल सकल सुख बाढ़े ॥ ३ ॥ ❀ ३०६ ❀ संध्या समय ❀ ❀ राग गौरी ❀ खेली बहु खेली गांग बुलाई धूमर धौरी । बछरा पर उपरेना फेरत डाढ मेलिकैं दौरी ॥ १ ॥ आप गोपाल कूक मारत हैं गोसुत कों भरि कोरी । धों धों करत लकुट कर लीने मुख पर फेरि पिछौरी ॥३॥ आनन्द मुदित गुपाल ग्वाल सब घेर करत इकठौरी । 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधर ब्रज यह सुख जुग जुग राज करौरी ॥ ३ ॥ ❀ ३०७ ❀ सेन भोग आये ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ कान जगावन चले कन्हाई । गिरिधर सिंघद्वार ठ्है टेरत सुनि सब सखा मंडली आई ॥१॥ विविध सिंगार पहरि पट भूषन प्रफुलित उर आनन्द न समाई । रुचिर गैल गिरि गोवर्धन की किलकत हसत सबै सुखदाई ॥२॥ टेरत गांग बुलाई धूमर श्रवन सुनत आतुर उठि धाई । सावधान सब भोर खेलन कों 'चतुर्भुजदास' चले सिर नाई ॥ ३ ॥ ❀ ३०८ ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ आज अमावस दीपमालिका बडी पर्वनी है गोपाल । घरघर गोपी मंगल गावे सुरभी वृषभ सिंगारो लाल ॥ १ ॥ कहत यसोदा

सुन मनमोहन अपने तात की आज्ञा लेहु। बारों दीपक बहुत लाडिले
कर उजियारो अपने गेह ॥ २ ॥ हँसि व्रजनाथ कहत माता सों धौरी धेनु
सिंगारों जाय। 'परमानन्द दास' को ठाकुर जाय भावत है निसदिन गाय
॥३॥ ❀ ३०९ ❀ राग कान्हरा ❀ आज कुहू की रात है माधो दीपमालिका
मंगलचार। खेलो द्यूत सहित संकर्षन मोहन मूरति नन्दकुमार ॥ १ ॥
कहत यसोदा सुनो मनमोहन चंदन लेप सरीर करो। पान फूल चोवा दिव्य
अंबर मनिमाला ले कंठ धरो ॥ २ ॥ गो क्रीडन पुनि काल होयगो नंदा-
दिक देखेंगे आय। 'परमानन्द दास' संग लीने खिरक खिलावत धौरी गाय
॥ ३ ॥ ❀ ३१० ❀ राग कान्हरा ❀ आजु दीपत दिव्य दीपमालिका। मानों
कोटि रवि कोटि चंद छबि विमल भई निसि कालिका ॥ १ ॥ गजमोतिन
के चौक पुराये बिच बिच वज्र प्रवालिका। गोकुल सकल चित्रमनि मंडित
सोभित झाल झमालिका ॥ २ ॥ पहरि सिंगार बनी राधा जू संग लिये
व्रजबालिका। झलमल दीप समीप सौंज भरि कर लिये कंचन थालिका
॥ ३ ॥ पाये निकट मदनमोहन पिय मानो कमल अलि मालिका। आपुन
हँसत हँसावत ग्वालन पटकि पटकि दे तालिका ॥ ४ ॥ नंदभवन आनंद
बढ्यो अति देखत परम रसालिका। 'सूरदास' कुसुमन सुर बरखत कर
अंजली पुट मालिका ॥५॥ ❀ ३११ ❀ सेन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ मानत
परव दिवारी को सुख हटरी बैठे नन्दकुमार। मंगल बाजे होत चहूंदिस
भीर बहुत अति आंगन द्वार ॥ १ ॥ कुंवरि राधिका नवल वधू सब करि
आई है रुचिर सिंगार। सोंधे भीनी कंचुकी सारी और पेहेरे फूलन के हार
॥ २ ॥ पहले सौदा लेहू हम पे तब लीजो दाऊ पै जाय। नीके देहों
रुगट नहिं खैहों ऐसे कहत लाल मुसिकाय ॥ ३ ॥ हँसि हँसि जात राय
नंदरानी हँसत भान सब गोप गुवाल। चुंवति वदन अहो यह घातें कापै
सीखे हो नंदलाल ॥ ४ ॥ झगरो करत भरत आनन्द सों चन्द्रावली व्रज

मंगल नारि । 'श्रीविट्ठल गिरिधरन लाल' सों रंग करत सब गोपकुमारि ॥ ५ ॥ ❀ ३१२ ❀ मान पोढे में ❀ राग केदारा ❀ तोहि मिलन कों बहुत करत है 'नवललाल श्री गोवर्धनधारी । ऊत्तर बेगि देहो किन भामिनी कहिधों कहा यह बात तिहारी ॥ १ ॥ देखी री तू जो झरोखन के मग तन पहरे झूमक की सारी । तन मन बसी रस प्रानप्यारे के निमिष जिय ते होत न न्यारी ॥ २ ॥ कहिरी सखी कहां हों आऊं बेगि बताय सुठौर सु चारी । 'कुंभनदास' प्रभु वे बैठे हैं जहां देखियत ऊंची चित्रसारी ॥३॥ ❀ ३१३ ❀ ❀ राग केदारा ❀ वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढे ऊंची चित्रसारी । सुंदर वदन निहारन कारन राख्यो बहुत जतनु करि प्यारी ॥ १ ॥ कंठ लगाई भुज दे सिरहाने अधरामृत पीवत पिय प्यारी । तन मन मिली प्रानप्यारे सों नौतन छबि बाढी अति भारी ॥२॥ 'कुंभनदास' प्रभु सौभग सीवां जोरी भली बनी इकसारी । नव नागरी मनोहर राधे नवल लाल श्रीगोवर्धनधारी ॥ ३ ॥ ❀ ३१४ ❀

उत्सव श्रीबालकृष्णलाल जी के गादी बिराजे को (कार्तिक वदी ७)

❀राजभोग आये❀राग बिलावल❀आज कहा संभ्रम है तिहारे घर तात । गोप सबै करत काज आनन्द न समात ॥ १ ॥ हाथ जोरि ठाडे हरि पूछत है आय । मोसों यह बात कहो बाबा ब्रजराय ॥ २ ॥ बोले नंदराय देव इन्द्र हि बलि देहैं । बरसे जल निपजे नाज वरसलों सुख पैहैं ॥ ३ ॥ बहु दिवस भये करत हैं हम पूजा सब कोय । अब जो हम छांडि देहिं तो न भलो होय ॥ ४ ॥ बोले हरि सुनो तात बात एक मेरी । कर्म के बल सबै होय मिलि सुभाय हेरी ॥ ५ ॥ कर्म के आधीन देव कहो कहा करिहै । ताको कछु चलत नाहिं कर्म बिन न सरिहै ॥ ६ ॥ जो तुम जगदीस जानि पूजत हो याही । यासों हमें काज कहा गौ चारन जाही ॥ ७ ॥ गिरि कानन बसत है हम पूजें ता ईस । सो तो द्विज देव गाय ठाकुर जगदीस ॥ ८ ॥

गोवर्धन पूजो औ देहु विप्रन गाय। अर्पो बलि देहु दान धेनु तृन चराय॥९॥ करवाओ पाक विविध युवतिजन बुलाय। खीर आदि सूप अंत सबै विधि बनाय ॥ १० ॥ ओट्यो संयाव पूवा चुकली दे आदि। रखवाओ दूध सबै खरचो जिनि वादि ॥११॥ पर्वत कों बलि देहु द्विज पूजि गाय खिलाय। गिरि की करा सकट जोरि परकंमा जाय ॥ १२ ॥ भूषन बहु मोल सबै वसन तन बनाय। हसत खेलत गावत गिरि देखो फिर आय ॥ १३ ॥ मेरो तो मतो यह सुनि हो ब्रजराज। भावे तौ कीजे जू मेरो यह काज ॥१४॥ जैसे हरि कह्यो सबन तैंसे ही कीनो। रूप बडो धरि के बलि खात दरस दीनो ॥ १५ ॥ सबहिन संग पांय परे मोहन निज रूप। दीनी प्रतीति सबै गोकुल के भूप ॥ १६ ॥ हरि स्वरूप फल ले सब अपने ब्रज आये। निज कर ब्रजवासी हरि फेर ब्रज बसाये ॥ १७ ॥ कोपि इन्द्र पठये मेघ बरसो दिन सात। गिरि धरि ब्रजवासी सब राखि लिये दुख्यात ॥ १८ ॥ देखि रूप आनन्द मे भूख प्यास भुलाई। बरखत है कहां मेघ काहू न सुधि पाई ॥ १९ ॥ सात द्योस ठाडे हरि नेकु न पग हिलायो। एसो ब्रजवासिन यह भाग्यन ते पायो ॥ २० ॥ सुरपति को गर्व गयो रह्यो अति खिस्याई। उघर गये मेघ सबै उदयो रवि आई ॥ २१ ॥ बोले प्रभु निकसो सब बाहिर रह्यो मेह। निडर भये फिरो सबै करो जिनि संदेह ॥२२॥ राख्यो गिरि भूमि पर भेटे ब्रजवासी। पायो अति परमानन्द गोकुल सुखरासी ॥२३॥ प्रेम भरी व्याकुल व्है चूमत मुख माई। बारबार बालक के कर की बलि जाई ॥ २४ ॥ हरखत ब्रजवासी सब आये घर फेरि। निसदिन वे जीवत हैं सुंदर मुख हेरि ॥ २५ ॥ पछतानो इन्द्र कामधेनु संग लायो। अपनो अपराध पांय परि क्षमा करायो ॥ २६ ॥ कीनो अभिषेक तहां गङ्गाजल आनी। ऐरावत सूंड हूते अपने प्रभु जानी ॥ २७ ॥ गोविन्द यह नाम धरयो आप भयो दास। मेरो सब गर्व गयो पायो मैं त्रास ॥ २८ ॥ हरि

को अभिषेक होत सबनि वैर टूट्यो । गोविन्द यह नाम लेत सहज दोष छूट्यो ॥ २९ ॥ यह लीला अति अद्भुत 'रसिक' होय गावे। अन्य भजन छांडि चरन हरिजू के पावे ॥३०॥ ❀३१५❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ बडरिन कों आगे दे गिरिधर श्रीगोवर्धन पूजन आवत । मानसी गंगा जल न्हवाइ के पाछे दूध धौरी को नावत ॥ १ ॥ बहोरि पखारि अरगजा चरचत धूप दीप बहु भोग धरावत । दे बीरा आरती करत हैं ब्रजभामिन मिलि मंगल गावत ॥ २ ॥ टेरि ग्वाल भाजन भरि दे के पीठ थापि सिर पेच बंधावत । 'चत्रभुज' प्रभु गिरिधर ता पाछे धौरी धेनु खिलावत ॥३॥ ❀ ३१६ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ गाय खिलावत सोभा भारी । गौरज रंजित वदन कमल पर अलक झलक घुंघरारी ॥ १ ॥ नखसिख प्रति बहुमोलिक भूषन पहरत सदा दिवारी । फैल रही है खिरक सभा पर नगन रङ्ग उजियारी ॥२॥ श्रमकन राजें भाल गंड भुव यह छबि पर बलिहारी । स्रवत हैं री अंचल चंचल सब चढत हैं अटन अटारी ॥३॥ भीर बहुत अति जाति की भई मुडहिन पर ब्रजनारी । सैनन मे समुझावत सगरी धनि धनि निरखनहारी ॥ ४ ॥ रहे खिलाय धूमरी धौरी गुनन काजरी कारी । 'नंददास' प्रभु चले सदन जब एक बार हुंकारी ॥ ५ ॥ ❀ ३१७ ❀ संध्या समय ❀ ❀ राग गौरी ❀ गाय खिलावत मदनगोपाल । कुमकुम तिलक अलंकृत तंदुल झलकि रह्यो नग अंग विसाल ॥ १ ॥ नखसिख अंग गहने की रचना उर मनिगन वनमाल । वसन दसन पर सुदृढ पौरिया दियो है दिठौना भाल ॥ २ ॥ भीर बहुत सखि बडे खिरक में कूक देत सब ग्वाल । हीही हीही सुनि श्रीमुख ते मोहि रही ब्रज की सब बाल ॥ ३ ॥ दावन छोर बंधे दोऊ कटि दमकत जंघ रसाल । 'श्रीभट' चटक सजल अङ्ग झांई परे चहूंदिस सोभा जाल ॥ ४ ॥ ❀ ३१८ ❀ सेन भोग आये ❀ राग कान्हरा ❀ जयति ब्रजपुर सकल खोरि गोकुल अखिल तरनि तनया निकट दिव्य

दीपावली । जयति नवकुंज वर द्रुम लता पत्र प्रति मानो फूली नवल कनक चम्पावली ॥ १ ॥ जयति गोविन्द गोवृंद चित्रित करे मुदित उमडी फिरै ग्वाल गोपावली । जयति 'व्रजईस' के चरित लखि थकित सिव मोहे विधि लजित सुरलोक भूपावली ॥ २ ॥ ❀ ३१६ ❀ मान पोढवे में ❀ राग बिहाग ❀ राय गिरिधरन संग राधिका रानी । निबिड नवकुंज सय्या रची नवरंग पिय संग बोलत पिकबानी ॥ १ ॥ नीलसारी लाल कंचुकी गौर तन मांग मोतिन खचित सुंदर सुठानी । अर्ध घूंघट ललन वदन निरखत रसिक दंपती परस्पर प्रेम हृदय सानी ॥ २ ॥ लाल तनसुख पाग ढरकि रही भुव पर कुलही चम्पक भरी सेहरो सुबानी । पानि सों पानि गहि उरसों लावत ललन 'गोविन्द' प्रभु व्रज-नृपति सुरत सुखदानी ॥ ३ ॥ ❀ ३२० ❀ ❀ राग बिहागरो ❀ स्यामा जू दुलहिनी दूलहे लाल गिरिधर कौन सुकृत पायो कुंवर रसिक वर । सोहे सिर सेहरो नवल नव नेहरो प्रथम मिलन नैना भये हैं कलप तर ॥ १ ॥ रूप रासि रुचि बाढी प्रेम गांठि परी गाढी ओली बांहि गहि ठाडी गयो है लाज को डर । पोढे पिय कुंज महल तलप कुसुमदल 'स्यामसाहि' जाइ बलि रह्यो है रंगनि ढर ॥ २ ॥ ❀ ३२१ ❀ ❀ मुकुट धरे तब ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारग ❀ गोवर्धन पूजा करि गोविंद सब ग्वालन पहरावत । आवो सुबाहु सुवल श्रीदामा ले ले नाम बुलावत ॥ १ ॥ अपुने हाथ तिलक दे माथे चन्दन अङ्ग लपटावत । वसन विचित्र सबन के माथे विधि सों बांधि बंधावत ॥ २ ॥ भाजन भरिभरि ले कुनवारो ताको ताहि गहावत । 'चत्रभुज' प्रभु गिरिधर ता पाछे धौरी धेनु खिलावत ॥ ३ ॥ ❀ ३२२ ❀ टिपारा धरे तब राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ मदन गोपाल गोवर्धन पूजत । बाजत ताल मृदंग संखधुनि मधुर मधुर मुरली कल कूजत ॥ १ ॥ कुमकुम तिलक लिलाट दिये नव वसन साजि आई गोपीजन । आस पास सुंदरी कनक तन मधि गोपाल बने मरकत मनि ॥२॥

आनन्द मगन ग्वाल सब डोलत हीही धूमरि धौरी बुलावत । राते पीरे बने हैं टिपारे मोहन अपनी धेनु खिलावत ॥ ३ ॥ छिरकत हरदि दूध दधि अक्षत देत असीस सकल लागत पग । 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर गोकुल करो पिय राज अखिल युग ॥ ४ ॥ ❀ ३२३ ❀ कुलह धरे तब ❀ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ चले री गोपाल, गोवर्धन पूजन । मत्त गयंद देखि जिय लज्जित निरखि मन्द गति चाल ॥ १ ॥ ब्रजनारी पकवान बहुत कर भरि-भरि लीने थाल । अङ्ग सुगन्ध पहरि पट भूषन गावत गीत रसाल ॥ २ ॥ बाजे अनेक बेनु रव सों मिलि चलत बिबिध सुरताल । ध्वजा पताका छत्र चमर धरि करत कुलाहल ग्वाल ॥ ३ ॥ बालक चहूं दिसि सोहत मनों कमल अलिमाल । 'कुंभनदास' प्रभु त्रिभुवन मोहन गोवर्धनधर लाल ॥४॥ ❀३२४❀ कार्तिक वदी १२ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग बिलावल❀ अपने अपने टोल कहत ब्रजबासियां । सरद कुहू निसि जानि दीपमालिका जु आई । गोपन मन आनन्द फिरत उनमद अधिकाई । घर घर थापे दीजिये घर घर मंगलचार ॥ सात बरस को सांवरो हो खेलत नंददुवार ॥ १ ॥ बैठि नंद उपनंद बोलि वृखभान पठाये । सुरपति पूजा देति जानि तहां गोविन्द आये ॥ बारबार हाहा करे कहि बाबा सो बात । घर घर भोजन होत है सो कौन देव की जात ॥ २ ॥ स्याम तुम्हारी कुसल जानि एक मंत्र उपै हैं । खट रस भोजन साजि भोग सुरपति ही देहैं ॥ नंद कह्यो चुचुकारि कैं जाइ दामोदर सोइ । बरस द्यौस को द्यौस है ह्यां महा महोत्सव होइ ॥ ३ ॥ हरि बोले सब गोप मंत्र बहोरयो फिरि कीन्हों । एक पुरुष निसि आजु मोहि सपनंतर दीन्हों ॥ सब देवन को देवता गिरि गोवर्धन राज । ताहि भोग किनि दीजिये ह्यां सुरपति को कहा काज ॥ ४॥ बाढे गोसुत गांइ दूध दधि को कहा लेखो । इह परचो विदमान नैन अपने किनि देखो ॥ तुम देखत बलि खाइगो मोंह मांग्यो फल देइ । गोप कुसल

जो चाहिहू तो गिरि गोवर्धन सेइ ॥ ५ ॥ गोपन कियो बिचार सकट सब काहू साजे । बहु विधि करि पकवान चले तहां बाजत बाजे ॥ एक बन ते खेलत चले एक नंदीसुर भीर । एक न पेंडौ पावही उमगे फिरत अहीर ॥ ६ ॥ एक पैड़े एक उबटि एक बन ही बन छांही । एक गावत गुन गोपाल उमगि उमगे न समांही ॥ गोपन को सागर भयौ गिरि भयो मंदराचार । रत्न भई सब गोपिका कान्ह बिलोवनहार ॥ ७ ॥ लीने विप्र बुलाय यज्ञ आरंभन कीनों । सुरपति पूजा मेटि राज गोवर्धन दीनों ॥ देव दिवारी स्यामु है नर नारी तहां जांहि । तात प्रतीति न मानहू तुम देखत बलि खांहि ॥ ८ ॥ प्रथम दूध दधि आदि बहोत गङ्गाजल ढारयो । बडौ देवता जानि कान्ह को मतो बिचारयो ॥ जैसौ गिरिवर राज जू तैसे अन्न के कोट । मगन भये पूजा करे नर नारी बड छोट ॥ ६ ॥ जैसी कंचनपुरी दिव्य रतननि ते छाई । बलि दीनी ही प्रात छाँह फिरि पूरति आई ॥ बदरौला वृखभान की तहाँ बसे विलोवनहारि । ताकी बलि उन देवता लीनी भुजा पसारि ॥ १० ॥ जहाँ तहाँ दधि धरयो कहा कहों उज्ज्वलताई । उदधि सिखर हो रही भात में देह छिपाई ॥ चहुँ ओर चक्रा धरे चन्दहिं पटतर सोय । ठौर ठौर वेदी रची चहुँ विधि पूजा होय ॥११॥ सहस्र भुजा उर धरे करे भोजन अधिकाई । नखसिख लों अनुहारि मानों दूसरो कन्हाई ॥ श्री राधा सों ललिता कहै मेरे हिए समाइ । गहे अंगुरिया नंद की सो ढोटा पूजा खाइ ॥१२॥ पीत दुमालो धरे कंठ मोतिन की माला । भूखन सुभग अनूप झलमलो नैन विसाला ॥ गिरि की सोभा साँवरो गिरि कों सोभा स्याम । तैसे परवत भात के ढिंग भैया बलराम ॥ १३ ॥ एक चौरासी कोस घेरि गोपन को डेरा । लम्बे चौवन कोस आजु ब्रजवासिन मेरा ॥ सबहिन कौ मनि सांवरो दीसै सबनि मंझार । कौतुक भूले देवता आये लोक विसार ॥१४॥ बहु विधि व्यंजन अरपि गोप गोपिनि कर जोरे । अगनित किए

अनेक तदपि बरनों कछु थोरे ॥ इहि विधि पूजा कीजि कै गोबिन्द सों कह्यो जाइ । कान्ह कह्यो तब बिहँसि कै 'सूर' सरस गुन गाइ ॥ १५ ॥ ❀ ३२५ ❀ ❀ कार्तिक वदी १३ ❀ शृंगार समय ❀ राग देवगंधार ❀ आज माई धन धोवत नंदरानी । कार्तिक वदि तेरस दिन उत्तम गावत मंगल बानी ॥ १ ॥ नवसत साज सिंगार अनूपम करत आप मन मानी । 'कुंभनदास' लाल गिरिधर कों देखत हियो सिरानी ॥ २ ॥ ❀ ३२६ ❀ राग देवगंधार ❀ जसोदा मदनगोपाल बुलावे । धन तेरस आओ नित प्यारे लै उछंग हुलरावे ॥ १ ॥ हरी जरी बागो बहु भूषन रुचिसों बहुत धरावे । 'ब्रजपति' की सोभा मुख निरखत रोम रोम सुख पावे ॥ २ ॥ ❀ ३२७ ❀ राग देवगंधार ❀ प्यारी अपनो धन जु सँवारे । वारंवार देखि नैनन सों लै जु हृदय में धारे ॥ १ ॥ रुचिसों सरस सँवारत पिय कों आभूषन बहु सोहे । आगम निरखि दिवारी को मन 'द्वारकेश' को मोहे ॥२॥ ❀ ३२८ ❀ राग देवगंधार ❀ धन तेरस दिन अति सुखदाई । राधा मन अति मोद बढ्यो है मनमोहन धन पाई ॥ १ ॥ राखत प्रीति सहित हिरदे में गुरुजन लाज बहाई । 'द्वारकेश' प्रभु रसिक लाडिली निरखि निरखि मन भाई ॥२॥ ❀ ३२९ ❀ कार्तिक वदी १४ ❀ रूप चतुर्दशी ❀ ❀ अभ्यंग समय ❀ राग देवगंधार ❀ न्हात बलकुँवर कुँवर गिरिधारी । जसुमति तिलक करत मुख चूमत आरती नवल उतारी ॥ १ ॥ आनंद राय सहित गोप सब नंदरानी ब्रजनारी । जलसों घोर केसर कस्तूरी सुभग सीसते ढारी ॥ २ ॥ बहोरि करत सिंगार सबै मिलि सबमिलि रहत निहारी । चंद्रावली ब्रजमंगल रसभरी श्री वृषभान दुलारी ॥ ३ ॥ मन भाये पकवान जिमावत जात सबै बलिहारी । 'श्री विट्ठल गिरिधरन' सकल ब्रज सुख मानत हैं दिवारी ॥ ४ ॥ ❀ ३३० ❀ राग देवगंधार ❀ न्हात बलदाऊ कुंवर कन्हाई । अति सुगंध केसर कस्तूरी जलसों घोर मिलाई ॥ १ ॥ रतन जटित आभूषन वस्तर ब्रजरानी पहिराये । अति आनन्द निहारत फिरि फिर आछी भांति

बनाये ॥ २ ॥ यह दिन दीपमालिका को सुख मानत हैं नंदलाल । फूले गोप ग्वाल सब मानत और सकल ब्रजबाल ॥ ३ ॥ अपने संग सखा सब लीने खिरक खिलावत गाय । राजत हैं गिरिधर 'श्री विट्ठल' सब मन हुलसि बढ़ाय ॥ ४ ॥ ❀ ३३१ ❀ राग देवगंधार ❀ न्हवावत सुत कों नंदरानी । मानत परव रूपचौदस को तिलक उबटनो करि हरखानी ॥ १ ॥ वस्तर लाल जरी आभूषन पहिरावत रुचिसों मनमानी । मेवा लै चले गाय सिंगारन 'ब्रजजन' देखि देखि विहसानी ॥२॥ ❀ ३३२ ❀ राग देवगंधार ❀ आज न्हाओ मेरे कुंवर कन्हाई मानी काल दिवारी । अति सुगंध केसर उबटनो नये वसन सुखकारी ॥ १ ॥ कछु खावो पकवान मिठाई हों तुम ऊपर वारी । करि सिंगार चले दोऊ भैया तृन तोरत महतारी ॥ २ ॥ गोधन गीत गावत ब्रज पुर मे घर-घर मंगलकारी । 'कृष्णदास' प्रभु की यह लीला गिरिगोवर्धनधारी ॥ ३ ॥ ❀ ३३३ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ गुर के गूंजा पूआ सुहारी । गोधन पूजत ब्रज की हो नारी ॥ १ ॥ घर-घर गोमय प्रतिमा धारी । बाजत रुचिर पखावज थारी ॥ २ ॥ गोद लिये मङ्गल गुन गावत । कमलनैन कों पांय लगावत ॥ ३ ॥ हरद दही रोचन के टीके । यह ब्रज सुर पुर लागत फीके ॥ ४ ॥ राती पीरी गाय सिंगारी । बोलत ग्वाल दै दै कर तारी ॥ ५ ॥ 'हरीदास' गोवर्धनधारी । सुख मानत यह बरस दिवारी ॥६॥ ❀ ३३४ ❀ कार्तिक वदी ३० ❀ दिवाली ❀ मंगला दर्शन ❀ ❀ राग बिलावल ❀ पूजा विधि गिरिराज की नंदलाल बतावे । झुंडन-झुंडन गोपिका मिलि मङ्गल गावे ॥ १ ॥ गङ्गाजल सों न्हवाय के दूध धौरी को नावे । विविध वसन पहरायके चंदन चरचावे ॥ २ ॥ धूप दीप करि आरतो बहु भोग धरावे । तिलक कियो बीरा दिये माला पहरावे ॥३॥ खिरक चले लोहरे बड़े मिलि गाय खिलावे । फिरि गिरिधर भोजन कियो सुख 'सूर' दिखावे ॥ ४ ॥ ❀ ३३५ ❀ शृंगार समय ❀ राग बिलावल ❀ घरी

एक छांडो तात बिहार । राम कृष्ण तुम दोऊ भैया आओ बैठो करो
सिंगार ॥ १ ॥ जसुमति कहत है आज अमावस दीपमालिका मङ्गल नाम ।
घर-घर बालक सबै सिंगारे सुनो स्यामघन राम ॥ २ ॥ खेलेंगी गाय ग्वाल
नाचे सब गोपी गावे गीत । 'परमानंददास' यह मङ्गल वेद पुरान पुनीत ॥३॥
❀ ३३६ ❀ राग बिलावल ❀ आज दिवारी बडो परव घर । कहत जसोदा
सुनहु लाल तुम लै लकुटी खेलो अपने कर ॥ १ ॥ प्रथम न्हाओ आछे
सोंधे सों गुहि बेनी अंजन देहों नटवर । सूथन लाल तास की झगुली धरो
चंद्रिका सुभग सीस पर ॥ २ ॥ पाछे पहरि विविध आभूषन मुरली लो मेरे
मुरलीधर । देहों भाल मृगमद को बैंदा जो कोउ दृष्टि न दे तेरे पर ॥ ३ ॥
खेलो तुम मेरे आंगन दोऊ हों देखों अपनी आंखन भर । पान फूल मेवा
मिसरी सों झोरी भरि ग्वालन देहों सुन्दर ॥ ४ ॥ सुभग सरूप नंदलालन
को मोहित होत देखि सब सुर नर । यह विधि कहत नंदजू की रानी सुनि
सुनि सर्वसु वारत 'गिरिधर' ॥ ५ ॥ ❀ ३३७ ❀ राग बिलावल ❀ आज
दिवारी मङ्गलचार । ब्रजयुवती मिलि मङ्गल गावत चौक पुरावत नंददुवार॥१॥
मधुमेवा पकवान मिठाई भरि भरि लीने कंचनथार । 'परमानंददास' को
ठाकुर भूषन वसन रसाल ॥ २ ॥ ❀ ३३८ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀
यह दिवारी बरस दिवारी तुमकों नित नित आओ । नंदराय नंदरानी ढोटा
पूजें अति सुख पाओ ॥ १ ॥ पुजवो मनोरथ सब ब्रजजन के देव पितर
पुजवाओ । 'श्री विट्ठल गिरिधरन' संग ले गोधन पूजन आओ ॥ २ ॥
❀ ३३९ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ पूजन चले नंद गिरिवर कों बडरे
गोप संग नंदलाल । करि सिंगार अपुअपुने घर ते बालक वृद्ध तरुन सब
ग्वाल ॥ १ ॥ लै लै नाम खिलावत गायन धौरी धूमर मदनगोपाल ।
ब्रजवनिता झुंडनि मिलि निरखत मोहन मूरति स्याम तमाल ॥ २ ॥
अगनित अन्न साकपाकादिक धरत विचित्र पहोंप पत्र माल । गिरिवर रूप

स्यामसुंदर धरि आरोगत वपु बाहु विसाल ।। ३ ।। मघवा कोपि मेघ पठवाये जाय करी ब्रज पर जलजाल । राखे सब नग वाम हस्त धरि बाजत वेनु अंगुरिन के चाल ।। ४ ।। परयो इंद्र सुरभी ले पायन गयो गर्व पूजे तिहिकाल । देत असीस वारने लै लै वंदत चरन-कमलरज भाल ।। ५ ।। आज्ञा मांगि चले निज घर कों सब ब्रज के प्रतिपाल । करि नौछावरि देत सबनकों 'ब्रजभूषण' अति परम रसाल ।।६।। ❀ ३४० ❀ राग सारंग ❀ पूजा करी देव गोधन की राजा नंद लालगिरिधारी । पहले मानत अति आनंद सों बडो परव त्यौहार दिवारी ।। १ ।। बड़ी बड़ी गोपवधू नंदरानी हटरी भरत सिहाइ सिहाइ । तिन पर बनी पांत सोने की दीये धरत बनाइ बनाइ ।। २ ।। हँसत हँसत दोउ संग बाबा के कुंवर लाडिले बैठे आइ । देखनकों ब्रजराज हुलसि मन अपने बंधु लिये जु बुलाइ ।। ३ ।। गृह-गृह आई ब्रजसुंदरी सौदा लैन दैन इन साथ । हंसि हंसि कहत लाल हम जाने करन न पाओगे कछु घात ।। ४ ।। देहों नहीं तोल ते घटती कहत छबीली सों मुसिकात । 'श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल' तुम बहुत रुगट हू खात ।। ५ ।। ❀३४१❀ राग सारंग ❀ पूजि सबै रंगभीने, गोवर्धन । सहस्र भुजा धरि गिरिधर दूजो जेंमत स्याम सखन संग लीने ।।१।। उमडे सुनि-सुनि बाल वृद्ध अगनित साक पाक घृत कीने । जो कोउ सकुच रहीं गुरुजन की बांह पसारि बोलि तेउ लीने ।। २ ।। जयजयकार भयो चहुँ दिसि ते भामिनी सब मिलि गावत सुर भीने । 'चत्रुभुज' प्रभु गिरिधरन सदा ब्रज राज करो भक्तन सुख दीने ।। ३ ।। ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ फूले गोप ग्वाल घर घर ते मानत हैं त्यौहार दिवारी । अपनी अपनी गाय सिंगारी बलदाऊ लालन गिरिधारी ।। १ ।। हंसि हंसि लाल कहत सबहिन सों हमारे देव की पूजा ह्वैहै । भात दही पकवान मिठाई देखेंगे कैसे वह खैहै ।। २ ।। यह सुनि गाम गाम ते ग्वालिन गोवर्धन पूजा कों आईं । गूंजा पूआ पूरी दधि

खोवा भली भांतिसों सब मिलि लाईं ॥ ३ ॥ अंगुरी गहे नंदबाबा की अति राजत हैं दोऊ भैया । मीठे मीठे वचन कहत है देखि सिहात जसोदा मैया ॥ ४ ॥ अति आनंद देत पहरावत पट वस्तर बहुमोलिक नीके । देत असीस 'श्री विट्ठल' प्रभु कों गिरिधरलाल भामते जीके ॥५॥ ❀ ३४३ ❀ ❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ नीकी खेली गोपाल की गैया । कूकैं देत ग्वाल सब ठाडे यह जु दिवारी नीकी भैया ॥ १ ॥ नंदादिक देखत हैं ठाडे यह जु पाहुनी नीकी पैया । बरसद्योस लों कुसल कुलाहल नाचो गावो करो बधैया ।२। धौरी धेनु सिंगारी मोहन बडरे बृषभ सिंगारे । 'परमानंद' प्रभु राय दामोदर गोधन के रखवारे ॥ ३ ॥ ❀ ३४४ ❀ कान जगाय के मंदिर में पधारते समय ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ देखो इन दीपनकी सुघराइ । जानो घन में विधु मंडल राजत तम निसि परम सुहाइ ॥ १ ॥ नंदराय अगनित पांती लै रचि अद्भुत जुगत बनाइ । विविधि सुगंध कपूर आदि दे घृत परिपूरनताइ ॥ २ ॥ घर-घर मङ्गल होत सबन के उर आनंद न समाइ । 'कुंभनदास' प्रभु धेनु खिलावत गिरिधर सब सुखदाइ ॥ ३ ॥ ३४६ ॥ ❀ हटरी मे आरती को टकोरा होय तब ❀ राग कान्हरा ❀ सुरभी कान जगाय खिरक बल मोहन बैठे राजत हटरी । पिस्ता दाख बदाम छुहारे खुरमा खाजा गूंजा मठरी ॥ १ ॥ घर घर ते नरनारी मुदित मन गोपी ग्वाल जुरे बहु ठटरी । टेर टेर लै देत सबन कों लै लै नाम बुलाय निकटरी ॥ २ ॥ देत असीस सकल गोपीजन जसुमति देत हरखि बहु पटरी । 'सूर' रसिक गिरिधर चिरजीयो नंदमहरको नागर नटरी ॥ ३ ॥ ❀ ३४६ ❀ राग कान्हरा ❀ कान जगाय गोपाल मुदित मन हटरी बैठे गोवर्धन धारी । हलधर संग सुबल श्रीदामा गोप ग्वाल सब गाय सिंगारी ॥ १ ॥ देखन कों मोहे सुर नर मुनि रावर मांझ भीर भइ भारी । जयजयकार होत चहुंदिस ते सुरपति करत कुसुम बरखारी ॥ २ ॥ कंचन रतन जटित हीरा नग विस्वकर्मा रचि सुविधि

सँवारी। परम विचित्र बनी अति सुन्दर जगमगात कुहु तिमिर विदारी नंद भवन भरि धरे विविध पकवान अगनित मेवा गरी छुहारी। टेर टेर तब देत सबन कों सिव ब्रह्मादिक गोद पसारी ॥ ४ ॥ करत आरती मात जसोदा मंगल गावति सब ब्रजनारी। 'सूर' रसिक गिरिधर सुख बिलसत बरस बरस प्रति परव दिवारी ॥ ५ ॥ ❀ ३४७ ❀ राग कान्हरा ❀ दीपदान दे हटरी बैठे नवललाल श्री गोवर्धनधारी। द्वै हेरी पांति बनी दीपन की ब्रज सोभा लागत अतिभारी ॥ १ ॥ तेसेई बने हैं नंद के नंदन तैसीय बनी राधिका रानी। गृह-गृह ते आई ब्रजसुन्दरी मात जसोदा देखि सिहानी ॥ २ ॥ भांति भांति पकवान मिठाई लैं लैं गोद सबन की नावत। आरती करत देत नौछावर फिरि-फिरि मंगल गीत गवावत ॥ ३ ॥ उठ कर लाल खिरक में आये टेरि-टेरि सब सखा बुलाये। 'श्री विट्ठल' गिरिधरन लाल ने सब गायन के कान जगाये ॥ ४ ॥ ❀ ३४८ ❀

❀ कार्तिक सुदी १ अन्नकूट ❀ राजभोग आये ❀ राग विलावल ❀ गिरि पर कोपि चढ़यो इन्द्र रिसाय। ध्रु०। अपनेजु व्रत के काज कारन मनमें अति अकुलाय॥ पठयेजु सुरपति दूत तब तहां गये दौरे धाय। देखि के ब्रजराज लीला कहो हमसों आय ॥ १ ॥ एक सांवरो सो नंद-ढोटा कछू कही न जाय। उन मेटि के पूजा तिहारी दई गिरिहि लुटाय॥ श्रवण सुनि सुरराज कोप्यो भयो अपने भाय। काट बंधन देहु सब के लगो गिरिसों जाय॥२॥ उमडिजु मघवा चहूंदिस ते ब्रजहि देहु बहाय। देखि के परिनाम उमको कहो हमसों आय॥ सप्त निस दिन मान एकौ करी अति अकुलाय। नीर और समीर दोनों बहे बहुत बहाय ॥ ३ ॥ देखि धीरज धरे न कोऊ कहा भइ जदुराय। बूंद पाहन के समान बरखत जानो ताय॥ ग्वाल गोपी गौ बछरुवा रहे सबन सुख चाय। तबहि न मान्यो कह्यो उनको है कोउ अबहि सहाय ॥ ४ ॥ देखि के मन को अंदेसो लियो गिरि जो उठाय। धरयो

नख के अग्र तब जसुमति जु मनहि सिहाय ॥ देहु लकुटी चहुँ ओरन मति कहूं डिग जाय। सप्त सागर जल सुदर्सन लियो सकल समाय ॥ ५ ॥ भींजे नहिं पाषान पहोमी सलिल सहज सुभाय। गती मति हरी सबै इन्द्र की मद्जु लोचन छाय ॥ हार मान के चूक अपुनी करों कौन उपाय। जान्यो नहिं परिनाम तुमरो रह्यो भ्रम जु भुलाय ॥ ६ ॥ गयो मद उतर के तब मिल्यो है सिर नाय। तब कियो सनमान हरिजू इन्द्र छूवे पाय ॥ पीठ थापिके कियो अपनो दियो मन जो बढ़ाय। 'केसौदास' के प्रभु की लीला ते सदा गुन गाय ॥ ७ ॥ ❀३४९❀ गोंबर्धन पूजा करके पाछे पधारे तब❀ ❀ राग सारंग ❀ बनेरी गोपाल बाल रेस आवत। माधुरी मूरति मनमोहन मन भावत ॥ १ ॥ कुंचित केस सुदेस वदन पर बीच बीच जल बूंद रहे। मानो कमलपत्र पर मोती खंजन निकट सलोल गहे ॥ २ ॥ गोपी-नैन भृंग रस लंपट उडि उडि परत वदन मांही। 'परमानंद दास' रस लोभी अति आतुर कहां जांही ॥ ३ ॥ ❀ ३५० ❀ राग कान्हरा ❀ आवत हैं गोकुल के लोचन। नंदकिसोर जसोदानंदन मदनगोपाल विरह दुख मोचन ॥ १ ॥ गोपवृंद में ऐसे सोभत ज्यों नच्त्र में पूरन चंद। बनजुधातु गुंजा मनि सेली भेख बन्यों हरि आनंद कंद ॥ २ ॥ बर्हा प्रसून कंठ मनि माला अद्भुत रूप नटवर काछै। कुंडल लोल कपोल बिराजत मोहन वेनु बजावत आछै ॥ ३ ॥ भक्त भ्रमर पावन जस गावत इहि विधि ब्रज प्रवेस हरि कीनों। 'परमानंद' प्रभु चलत ललित गति जसुमति धाय उछंगनि लीनों ॥ ४ ॥ ❀ ३५१ ❀ राग केदारा ❀ आओ मेरे या गोकुल के चंदा। बड़ी बार खेलत जमुना तट बदन दिखाइ देहु आनंदा ॥ १ ॥ गायनि आवन की भई बिरियां दिनमनि किरनि भई अति मंदा। आए तात मात छतियां लगे 'गोविंद' प्रभु ब्रजजन सुखकंदा ॥ २ ॥ ❀ ३५२ ❀ तिलक होय तब ❀ ❀ ❀ गोवर्धन पूजके घर आये। जननी जसोदा करत आरती

मोतिन चौक पुराये ॥ १ ॥ मंगल कलस बिराजत द्वारे बंदनवार बंधाये । 'लालदास' गिरिधर गिरि पूज्यो भये भक्त मनभाये ॥ २ ॥ ❀ ३५३ ❀ ❀ संध्या समय ❀ राग मालव ❀ जै जै जै मोहन बल वीर । जै जै इन्द्रमान मद् भंजन श्री गोवर्धन उधरन धीर ॥ १ ॥ जै जै जै गोकुल दुख मोचन जै जै जै वर भेख अभीर । मनिगन अभरन लसत पीतपट जैं जैं जै घनस्याम सरीर ॥२॥ जै जै अद्भुत चरित मनोहर श्रीराधा रस गुन गंभीर । 'कृष्णदास' प्रभु सब विधि समरथ अद्भुत जसु गावत मुनि कीर ॥ ३ ॥ ❀ ३५४ ❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग कान्हरा ❀ कान्ह कुंवर के करपल्लव पर मानों गोवर्धन नृत्य करे । ज्यों ज्यों तान उठत मुरली की त्यों त्यों लालन अधर धरे ॥१॥ मेघ मृदंगी मृदंग बजावत दामिनी दमक मानों दीप जरैं । ग्वाल ताल दैं नीके गावत गायन के सुत सुरजु भरैं ॥ २ ॥ देत असीस गोपीजन बरखा को जल अमित झरैं । अति अद्भुत अवसर गिरधर को ' नंददास ' के दुखजु हरैं ॥ ३ ॥ ❀ ३५५ ❀

भाई दूज (कार्तिक सुदी २)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ गोवर्धन नख पर धरयो मेरे बारे कन्हैया । दधि अच्छत फल फूल ले भुज चरचत मैया ॥ १ ॥ जुरि आईं सब घोख की औरेजु अढैंया । ग्वाल बाल पायन परे गोपी लेत बलैंया॥२॥ बलदाऊ फूल्यो फिरैं जग जीत्यो रे भैया । 'परमानंद' आनंद में ब्रज बजत बधैया ॥ ३ ॥ ❀ ३५६ ❀ शृङ्गार समय ❀ राग बिलावल ❀ आव गुपाल सिंगार बनाऊं । विविध सुगंध उबटि कें लालन पाछैं उष्ण जल सों जु न्हवाऊं ॥ १ ॥ आंगु अंगोछि गुहों तेरी बेनी फूलनि रचि रुचि भाल बनाऊं । सुरंग पाग जरतारी टोरा रतन जटित सिर पेच बंधाऊं ॥ २ ॥ बागो लाल सुनेरी छापो हरी इजार चरनन बिरचाऊं । पटुका सरस बैंजनी रंग को हंसुली हेम हमेल बनाऊं ॥ ३ ॥ गजमोतिन के हार मनोहर मनि

माला लै तोहि पहेराऊं। कर दर्पन ले देखो बारे निरखि निरखि दोउ दृगनि सिराऊं ॥ ४ ॥ मृदु मेवा पकवान मिठाई अपने कर लै तुमहि जिमाऊं। 'विष्णुदास' कों यह कृपा फल बाललीला हों निसुदिन गाऊं ॥ ५ ॥ ❀ ३५७ ❀ राग बिलावल ❀ पीतांबर को चोलना पहिरावति मैया। कनिक छाप ऊपर धरी झीनी इकतैया ॥ १ ॥ लाल इजार चुनाव की जरकसी चीरा। पहोंची रतन जराय की उर राजत हीरा ॥ २ ॥ देखि देखि मुख जसुमती फूली अंग न माई। काजर दै बैंदा दियो ब्रजजन मुसिकाई ॥ ३ ॥ नंदबबा मुरली दई कह्यो ऐसे बजाइ। जोइ सुने जाको मनु हरै 'परमानंद' गाइ ॥ ४ ॥ ❀ ३५८ ❀ राग बिलावल ❀ बलिहारी गोपाल की गोवरधन धारयो। इन्द्र ढीठ मदमत्त को जिन गर्व प्रहारयो ॥ १ ॥ बहुत यत्न मघवा किये पीछो न समारयो। बैर कियो ब्रजनाथ सों आपुन ही हारयो ॥ २ ॥ लै सुरभी पायन परयो अपराध निवारयो। 'कृष्णदास' के प्रान को हँसि वदन निहारयो ॥ ३ ॥ ❀ ३५९ ❀ शृङ्गार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ आज बन्यो नव रंग पियारो। ब्रज वनिता मिलि क्यों न निहारो ॥ १ ॥ लटपटी पाग महावर पागे। कुंवरि मनावत अति बड़ भागे ॥२॥ नीलांबर नख रेख जु सोहे। देखत मन्मथ को मन मोहे ॥३॥ कहूं चन्दन कहूं बंदन की छबि। अंग राग बहु भांति रह्यो फबि ॥ ४ ॥ मदनमोहन पिय यह विधि देखौ। 'दास गोपाल' जीवन फल लेखौ ॥१॥ ❀३६०❀ ❀ तिलक होय तब ❀ झांझ पखावज सूं ❀ राग सारंग ❀ आज दूज भैया की कहियत कर लिये कंचन थाल के। करो तिलक तुम बहिन सुभद्रा बल अरु श्रीगोपाल कै ॥ १ ॥ आरती करत देत नौछावरि वारति मुक्तामाल कै। 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर प्रेमपुंज ब्रजबाल कै ॥ २ ॥ ❀ ३६१ ❀ ❀ राजभोग आये ❀ राग सारंग ❀ लाडिले गोपाल आज हमारे भोजन कीजे। बहुत भांति पकवान मिठाइ खटरस व्यंजन लीजे ॥ १ ॥ सद्य घी खिचरी

अरु खोवा स्याम सलोने लीजे । उर्द के बरा दही में बोरे कछु कोरे कछु भीजे ॥२॥ संग समान सखा सब लावहु बांटि सबन कों दीजे। 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर पान्यो पछावरि पीजे ॥ ३ ॥ ❀ ३६२ ❀ राग सारंग ❀ बल गइ स्याम मनोहर गात । तिहारो वदन सुधानिधि सीतल अचवत दृगन अघात ॥ १ ॥ पलक ओट जिनि जाउ पियारे कहत जसोदा मात । छिन एक खेलन जात घोख में पल जुग कल्प विहात ॥ २ ॥ भोजन आन करो दोउ भैया कुंवर लाडिले तात । 'परमानंद' कहत नंदरानी प्रेम लटपटी बात ॥ ३ ॥ ❀ ३६३ ❀ राग सारंग ❀ कहत प्यारी राधिका अहीर । आज गुपाल पाहुने आये परसि जिमाऊं खीर ॥ १ ॥ बहुत प्रीति अंतर्गत मेरे पलक ओट दुख पाऊं । जानत जाऊं संग गिरिधर के संग मिले गुन गाऊं ॥ २ ॥ तिहारो कोऊ बिलग न माने लरिकाई की बात । 'परमानंद' प्रभु भवन हमारे नित उठि आओ प्रात ॥ ३ ॥ ❀ ३६४ ❀ राग सारंग ❀ आज गोपाल पाहुने आये निरखे नैन अघायरी । सुंदर वदन कमल की सोभा मो मन रह्यो लुभायरी ॥ १ ॥ के निरखूं के टहल करूं एको नहिं बनत उपायरी । जैसे लता पवन बस द्रुम सों छूटत फिरि लपटायरी ॥ १ ॥ मधु मेवा पकवान मिठाइ व्यंजन बहुत बनायरी । राग रंग मे चतुर 'सूरप्रभु' कैसे सुख उपजाय री ॥ ३ ॥ ❀ ३६५ ❀ भोग सरे ❀ राग सारंग ❀ भोजन कर जु उठे दोऊ भैया । हस्त पखारि सुध अचवन करिके बीरी लेहु कन्हैया ॥१॥ मात जसोदा करत आरती पुनि पुनि लेत बलैया । 'परमानंददास' को ठाकुर ब्रजजन केलि करैया ॥ २ ॥ ❀३६६❀ राग सारङ्ग ❀ पान खवावत करि करि बीरी । एक टक ह्वै मोहन मुख निरखत पलक न परत अधीरी ॥ १ ॥ हँसत निहारत वदन स्याम को तन की सुधि बिसरीरी । 'रसिक' प्रीतम के अंग संग मिलि छतियां भइ अति सीरी ॥ २ ॥ ❀ ३६७ ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारंग ❀ आओ रे आओ भैया ग्वालो या पर्वत की

छैयां । नाचो गावो करो बधाई सुखन चराओ गैयां ॥ १ ॥ जिन तुमरो पकवान जु खायो सोई रच्छा करि हैं । 'परमानंददास' को ठाकुर गिरिगोवर्धन धरि हैं ॥ २ ॥ ❀ ३६८ ❀ राग सारंग ❀ तार व तारो री ब्रजजन लोचन ही को तारो । सुनि जसुमति तेरो पूत सपूत अति कुल दीपक उजियारो ॥ १ ॥ धेनु चरावन जात दूर तब होत भवन अति भारो । घोख संजीवनि मूर हमारी छिन इत उत जिनि टारो ॥ २ ॥ सात द्योस गिरिराज धर्‍यो कर सात बरस को बारो । 'गोविन्द' प्रभु चिरजीयो रानी तेरो सुत गोप वंस रखवारो ॥ ३ ॥ ❀ ३६९ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग मालव ❀ सांवरे बलि गई भुजन की । क्यों गिरि सुबल धर्‍यो कर कोमल बूझति हों गति तन की ॥ १ ॥ इन्द्र रिसाय बरख्यो ब्रज ऊपर ते हू तो हठि हारे । भेटत ग्वाल कहत हँसि भैया तैं हम भले उबारे ॥ २ ॥ हरद दूब अच्छत दधि कुमकुम हरखि जसोदा लाई । कर सिर तिलक चरन-रज वंदित मनों रंक निधि पाई ॥ ३ ॥ परसे चरन कमल ब्रज-सुंदरी हरखि-हरखि मुसिकाई । फिरि-फिरि दरसन करत याहि मिस मन की प्रीति दुराई ॥ ४ ॥ 'सूरदास' सुरपति जिय कंपत सुरभी संग लै आयो । तुम दयाल अविगत अविनासी मैं कछु मरम न पायो ॥५॥❀३७०❀कार्तिक सुदी ७❀शृंगार समय❀राग बिलावल❀ गोवर्धन धरनी धर्‍यो मेरे बारे कन्हैया । दधि अच्छत फल फूल ले भुज पूजत मैया ॥ १ ॥ विप्र बोलि वरनी करी दीनी बहु गैया । ग्वाल बाल पायन परे गोपी लेत बलैया ॥ २ ॥ नंद मुदित मन फूल ही कीरति युग भैया । 'परमानंद' ब्रज राखि लियो खेलत लरकैया ॥ ३ ॥ ❀ ३७१ ❀ ❀ राग बिलावल ❀ गोवर्धन गिरि कर धर्‍यो मेरे बारे कन्हैया । बूझति जसुमति लाल कों सुत जानि नन्हैया ॥ १ ॥ माखन दूध खवाय के कीनों मोटो री मैया । तेरे पुन्य प्रताप ते कीनी ब्रजजन छैया ॥ २ ॥ इन्द्र मान मर्दन कियो आयो पांय परैया । यह लीला ब्रज नित रहो गावै 'दास'

सदैया ॥ ३ ॥ ❀ ३७२ ❀ शृंगार दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ याते जिय भावे सदा गोवर्धनधारी । इन्द्रकोप ते नंद की आपदा निवारी ॥ १ ॥ जे देवता आराधिये ते हरि के भिखारी । अन्य देव कित सेविये बिगरे अपकारी ॥२॥ दुःसासन के क्रोध ते द्रौपदी उबारी । 'परमानंद' प्रभु सांवरो भक्तन हितकारी ॥ ३ ॥ ❀ ३७३ ❀ संध्या समय ❀ राग गौरी ❀ चिरजियो लाल गोवर्धन धारी । सात द्योस जल वृष्टि निवारी या ढोटा पर वारी ॥ १ ॥ देवराज परतिग्या मेटी गोपभेख लीला अवतारी । नलकूबर मनिग्रीव उबारे बालकदसा पूतना मारी ॥ २ ॥ देत असीस सकल गोपीजन राज करो वृन्दावन चारी । 'परमानंददास' को ठाकुर अनुदिन आरति हरत हमारी॥३॥ ❀३७४❀ ❀ सेन दर्शन ❀ राग अडाना ❀ सुरराज आज पायन परयो गिरिधरन आपुनो करयो । तजि गज व्रजरज लोटत आयो सुरभी उपहार लायो वदन निरखि मगन भयो कनक दंड लौं धरनी परयो ॥ १ ॥ तब गोपाल भये कृपाल पीतांबर फहरायो कान्ह अभय कर सीस धरयो । 'हरिनारायन स्यामदास' के प्रभु माइ चरन सरन रहत सदा ही सब विधि अनुसरयो ॥२॥ ❀३७५❀

गोपाष्टमी (कार्तिक सुदी ८)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग देवगंधार ❀ चल री सेन दई ग्वालिन कों मोहनलाल बजायो बैन । प्रात समे जागे अनुरागे वृन्दावन आनंदनिधि माई चले चरावन धैन ॥ १ ॥ बरन बरन बानिक बनि आये पट भूखन जसुमति पहिराये भाल तिलक दे आंजे नैन । 'हरिनारायन स्यामदास' के प्रभु माइ प्रगट भये धरि सीस चंद्रिका सब व्रजजन सुख दैन ॥२॥ ❀३६६❀ग्वाल बोले❀ ❀ राग आसावरी ❀ प्रथम गो चारन चले कन्हाई । माथे मुकुट पीतांबर की छबि वनमाला पहराई ॥ १ ॥ कुंडल श्रवन कपोल बिराजत सुंदरता बनिआई । घरघर ते सब छाक लेत है संग सखा सुखदाई ॥ २ ॥ आगे धेनु हांकि सब लीनी पाछे मुरली बजाई । 'परमानन्द' प्रभु मनमोहन व्रजवासिन

कर राती । सूथन कटि चोलना अरुन रंग पीतांवर की गाती ॥ १ ॥ ऐसे गोप सबै बनि आये है सब स्याम संगाती । प्रथम गोपाल चले जु बच्छ लै असीस पढ़त द्विज जाती ॥ २ ॥ निकट निहारत रोहिनी मैया आनन्द उपज्यो छाती । 'परमानन्द' नन्द आनन्दित दान देत बहु भांती ॥ ३ ॥ ❀ ३८२ ✻ शृङ्गार आरती समय ❀ राग सारङ्ग ❀ चले हरि बच्छ चरावन माई । टेरे पहले तोक श्रीदामा लीने संग लगाई ॥ १ ॥ कहत गोपाल सुनो सब कोऊ वृन्दाबन में जैये । मधु मेवा पकवान मिठाई भूख लगे तब खैये ॥२॥ खेलत हँसत करत कोलाहल आये जमुना तीर । 'परमानन्ददास' को ठाकुर राम कृष्ण दोऊ वीर ॥ ३ ॥ ❀ ३८३ ❀ राजभोग आये राग सारंग ❀ पीत उपरना वारे ढोटा कहिके टेरे ग्वालिनी । छाक बनाय ले आई विविध विधि कालिंदी तीर उपहारिनी ॥ १ ॥ कहा लेहुगे ऐसी गाय चरायवे में जाय संमारा क्यों न अपनी छकहारिनी । 'रसिक'प्रीतम पियारूप विमोहित कुंजन कुञ्जबिहारिनी ॥ २ ॥ ❀ ३८४ ❀ राग सारङ्ग ❀ बंसीबट बैठे हैं नन्दलाल । भयो है मध्यान्ह छाक की बिरिया अपनी अपनी गैया छैया ले आवो ब्रजबाल ॥ १ ॥ ग्वाल मंडली मध्य बिराजत करत परस्पर भोजन नवल कने गोपाल । 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर सब सुख रसिक रसाल ॥२॥ ❀ ३८५ ❀ राग सारङ्ग ❀ विहारीलाल आवो आई छाक । भई अवेर गाय बहु चरावहु उलटावहु रे हांक ॥१॥ अर्जुन भोज सुबल श्रीदामा मधु मङ्गल के ताक । अपुनी अपुनी पातर लेके बैंठे फैल फराक ॥ २ ॥ खटरस खीर खांड़ घृत भोजन बहु पकवान पराक । 'सूरदास' प्रभु जेंवत रुचि सों प्रेम प्रीत के पाक ॥ ३ ॥ ❀ ३८६ ✻ राग सारङ्ग ❀ कुमुदवन भली पहुँची आय । सुफल भई है छाक तिहारी लाल कदमतर पाय ॥ १ ॥ तहांते उठि चले मानसरोवर संग सखा सब लाय । बैठत तहां ठौर गिरि ऊपर चरत चहुं दिसि गाय ॥ २ ॥ खेलत खावत हँसत परस्पर बातें कहत बनाई ।

'रामदास' बलि-बलि बूझनि की कहा कहा व्यंजन लाई ॥३॥ ❀३८७❀

❀ राग सारङ्ग ❀ कौन बन जैहो भैया आज । कहत गोपाल सुनोहो बालक करो गमन को साज ॥ १ ॥ ऐसो चतुर कौन नन्दनन्दन जो जाने रस रीति । तहां चलो जहां हरखि खेलिये अरु उपजे मन प्रीति ॥ २ ॥ पूरे बेनु बखान महुवरी छींक कंध चढाये । रोटी भात दही भरि भोजन और आगे दे ग्वाल गाये ॥ ३ ॥ ठौर ठौर कूकें दे प्रहसत आये जमुना तीर । 'परमानन्द' प्रभु आनन्द रूप राम कृष्ण दोऊ बीर ॥ ४ ॥ ❀ ३८८ ❀

❀ राग सारङ्ग ❀ गोपाल आज कानन चले सकारे । छींके कांधे बांधि दधि ओदन गोधन के रखवारे ॥ १ ॥ प्रात समय गोरंभन सुनि के गोपन पूरे शृंग । बजावत पत्र कमल दल लोचन जानो उठि चले भृंग ॥ २ ॥ करतल बेनु लकुटिया लीने मोरपंख सिर सोहे । नटवर भेख बन्यो नंदनंदन देखत सुर नर मोहे ॥ ३ ॥ खग मृग तरु पंछी सचुपायो गोपवधू बिलखानी । बिछुरत कृष्ण प्रेम की बेदन कछु 'परमानन्द' जानी ॥ ४ ॥

❀ ३८९ ❀ भोग सरे ❀ राग सारङ्ग ❀ छाक खाय-खाय धाय जाय द्रुमन चढ़त फैंटा मुख पोंछत अंगोछत कर सों कर । अवनी डंडान डार दुरावत जाकी आर रोवनी रुवाय छांड़ि हंसे सब हरहर ॥ १ ॥ एक ग्वाल ताकत एक झांकत है रू भये खिजोरा खीझि गारी देत कांपत है थरथर । 'जगजीवन' गिरिधारी तुम पर वारी लाल याही पर राखो दाव कूदे सब धरधर ॥ २ ॥ ❀ ३९० ❀ राग सारङ्ग ❀ बैठे लाल कालिंदी के तीरा । लै राधे गिरिधर दै पठयो यह प्रसादको बीरा ॥ १ ॥ समाचार सुनिये श्रीमुख के जै कहे स्यामसरीरा । तेरे कारन चुनि चुनि राखे ये निरमोलिक हीरा ॥२॥ सुन्दरस्याम कमलदल लोचन पहिरे है पट पीरा । 'परमानन्ददास' को ठाकुर लोचन भरत अधीरा ॥ ३ ॥ ❀ ३९० ❀ राजभोग दर्शन ❀ राग सारङ्ग ❀ गोविंद चले चरावन गैया । हरखि हरखि कहे आज भलो दिन

कहत जसोदा मैया ॥ १ ॥ उबटि न्हवाय बसन भूखन सजि विप्रन देत बधैया । करि सिर तिलक आरती वारति फिरि-फिरि लेत बलैया ॥ २ ॥ 'चत्रभुजदास' छाक छीके सजि सखन सहित बलभैया । गिरिधर गमन देखि आंको भरि मुख चूम्यो नंदरैया ॥ ३ ॥ ❀ ३९२ ❀ भोग के दर्शन ❀ ❀ राग पूरवी ❀ धौरी धूमर कारी काजर पियरी पीयर कहि कहि टेरत । वाम भुजा मुरली कर लीने दच्छिन कर पीतांबर फेरत ॥ १ ॥ दुरि नागर नट कालिंदी तट लकुट लिये कर गावत फेरत । हूंक हूंक एक बार गज सप्त धाई 'चत्रभुज' प्रभु गिरिधारी हँसि टेरत ॥ २ ॥ ❀ ३९३ ❀ राग पूरवी ❀ गैया गई दूर टेरो जु कान । जो ऊंचे चढि टेर सुनाओ सब बगदैंगी मेरे जान ॥ १ ॥ बृंदावन मे चरत हरे त्रन चित चमकी टेर परत कान । दूध धार धरनी सींचत आई जहांरी गोविंद प्रभु करत कमल मुखपान ॥ २ ॥ ❀ ३९४ ❀ राग पूरवी ❀ चेरी कीनी हो नन्ददुलारे । नीकी सरस बजाई मुरली गायन के रखवारे ॥ १ ॥ रुचि कर कमल गुंजमाला गरे मोरमुकुट छबि बारे । 'जगन्नाथ' कविराय के प्रभु माई मोही कान्हर कारे ॥ २ ॥ ❀ ३९५ ❀ राग पूरवी ❀ ए हांकि हटकि-हटकि गाय ठठकि ठठकि रही गोकुल की गली सब सांकरी । जारी अटारी झरोखनि मोखनि झांकत दुरि मुरि ठौर ठौर ते परत कांकरी ॥ १ ॥ कुंदकली चंपकली बरखत रसभरी तामें पुनि देखियत लिखे से आंकरी । 'नन्ददास' प्रभु पाछे ते टेरत काहू सों हां करी काहू सों ना करी ॥ २ ॥ ❀ -१९६ ❀ संध्या समय ❀ राग पूरवी ❀ गोधन पाछे पाछे आवत, नटबर काछे छुरित अलक तिलक की छबि मोपे बरनी न जाई । कनक कुंडल लोल लोचन मोहन बेनु बजावत ॥ १ ॥ प्रिय सखा भुजा अंस धरे नील कमल दच्छिन कर मधुव्रत श्रुति देत छेद मंद मधुर गावत । 'गोविंद' प्रभु वदनचंद जुवतिन मन नैन चकोर रूपसुधा पान करत काहेन जिय भावत ॥ २ ॥ ❀३९७❀

❀ सेन भोग आये ❀ राग ईमन ❀ कहो कहां खेलेहो लालन बात कहो मोसों बन की । आओ उछंग सांवरे मोहन गोरज पोंछों बदन की ॥ १ ॥ देखोरी बदन-कमल कुम्हिलानो और अवस्था भई तन की । 'रसिक' प्रीतम कों लें नन्दरानी बलि-बलि छगन मगन की ॥ २ ॥ ❀ ३९८ ❀ राग ईमन ❀ लाल तुम कैसे गाय चराई । ग्वालन संग छैया में बैठे कौन बिपिन में जाई ॥ १ ॥ कहां-कहां खेले बालक लीला छुवत परस्पर धाई । लै कांधे हारो जीते कों दियो ठौर पहुँचाई ॥ २ ॥ ठाड़े कहाँ कदम तर गिरिधर मधुरी बेनु बजाई । मूंदे दृग दुरि-दुरि हो ग्वाल तुम दीने कहा बताई ॥३॥ गिरि चढ़ि कहाँ बुलाई गैयां ऊंची टेर सुनाई । 'परमानन्द' प्रभु कहहु कृपानिधि बूझति जसोदा माई ॥ ४ ॥ ❀ ३९९ ❀ राग ईमन ❀ मैया हों न चरैहों गाँय । सबरे ग्वाल घिरावत मोपै दूखत मेरे पाँय ॥ १ ॥ जब हों घेरन जावत नाहीं कितनी बेर चराय । मोहि न पत्याय बूझि बलदाऊ अपनी सोंह दिवाय ॥ २ ॥ हों जानत मेरे कुंवर कन्हैया लेत हिरदे लगाय । 'परमानन्ददास' की जीवन ग्वालन पर जसुमति जु रिस्याय ॥३॥ ❀ ४०० ❀ राग ईमन ❀ मैया मैं कैसी गाय चराई । बूझि देख बलभद्र दादासों कैसी मैं टेर बुलाई ॥ १ ॥ बिडरि चली सघन बन महियां हेरी दै ठहराई । ग्वालन के लरिका पचिहारे वे सब मेरी दांई ॥ २ ॥ भली-भली कहि महरि हँसत हैं फूली अङ्ग न माई । 'परमानन्द' प्रभु वीर वचन सुनि जसुमति देत बधाई ॥ ३ ॥ ❀ ४०१ ❀ राग कान्हरा ❀ धेनन को ध्यान निसदिन मेरे मोहन कों सपने कहत गोरी गैया नहि आई । आनन उजारी बनवारी हों संमार लाउं वा बिन आउं तो मोहे बाबा की दुहाई ॥ १ ॥ कजरारी कठीवारी मखतूली फोंदावारी झांझरी झनकार प्यारी मो मन भाई । 'हरिनारायन श्यामदास' के प्रभु देखि हों तो झक रही चिरजियो री कन्हाई ॥ २ ॥ ❀ ४०२ ❀ राग ईमन ❀ कैसे-कैसे गाय चराई हो गिरिधर ।

गौरज मुख ते झारि जसोदा लेत बलैया फिर कर ॥ १ ॥ कहाँ रहे तुम घाम छाँह मधि घन बरसन लाग्यो बल समेत सुन्दरवर । 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर सब सुखसागर हम न डरत इन बादर ॥ २ ॥ ❀ ४०४ ❀

❀ सेन दर्शन ❀ राग कानरा ❀ आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय गोविंदा कों गायन में बसवोइ भावे । गायन के संग धावे गायन में सचुपावे गायन की खुररज अंग लपटावे ॥ १ ॥ गायन सों ब्रज छायो वैकुंठ बिसरायो गायन के हित कर गिरि ले उठावे। 'छितस्वामी' गिरिधारी विट्ठलेस वपु धारी ग्वारिया को भेख धरे गायन में आवें ॥ २ ॥ ❀ ४०४ ❀ मान पोढ़वे में ❀ राग विहाग ❀ काहे न बोलत नागरी बैना। तोहि मिलन कों बहोत करत है गिरिधरलाल कमलदल नैना ॥१॥ जबते दृष्टि परी मोहन की बिसरयो गोचारन ग्वालन की सेना। रटत है सुर राधे-राधे कहि कहुं बनमाल कहूं उपरैना ॥२॥ ❀४०५❀ राग विहाग❀ बलैया लैहों पोढ रहो घनस्याम । अतिश्रम भयो वन गौ चरावत द्यौस परी है घाम ॥ १ ॥ सियरी ब्यार झरोखन के मग आवत अति सीतल सुखधाम । 'आसकरन' प्रभु मोहननागर अंग-अंग अभिराम ॥ २ ॥ ❀ ४०६ ❀

प्रबोधिनी (कार्तिक सुदी ११)

❀ मंगला दर्शन ❀ राग बिलावल ❀ गोविंद तिहारो सरूप निगम नेति-नेति गावे । भक्त हेत स्यामसुन्दर देह धरि आवे ॥ १ ॥ योगी मुनी ज्ञानी ध्यानी सपने नहीं पावे । नंद-घरनि बांधि-बांधि कपि ज्यों नचावे ॥ २ ॥ गोपीजन प्रेम आतुर संग लागि बोले । मुरली के नाद सुनत गृह तजि वन डोले ॥ ३ ॥ श्रुति स्मृति वेद पुरान कहत मुनि बिचारी। 'परमानंद' प्रेम कथा सबहिन तें न्यारी ॥ ४ ॥ ❀ ४०७ ❀ शृंगार समय ❀ देव जगे तब ❀ ❀राग बिलावल❀ जागे जगजीवन जगनायक। कियो प्रबोध देवगन जब ही उठे जगत सुखदायक ॥१॥ जा प्रभु की प्रभुताई भारी सिव ब्रह्मादिक पायक ।

कमला जाके पाँय पलोटत निपुन निगम से गायक ॥ २ ॥ जब-जब भीर परे भक्तन पै तब-तब होत सहायक । 'परमानंद' प्रभु भक्तवत्सल हरि जिनके मन वच कायक ॥ ३ ॥ ❀ ४०८ ❀ उत्सव भोग आये ❀ राग बिलावल ❀ आज प्रबोधिनी परम मोदकर चलि प्यारी पिय पै लै जाऊं । बहुत ईख रस-कुंज पुंज रचि चहूं ओर दीपकन सुहाऊं ॥१॥ चित्र-विचित्र भूमि अति चित्रित करि उत्थापन हरिहि जगाऊं । ताल मृदङ्ग झांझ संखध्वनि द्वारे बंदनवार बँधाऊं ॥ २ ॥ चार याम जागरन जागिकैं चारि भोग अधरामृत पाऊं । 'रसिक' प्रभू के रहसि-सिंधु मैं नैनन-मीन झकोर न्हवाऊं ॥ ३ ॥ ❀४०९❀ राग बिलावल ❀ आज एकादसी देव-दिवारी तजो निद्रा उठो गिरिधारी । सकल विस्व को प्रबोध कीजे जागो परम चतुर बनवारी ॥ १ ॥ सुभग महूरत भवन बधाई निरखत बसन परम रुचिकारी । 'परमानंददास' या छबि पर वारि-वारि जाऊं बलिहारी ॥ २ ॥ ❀ ४१० ❀ राग बिलावल ❀ सुकल पक्ष और सुकल एकादसी हरि प्रबोध दिन आयो । चंदन भवन लिपाय जसोदा मोतिन चौक पुरायो ॥ १ ॥ मंडप रच्यो समार ईख सों बंदनवार बंधाई । चहूंओर धरिकै दीपावलि ब्रजनारी मिलि मंगल गाई ॥ २ ॥ पंचामृत विधि सालिग्रामे राजा नंद न्हवावे । नौतन तूल रचे पाटंबर प्रेम सहित पहिरावे ॥ ३ ॥ वेद पुरान मंत्र मरियादा विधि जगदीस जगावे । कंद मूल फल पानादिक लै बहुविधि भोग धरावे ॥ ४ ॥ लखि ब्रजनारि जाय घर अपने भवन सकल विधि कीनों । जसुमति सुत पधराय प्रेम सों भक्त मांगि सब लीनों ॥ ५ ॥ नंद-भवन में आय ब्रजवधू चारजाम निसि जागे । उन उपनेह पुष्टि-रस कारन मोहन भोजन मांगे ॥ ६ ॥ अपुने-अपुने गृह ते भरिकैं लावत हैं पकवान । ब्रजभामिनी के हाथ लेत हैं देत पुष्टिरस दान ॥ ७ ॥ दै बीरा आरती उतारत यह विधि चारों याम । विट्ठल प्रभु की कृपादृष्टि ते 'माधो' पूरन काम ॥८॥ ❀४११❀ राग बिलावल ❀ सुभग

प्रबोधिनी सुभग आज दिन सुभग सखी प्रीतमहि मिलाऊं। चहूंओर दीपक घृत पूरित मध्य इक्षु की कुंज बनाऊं ॥ १ ॥ सुभग भूमि पर चौक पुराऊं तहाँ प्रभु कों पधराऊं। घंटा ताल मृदङ्ग संखधुनि ऊपर सुभग सफेदी उढाऊं॥ २ ॥ चारों याम जागरन कराऊं चारों भोग धराऊं। हरखि-हरखि गुन गाऊं 'स्याम के दास' सदा सुख पाऊं ॥ ३ ॥ ❀ ४१२ ❀

❀ आरती समय ❀ राग बिलावल ❀ नंद को लाल उठ्यो जब सोय। देखि मुखारविंद की सोभा कहो काके मन धीरज होय ॥ १ ॥ मुनि-मन हरन युवति को बपुरी रतिपति जात मान सब खोय। ईषदहास दसन-दुति बिकसत मानिक ओप धरे जानो पोय॥ २ ॥ नवलकिसोर रसिक चूड़ामनि मारग जात लेत मन गोय। 'सूरदास' मन हरन मनोहर गोकुल बसि मोहे सब लोय ॥ ३ ॥ ❀ ४१३ ❀ राजभोग आये ❀ राग धनाश्री ❀ यह तो भाग्यपुरुष मेरी माई। मोहन कों गोदी में लीने जैंवत हैं ब्रजराई ॥१॥ चुचकारत पौंछत अंबुज मुख उर आनंद न समाई ॥ २ ॥ चिबुक केस जब गहत किलकि कैं तब जसुमति मुसकाई। माँगत सिखरन दै री मैया बेला भरि कें लाई ॥ ३ ॥ अङ्ग-अङ्ग प्रति अमित माधुरी सोभा सहज निकाई। 'परमानंद' नारद मुनि तरसत घर बैठे निधि पाई ॥ ४ ॥ ❀ ४१४ ❀

❀ राग धनाश्री ❀ सुत हि जिमावत जसोदा मैया। सानत कौर मधुर मृदु मीठो दै मुख लेत बलैया ॥ १ ॥ खेलन कों उठि-उठि भाजत हैं राखत है बहोरैया। आओ चिरैया आओ खुमरैया ग्वालिन लेत बलैया ॥ २ ॥ तुम जैंओ मिल संग लाल के बहु विधि ख्याल खेलैया। 'श्रीविट्ठल गिरिधर' माता की प्रीति कही नहीं जैंया ॥ ३ ॥ ❀ ४१५ ❀ राग धनाश्री ❀ लाल कों मीठी खीर जो भावे। बेला भरि लावत है जसोदा बूरो अधिक मिलावे ॥ १ ॥ कनिया लिये जसोदा ठाड़ी रुचिकर कोर बनावे। ग्वाल-बाल बनचर के आगे झूठो हाथ दिखावे ॥२॥ ब्रजरानी जो चहुँधा चितवत

तन मन मोद बढ़ावे । 'परमानंददास' को ठाकुर हँसि-हँसि कंठ लगावे ॥ ॥ ३ ॥ ❀ ४१६ ❀ राग आसावरी ❀ हरि भोजन करत विनोद सों । करि-करि कौर मुखारविंद में देत जसोदा मोद सों ॥ १ ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई दूध दह्यो घृत ओद सों । 'परमानंद' प्रभु करत हैं भोजन भोग लग्यो संखोद सों ॥ २ ॥ ❀ ४१७ ❀ भोग के दर्शन ❀ राग नट ❀ आज माई मनमोहन पिय ठाड़े सिंहद्वार मोहत ब्रजजन मन । तेसीय मोहन सिर पाग बनी तेसीय कुल्है सुरंग तेसीय बनी मालबन ॥ १ ॥ तेसीय कंठ मनि तेसोई मोतिनहार तेसीय पीत बरुनि खुली है स्याम तन । 'गोविंद' प्रभु के जु अङ्ग-अङ्ग पर वारि फेरि डारों कोटि मदन ॥ २ ॥ ❀ ४१८ ❀ राग नट ❀ आजु बने ब्रजराज-कुंवर बैठे सिंहद्वार निकसि अङ्ग-अङ्ग अङ्ग नव नव छबि बरनी न जाई । अलक तिलक नासिकाजु कपोल लोल कुंडल छबि देखत दबत कोटि-कोटि रवि अधर अरुन दसननि में झांई ॥ १ ॥ लटपटे पेच पाग लाल पीत कुलहि भरि गुलाल लटकत सिर सेहरो बलि सोभा अधिकाई । 'गोविंद' प्रभु बानिक देखि विथकित सब ब्रजजन मन रूपरासि गिरिवरधर सुन्दर मनिराई ॥ २ ॥ ❀ ४१९ ❀ संध्या समय ❀ राग श्री ❀ कनक कुंडल मंडित कपोल अति गौरज छुरति सुकेस । मदगज चाल चलत सुरभिन संग लाड़िलो कुंवर ब्रजेस ॥ १ ॥ नैन चकोर किये ब्रजवासी पीवत वदन राकेस । अति प्रफुलित मुख कमल सबन के गोपकुल नलिन दिनेस ॥ २ ॥ अति मद तरुन विघूर्नित लोचन अति बिकसित रस कृपावेस । चितवत चलत माधुरी बरखत 'गोविंद' प्रभु ब्रज-द्वार प्रवेस ॥ ३ ॥ ❀ ४२० ❀सेनदर्शन❀राग मालव❀ वंदे धरन गिरिवर भूप । राधिका मुखकमल लंपट मत्त मधुप सरूप ॥१॥ वंदे रसिकवर संगीत सुखनिधि क्वनित वेनु अनूप । 'कृष्णदास' उदार उर पर लोल माल अनूप ॥ २ ॥ ❀ ४२१ ❀ ❀ राग मालव ❀ चरन कमल वंदों जगदीस जे गोधन के संग धाये । जे पद

कमल धूरि लपटानी कर गहि गोपिन के उर लाये ॥ १ ॥ जे पद कमल युधिष्ठिर पूजत राजसूय यज्ञ में आये । जे पद कमल पितामह भीषम भारत में देखन पाये ॥ २ ॥ जे पद कमल संभु चतुरानन हृदय-कमल अन्तर राखे । जे पद कमल रमा उर भूखन वेद भागवत मे भाखे ॥ ३ ॥ जे पद कमल लोक त्रय पावन बलिराजा के पीठ धरे । ते पद कमल दास 'परमानंद' गावम प्रेम पियूष भरे ॥ ४ ॥ ❀ ४२२ ❀ जागरन ❀ राग पूरवी ❀ सोहत लाल पाग सांकरे पेचन की चोकरी । सुंदर कुसुम केसन बिच राखी सो ग्रथित कुँदकली ॥ १ ॥ सुरत श्रम सिथिल अति लोचन निर्तत भुव रसभरी । 'गोविंद' प्रभु प्यारी संग बैठे जहां निविड निकुंज दरी ॥२॥ ❀४२३❀ ❀ राग पूरवी ❀ सोहत कनक कुसुम करन । अरु सोहत मोतिन के अवतंस लटकि मनमथ मन हरन ॥ १ ॥ लाल पाग आधे सिर सोहत कुल्है चंपक भरन । 'गोविंद' प्रभु सिंहद्वार ठाडे जहां प्रिय सखा भुज अंस धरन ॥२॥ ❀ ४२४ ❀ राग पूरवी ❀ आज बने री लालन गिरिधारी । बानिक पर बलि जाऊं चंपक भरी कुल्है सिर पर लटकत कसूंबी पाग छबि भारी ॥१॥ बरुनी पीत स्याम अंग अरगजा मोहे देखि मन्मथ मनुहारी । 'गोविंद' प्रभु रीझि वृषभाननंदिनी कंचुकी छोरि भरत अङ्कवारी ॥ २ ॥ ❀ ४२५ ❀ ❀ राग पूरवी ❀ तरुन तमाल तरे त्रिभंगी तरुन कान कुंवर ठाडे हैं सांवरे वरन । मोर मुकुट पीतांबर बनमाला बिराजत गरे सोभा देत ब्रजजन मन हरन ॥ १ ॥ सखा अंस पर भुज दिये कर लिये मुरली अधर मधुर तान सी तरन । 'कल्यान' के प्रभु गिरिधर बस किये आली बंक विलोकन श्रीगोवर्धनधरन ॥ २ ॥ ❀ ४२६ ❀ राग कल्यान ❀ मोहनलाल के ढिंग ललना यों सोहै जैसे तरु तमाल के ढिंग फूल सोने जरद को । बदन कांति अनूप भांति नहिं समात नीलांबर गगन में जैसे प्रगट्यो ससि सरद को ॥१॥ मुक्ता आभूषन दुति प्रतिबिंबित अङ्ग-अङ्ग चूनों मिलि रंग दूनो होत जैसे

हरद् को। 'सूरदास' मदनमोहन गोहन की छबि बाढी मेटत दुख निरखि नैन मैन दरद् को ॥ २ ॥ ❀ ४२७ ❀ राग कल्यान ❀ मेरे तो कान्ह हैं री प्रान सखी आन ध्यान नाहिनैं मेरे मन के हरन सुख के करन। लटपटी पचरंग पाग ढरकि रही वाम भाग कुमकुम को तिलक भाल नैन-कमल स्याम बरन ॥ १ ॥ भ्रुकुटी कुटिल लोल कपोल रत्न जटित कुंडल डोल मानों ससि प्रगट भयो उदय किये युगल तरनि। प्रभु'कल्यान' गिरिधर की सोभा निरखि विथकित भई मोहि लई इन माई मुरली अधर मधुर धरनि ॥ २ ॥ ❀ ४२८ ❀ राग कल्यान ❀ लाल की रूप माधुरी नैनन निरखि नेकु सखी हो। मनसिज मनहरन हास सांवरो सुकुमार-रास नख सिख अङ्ग-अङ्ग उमगि सौभग सींव नखी हो ॥ १ ॥ लटपटी पचरंग पाग ढरकि रही वाम भाग चंपकली कुटिल अलक बीच बीच रखी हो। आए इत दृग अरुन लोल कुंडल मंडित कपोल अधर अरुन दिपति की छबि क्यों हू न जात लखी हो ॥ २ ॥ अभयद भुज-दंड मूल पीनअंस सानुकूल कनक निकर्ष लसद्दुकूल दामिनी धरखी हो । उर पर मंदार हार मुक्तालर बर सुढार मत्त द्विरद् गति त्रियन की देह दसा करखी हो ॥३॥ मुकुलित वय नवकिसोर बचन रचन चित के चोर मधुरितु पिक साव चूत मंजरी चखी हो। नटवत 'हरिवंश' गान राग रागिनी कल्यान तान सप्त सुरनि लेत इते पर मुरलिका बरखी हो ॥४॥ ❀ ४२९ ❀ राग कल्यान ❀ माई बांके लोचन नीके, चितै चितै चित चौरयो। वह मूरति खेलत नैनन में लाल भावते जी के ॥ १ ॥ एक बार मुसिकाय चले जब हृदय गहे गुन पी के। 'परमानंद' प्रभु आन मिलावहु प्रौढ वेस ये ती के ॥२॥ ❀४३०❀ ❀ राग ईमन ❀ तेरे सुहाग की महिमा मोपै कही न जाई । मदनमोहन पिय वे बहु नायक ताको मन लियो है रिझाई ॥ १ ॥ कबरी कुसुम गुहत अपुने कर लिखत तिलक भाल रसभरे रसिकाई। 'गोविंद' प्रभु रीझि हृदे

सों लगाइ लई लाडिले कुंवर मन भाई ॥ २ ॥ ❀ ४३१ ❀ राग ईमन ❀ जब जब देखों जाय हरि को बदन तब नैना मेरे मोपे न आवहीं । ऐसे रूप लालची ललचाइ रहे ज्यों बिछुरे जलचर जल पावहीं ॥ १ ॥ सोभा सरसी न जाइ रस मे मिलि मग्न भये अब सखी हम हूं सों न बतरावहीं । 'मुरारीदास' प्रभु पिय एते पै निठुर भये अपनी ओर दुरावहीं ॥ २ ॥ ❀ ४३२ ❀ राग ईमन ❀ जिय की न जानत हो पिय अपुनी गरज के हो गाहक । मृदु मुसिकाय ललचाय आय ढिंग हरत परायो मन नाहक ॥१॥ कपटी कुटिल नेह नहिं समुझत छल सों फिरत घर-घर रस चाहक । दई निर्दई स्याम घन सुंदर 'परमानंद' उर वाहक ॥२॥ ❀ ४३३ ❀ राग ईमन ❀ हसि पीक डारी हो अचरा परी, हों जु चली जाति गली मोहन बैठेछाजें । निरखि बदन गृह कल न परत तन कछुक सकुच मैं व्रजजन की जियधरी ॥ १ ॥ सुंदर कर कमल फेरि कैं सेन दई जहां निबिड कुंजदरी । लैं चलि मोहि जहां री 'गोविंद' प्रभु रहि न परतु पिय प्रेम हृदोरी उमगि भरी ॥२॥ ❀ ४३४ ❀ राग कान्हरा ❀ नैन छबीले तरुन मदमाते । चंचल भृकुटी चलत छबि ऊपजति आनि-आनि मुसिकाते ॥ १ ॥ भक्त कृपा रस सदाइ प्रफुल्लित मनहु कमलदल राते । 'गोविंद' प्रभु को श्रीमुख निरखत पान करत न अघाते ॥ २ ॥ ❀ ४३५ ❀ राग कान्हरा ❀ आजु बनी वृषभानकुंवरि कहे दूती अंचल वारति तृन तोरति कहति भले जु भले जु भामा । बदन जोति कंठ पोति छूटी छूटी लर मोतिन सादा सिंगार हार कुच बिच अति सोभित बोरसरी दामा ॥ १ ॥ एक रसना रूप कैसे के वरनों कीरति विसद अङ्ग-अङ्ग अति प्रवीन पियमन अभिरामा । 'गोविंद' बलि बलि सखी कहे रचिपचि विरचि कीनी स्याम रमन कों तू ही स्यामा ॥ २ ॥ ❀ ४३६ ❀ ❀ राग कान्हरा ❀ अधर मधुर पूरित मुखरित मोहन बंस । चलत दृगंचल चपल करज अति विलुलित पारिजात अवतंस ॥ १ ॥ मानों गजराज

कलभ अति मद गलित आवत लटकत भुजा धरे प्रिय सखा अंस।
'गोविंद' प्रभु को जु श्रीदामा प्रभृति सब जय-जय करत प्रसंस ॥ २ ॥
❀ ४३७ ❀ राग कान्हरा ❀ आजु बने री लाल गोवर्धनधर । रतन खचित
छाजे पर बैठे वृन्दारन्य पुरंदर ॥ १ ॥ ग्रथित कुसुम अलकावलि अति
छबि ध्वनित मधुप अवतंसनि पर । लटकि-लटकि जात श्रीदामा अंक
मधि हँसि मिलवत कर सों कर ॥ २ ॥ मनि कौस्तुभ हृदै पदक जगमगात
कंठ माल गजमोतिन लर । 'गोविंद' प्रभु जु सकल ब्रज मोह्यो अंग-अंग
ललन सुंदर वर ॥ ३ ॥ ❀ ४३८ ❀ पहली आरती ❀ राग अडाना ❀ जहाँ
तहाँ ढरि परति ढरारे प्रीतम तेरे नैन । जे निरखति तिनके मन बस करि
सोंपति है लैं मैन ॥ १ ॥ छिन सनमुख छिन ही होति टेढ़े एक अवस्था
कबहू न ऐन । 'रसिक' प्रीतम तिनके बिन देखैं छिन नाहीं मन चैन ॥२॥
❀ ४३९ ❀ राग अडाना ❀ ब्रज की पौरि ठाड़ो सांवरो ढिठौना जिन हों
तो लई मोहि । जब ते मैं देखे स्यामसुंदर री चलि न सकत मग दीनी
कामनृप नोई ॥ १ ॥ को लै आई काके चलन चलाई कौनै बहियाँ गही
सो धौं कोहि । 'सूरदास' मदनमोहन देखैं मेरी गति आगे कहा भई बूझों
तोहि ॥२॥ ❀४४०❀ राग अडाना ❀ तेरी ऽब भौंह की मरोरनि में त्रिभंगी
ललित भये अंजन दै चितवत भये स्यामा स्याम। तेरी मुसकनि हृदै
दामिनी सी कोंधै जाय दीन ह्वै जगन्नाथ आधो-आधो लीने नाम ॥ १ ॥
ज्यों-ज्यों आली तू नचावत त्यों-त्यों नाचत प्यारो अब मया कीजे बलि
चलिये निकुंज धाम । 'सूरदास' मदनमोहन की तू तन-मन उनके कलप
बीते तेरे छिनु घरी याम ॥ २ ॥ ❀ ४४१ ❀ राग नायकी ❀ तू मोहि कित
लाई री यह गली । देखो जोई डरपत सोई भई आगे मोहन ठाड़े अब
कैसे जैवोरी मेरी माई ॥ १ ॥ रसन दसन धरे करसों कर मीड़त री दूती सों
खीजत अति आनंद हृदै न माई । 'गोविंद' प्रभु की तेरी मिली बातें हों

सब जानति भली कीनी बड़े नग सों भेट कराई ॥ २ ॥ ❀ ४४२ ❀ राग नायकी ❀ आली के दृगन पर वारों मीन खंजन । अति ही सलोने लोने अति ही सुढार ढारे अति कजरारे भारे बिना ही अंजन ॥ १ ॥ स्वेत असित कटाछिन तारे उपमा कों मृग कंजन । पानप पूरे तेरे री नैना गिरिधर पिय-हिय के रंजन ॥ २ ॥ ❀ ४४३ ❀ राग नायकी ❀ सुन री सखी तेरो दोस नाहीं मेरो पिय रसिया । जो देखे सो भूलि रहत है कौन-कौन के मन बसिया ॥ १ ॥ सो को जो न करी बस अपने जा तन नेकु चिते हँसिया । 'परमानंद' प्रभु कुंवर लाड़िलो अबहि कछू भींजत मसिया ॥ २ ॥ ❀ ४४४ ❀ राग नायकी ❀ प्यारी पिय कों बरजि । काहे कों लरत आली मेरे री आंगन में तेरे री लालन मोहे काहे की गरजि ॥१॥ हों ठाड़ी अपने आंगन में आये री लालन अपुनी मरजि । 'सूरदास' प्रभु रस के रंगीले लाल कब की हों ठाड़ी तोसों करत अरजि ॥२॥ ❀४४५❀दूसरी आरती पाछे❀ ❀ तुलसी की सगाई होय तब ❀ राग ❀ धनि-धनि माता तुलसी बड़ी । नारायन के चरनन चढ़ी ॥१॥ जो कोई तुलसी की सेवा करे । कोटिक पाप छिन में परिहरे ॥ २ ॥ जो कोई तुलसी की फेरी देत । सहज जनम सफल करि लेत ॥ ३ ॥ दान पुन्य में तुलसी होय । कोटिक फल पावे नर सोय ॥ ४ ॥ जा घर तुलसी करैं निवास । ता घर सदा विष्नु को वास ॥ ५ ॥ 'कृष्णदास' कहे बारंबार । तुलसी की महिमा अपरंपार ॥ ६ ॥ ❀४४६❀ ❀ फेर दर्शन खुले ❀ राग केदारा ❀ तू ऽब चलि सखी सिंगार हार साजि सेवति किन पियहि प्यारी । माधवी मधुर बोलसरी एरी गुलाब को लै मनुहारी यह सुभाव न जाई बरजे जुहीऽब नेकु नेरी केतुकी लै समुझाई तू मान निवारी । मेरो सिरखंडी जो मिले री 'गोविंद' प्रभु तो-तोपर केवारो नवलकुंवर कुच बिच चंपो बिहारी ॥ २ ॥ ❀ ४४७ ❀राग केदारा❀ हों तोसोंऽब कहा कहों आली री कौन बेर की बहेलावत ही मोहि । मदनमोहन नव निकुंज कबके